अघोर पञ्चाङ्गम्

अघोर शोध संस्थान एवं ग्रन्थालय
अघोर परिषद ट्रस्ट
अवधूत भगवान राम कुष्ठ सेवा आश्रम
पड़ाव, वाराणसी

अघोर पञ्चाङ्गम्

सम्पादक ❑ डॉ. आनन्द कुमार श्रीवास्तव

सह सम्पादक ❑ अशोक कुमार

प्रबन्ध सम्पादक ❑ डॉ. शिव पूजन सिंह

❑ वी.वी. सिंह विश्वेन (आई.ए.एस.)

❑ डॉ. देवेन्द्र कुमार सिंह

अघोर शोध संस्थान एवं ग्रन्थालय

अघोर परिषद ट्रस्ट

अवधूत भगवान राम कुष्ठ सेवा आश्रम

पड़ाव, वाराणसी - 221102

❑ प्रकाशक

अघोर शोध संस्थान एवं ग्रन्थालय
सञ्चालक - अघोर परिषद ट्रस्ट (रजि.)
अवधूत भगवान राम कुष्ठ सेवा आश्रम
पड़ाव, वाराणसी - 221102 (भारत)

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

❑ प्रथम संस्करण : गुरुपूर्णिमा
विक्रम संवत् 2056
28 जुलाई, 1999
1500 प्रतियाँ

❑ सहयोग राशि : रु० 350 = 00

❑ मुद्रक : जय श्री प्रिन्टिंग प्रेस
अर्दली बाजार वाराणसी
फोन : 344451

पञ्चमुखी शिव

(पड़ाव आश्रम के भित्ति चित्र से)

आदिगुरु दत्तात्रेय

अघोराचार्य महाराज श्री कीनाराम जी

गुरुः कः ?

ईश्वरः कः ?

कापालिकः कः ?

सौन्दर्यं किम् ?

एतादृशपृच्छासु प्रत्यहमानन्ददोलिताक्षो यत्।
शास्त्रानुद्धरणेऽपि रामो ब्रूते तदस्त्यघोरतन्त्रमतम्।

(उपर्युक्त प्रकार के प्रश्नों के प्रतिसमाधान में, शास्त्र के सन्दर्भों के उद्धरण के बिना भी, आनन्द से आन्दोलित नेत्रों वाले औघड़ भगवान राम जो कुछ भी कहते हैं उससे वस्तुतः अघोरतन्त्र के सिद्धान्त का स्वरूप निर्माण होता है।)

श्रीमदवधूत भगवद्रामावदानशतकम् से

रमता है सो कौन, घट-घट में विराजत है।
रमता है सो कौन, बता दे कोई।।

परम पूज्य अवधूत भगवान राम जी
(1937 -1992)

संस्थापक अध्यक्ष :

• बाबा भगवान राम ट्रस्ट • श्री सर्वेश्वरी समूह
• अघोर परिषद् ट्रस्ट

आशीर्वचन

ॐ तत्सत्

परम पूज्य अघोरेश्वर द्वारा स्थापित **अघोर शोध संस्थान एवं ग्रन्थालय** जिससे पूर्व में भी लोग लाभान्वित होते रहे हैं एवं वर्तमान में **'अघोर पञ्चाङ्गम्'** शोध संस्थान ग्रन्थमाला का प्रथम पुष्प है। यद्यपि कि शोध कार्य परम पूज्य अघोरेश्वर के समय से ही प्रारम्भ हुआ था लेकिन कतिपय कारणों के चलते आगे नहीं बढ़ पाया।

सन् 1998 की 10 मई को अघोर टेकरी, सारनाथ में आयोजित **परम पूज्य अघोरेश्वर की चरणपादुका स्थापना समारोह** के अवसर पर डॉ० राम दुलार सिंह जी (सेवानिवृत्त पुस्तकालयाध्यक्ष, नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता) के उत्साह को देखते हुए पुनः इस कार्य को गति मिली। अशोक कुमार तथा डॉ० देवेन्द्र कुमार सिंह कार्य में पूर्ण सहयोग देने हेतु सहर्ष प्रस्तुत हुए। जिसका एक अभिनव प्रयोग हम सभी के समक्ष है।

इस कार्य में जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय व सहयोग दिया उसके लिए मैं परमपूज्य अघोरेश्वर एवं सभी अघोर साधकों से उनके मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ।

अधिकारी गण इसका लाभ उठाकर लोक मंगल कार्य में प्रवृत्त होंगे, ऐसी आशा करता हूँ।

अकिञ्चन

गुरुपद संभव राम

अध्यक्ष

बाबा भगवान राम ट्रस्ट

श्री सर्वेश्वरी समूह

अघोर परिषद् ट्रस्ट

गुरुपूर्णिमा

विक्रम संवत् 2056

28 जुलाई, 1999

पूज्यपाद गुरुपद संभव राम जी

अध्यक्ष :

• बाबा भगवान राम ट्रस्ट • श्री सर्वेश्वरी समूह

• अघोर परिषद् ट्रस्ट

।। अघोर यन्त्र ।।

(अघोर पञ्चाङ्गम् अघोर पटलः ३२-५२)

उत्तर

भृङ्गरीटि

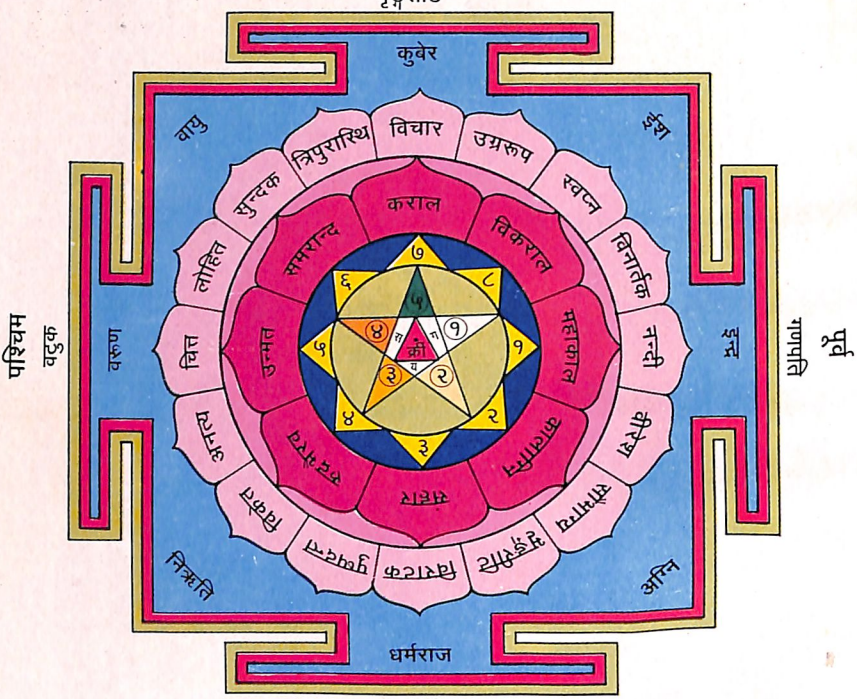

नन्दी

दक्षिण

* अष्टमातृका : १. ब्राह्मी २. नारायणी ३. कौमारी ४. अपराजिता ५. माहेश्वरी ६. चामुण्डा ७. वाराही ८. नारसिंही
* पंचगण/बेताल : ⑨ हयास्य ② अष्ट्रवक्त्र ③ वह्निवक्त्र ④ व्यालास्य ⑤ मकरास्य
* त्रय नदियाँ : ग-गंगा, य-यमुना स-सरस्वती
* केन्द्र : क्रीं-महामाया काली

नोट : अष्टमातृका पुनः अष्ट रूप अघोर शिव शक्ति पर आधारित है : वामदेव, महादेव सद्योजात, बलप्रथमन, शर्व, विकरण एवं बल।
* त्रय नदियां - तृगुण सूचक (सत्व, रजस, तमस)

हे घट-घट में रमने वाले!

गुरू पूर्णिमा के पावन पर्व पर

अघोर शोध संस्थान ग्रन्थमाला का

प्रथम पुष्प अघोर पञ्चाङ्गम्

आपके चरण कमलों में

सादर समर्पित .....

सम्पादकीय

यद्यपि मैं तन्त्र विशेषज्ञ नहीं हूँ फिर भी **अघोरपञ्चाङ्गम्** के सम्पादन एवं हिन्दी अनुवाद कार्य को पूज्यपाद बाबा गुरुपद संभव राम जी का आदेश समझ कर मैने स्वीकार कर लिया। यह बाबा का ही आशीर्वाद था कि मैं तन्त्र विद्या के इस दुरूह ग्रन्थ के सम्पादन एवं अनुवदन में समर्थ हो सका। यह उल्लेखनीय है कि अघोरपञ्चाङ्गम् का यह प्रथम संस्करण संस्कृतवर्ष (युगाब्द 5101) में प्रकाशित हो रहा है।

कुन्हन राजा द्वारा सम्पादित न्यू कैटलागस कैटलागरम के अनुसार इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपियाँ भिन्न नामों से विभिन्न पुस्तकालयों में प्राप्त हैं किन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन के लिए दो पाण्डुलिपियाँ ही उपलब्ध थीं – (क) अडयार पुस्तकालय, चेन्नई एवं (ख) सरस्वती भवन पुस्तकालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी। इन दोनों हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर प्रस्तुत ग्रन्थ की प्रति तैयार की गयी है।

उपर्युक्त पाण्डुलिपियाँ संस्कृत भाषा एवं देवनागरी लिपि में हैं। भाषा सरल है। दोनों ही पाण्डुलिपियों में लिपिकार के प्रमादवश व्याकरणात्मक एवं वर्तनी की अशुद्धियाँ पर्याप्त थीं। उनके स्थान पर शुद्ध पाठ स्वीकार किया गया है। जहाँ कहीं अशुद्धियाँ तन्त्र भाषा के अनुकूल प्रतीत हुईं, उन पाठों को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया गया। प्रस्तुत संस्करण को तैयार करने के लिए 'क' पाण्डुलिपि को आधारभूत मानकर 'ख' पाण्डुलिपि से सहायता लेकर पाठ निर्धारित किया गया। पाद–टिप्पणी में पाठान्तर का उल्लेख कर दिया गया है। दोनों ही पाण्डुलिपियों में लिपिकारों ने यत्र-तत्र शब्द विन्यासों में संशोधन किया है। लिपिकारों ने श्लोकों के आगे संख्या का प्रायः उल्लेख नहीं किया है। 'ख' पाण्डुलिपि में यत्र-तत्र श्लोक संख्या दृष्टिगत होती है। दोनों पाण्डुलिपियों की तुलना करने पर ज्ञात हुआ कि कुछ अंश 'क' में लुप्त है तो कुछ अंश 'ख' में। 'क' पाण्डुलिपि तो अघोरपञ्चाङ्ग शीर्षक से प्राप्त है किन्तु 'ख' पाण्डुलिपि भिन्न-भिन्न स्वतन्त्र ग्रन्थों का संकलन है। 'क' पाण्डुलिपिकार ने अपने नाम का उल्लेख नहीं किया है जबकि 'ख' पाण्डुलिपिकार बैजनाथ द्विवेदी हैं।

अघोरपञ्चाङ्ग के मूल लेखक का नाम एवं ग्रन्थ का रचना काल अज्ञात है। ग्रन्थ की पुंष्पिका में **''इति श्री रुद्रयामलतन्त्रेऽघोरसहस्राख्ये कल्पेऽघोरपूजापद्धतिः सम्पूर्णा''** ('ख' पाण्डुलिपि) उल्लेख होने से स्पष्ट है कि यह रुद्रयामल तन्त्र का उत्तर भाग है।

हिन्दी अनुवाद करते समय शाब्दिक अनुवाद करने की चेष्टा की गयी है। किन्तु कहीं-कहीं अर्थ की स्पष्टता के लिये भावानुवाद भी किया गया है। मैं समझता हूँ कि प्रस्तुत ग्रन्थ अघोर दर्शन के जिज्ञासुओं के लिये विशेष सामग्री उपस्थित करेगा।

महाकवि कालिदास के शब्दों में 'आ परितोषाद् विदुषां न मन्ये साधु प्रयोग-विज्ञानम्' अर्थात् जब तक विद्वज्जनों को परितोष न हो तब तक अपने प्रयोग को सफल नहीं माना जा सकता। यदि सुधीजन एवं आस्थालु मेरे इस बाल प्रयास से यत्किञ्चित् सन्तुष्ट हो सके तो यह देवादिदेव का प्रसाद ही होगा।

अन्त में, मैं श्री अशोक कुमार, शोध सहायक, अघोर शोघ संस्थान एवं ग्रन्थालय के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। उनके प्रचुर श्रम एवं यत्र-तत्र परामर्शों के कारण ही यह प्रयास मूर्त्त रूप ले सका। मैं डॉ. विजय शंकर सहाय, रीडर, नृविज्ञान विभाग, एवं डॉ. ओम प्रकाश श्रीवास्तव, रीडर, प्राचीन इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रति विशेष कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे इस कार्य में प्रेरित कर तन्त्र विषयक अभिरुचि पैदा की।

पाण्डुलिपियों की प्रति डॉ. मण्डन मिश्र, सम्मान्य कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी तथा पुस्तकाध्यक्ष, अडयार पुस्तकालय, चेन्नई के सौजन्य से सरलतया प्राप्त हो सकी। एतदर्थ मैं दोनों महानुभावों के प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

डॉ० आनन्द कुमार श्रीवास्तव
सदस्य, सलाहकार समिति (संस्कृत प्रकोष्ठ)
अघोर शोध संस्थान एवं ग्रन्थालय
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
सी.एम.पी. डिग्री कालेज, इलाहाबाद

विषयानुक्रम

- उपोद्घात i - xiii
- अघोरपटलः 1 - 21
- अघोरपूजापद्धतिः 25 - 62
- अघोरकवचम् 65 - 74
- अघोरसहस्रनाम 77 - 104
- अघोरस्तोत्रम् 107 - 118
- पारिभाषिक शब्दावली 119 - 125
- पद्यानुक्रम 126 ....

उपोद्घात

अघोरेश्वरं वन्दे जगद्गुरुं

अघोर शोध संस्थान ग्रन्थमाला का प्रथम पुष्प **अघोर पञ्चाङ्गम्** शुद्ध पाठ एवं भाषानुवाद समेत सेवार्थ प्रस्तुत करते हुए हमें अमन्द आनन्द का अनुभव हो रहा है। यह भैरव-भैरवी संवाद के रूप में रुद्रयामल तन्त्र (रुद्रयामल तन्त्रे भैरव-भैरवी संवादे अघोरपञ्चाङ्ग.....) का एक महत्त्वपूर्ण अंश है। **अघोर** अर्थात् देवादिदेव भगवान शिव का सौम्य रूप (या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी) भगवान शिव का एक नाम (प्राणायाम परः श्रीमान् हृदि कृत्वा महेश्वरम्। अघोरेति ततो ब्रह्मा ब्रह्म एवानुचिन्तयत्), शिव के पञ्चमुखों में से एक मुख (ईशानतत्पुरुषाघोरवामदेवसद्योजाताख्यानि पञ्च ब्रह्माणि) साधना का परम पद। पञ्चाङ्ग अर्थात् उपासना के पाँच अङ्ग– (१) पटल, (२) पूजापद्धति, (३) कवच, (४) सहस्रनाम और (५) स्तोत्र।

हिन्दू धर्मकोश के अनुसार किसी पट्ट, पत्र अथवा तख्ती पर जो तान्त्रिक मन्त्र लिखे जाते हैं, उनको **पटल** कहते हैं। समालोच्य पञ्चाङ्ग के पटल पाठ में अघोर मन्त्र का उल्लेख है। **पूजापद्धति** अर्थात् उपासना विधि। **कवच** में शस्त्र रक्षक लौहकवच के तुल्य ही शरीर के अङ्गो की रक्षात्मक प्रार्थना का विधान है। 'मलमास तत्त्व' में कहा है–

यथा शस्त्रप्रहाराणां कवचं प्रतिवारणम्।
तथा दैवोपघातानां शान्तिर्भवति वारणम् ।।

(जैसे शस्त्र के प्रहार से चर्म अथवा धातु का बना हुआ कवच (ढाल) रक्षा करता है, उसी प्रकार दैवी आघात से (यान्त्रिक शान्ति) कवच रक्षा करता है।)

सहस्रनाम, जिसमें अघोर शिव के हजार नामों का उल्लेख है। **स्तोत्र** अर्थात् देवता के स्तुति की वचनावलि। मत्स्य पुराण (अध्याय–१२१) में इसके चार प्रकार बतलाए गए हैं–

ऋचो यजूंषि सामानि तथावत् प्रतिदैवतम्।
विधिहोत्रं तथा स्तोत्रं पूर्ववत् सम्प्रवर्तते।।

द्रव्यस्तोत्रं कर्मस्तोत्रं विधिस्तोत्रं तथैव च।
तथैवाभिजनस्तोत्रं स्तोत्रमेतच्चतुष्टयम्।।

संक्षेप में, देवता के रूप में, गुण एवं कर्मादि के चिन्तन, मनन अथच देवता विषयक मन्त्र का उपदेश, यन्त्र के द्वारा उसकी संयोजना, उसका पटल, पूजा पद्धति, कवच, सहस्रनाम एवं स्तोत्र इस पञ्चाङ्ग उपासना का जिसमें विधिपूर्वक वर्णन हो वह **तन्त्र** के नाम से अभिहित है।

■ **तन्त्र**

तन्त्र शब्द 'तनु विस्तारे' धातु से निष्पन्न है। अतएव जिसके माध्यम से अध्यात्म ज्ञान एवं तत्त्वज्ञानपूर्वक आत्मप्राप्ति का विस्तार किया जाय वही 'तन्त्र' शास्त्र है।

तनोति विपुलानर्थान् तत्त्वमन्त्रसमन्वितान्।
त्राणं च कुरुते यस्मात्तन्त्रमित्यभिधीयते ।।

चूँकि तत्त्व (परोक्ष सत्ता) के साक्षात्कारार्थ मनन त्राण धर्म वाले अलौकिक विधि विधानों के सहित विपुल परमार्थ साधनों का विस्तार करता है और जिसमें निरूपित साधना द्वारा साधक का त्राण करता है इसी कारण से 'तन्त्र' कहलाता है।

तन्त्र शास्त्र शिव प्रणीत है। यह तीन भागों में विभक्त है, आगम, यामल एवं मुख्य तन्त्र। वाराही तन्त्र के अनुसार जिसमें सृष्टि, प्रलय, देवताओं की पूजा, सत्कार्यों के साधन, पुरश्चरण, षट्कर्मसाधन और चार प्रकार के ध्यान योग का वर्णन हो उसे **आगम** कहते हैं।

जिसमें सृष्टि तत्त्व, ज्योतिष, नित्य, कृत्य, क्रम, सूत्र, वर्णभेद और युगधर्म का वर्णन हो उसे **यामल** कहते हैं।

जिसमें सृष्टि, लय, मन्त्र, निर्णय, तीर्थ, आश्रम धर्म, कल्प, ज्योतिष संस्थान, व्रत कथा, शौच-अशौच, स्त्री-पुरुष लक्षण, राजधर्म, दानधर्म, युग धर्म व्यवहार तथा आध्यात्मिक नियमों का वर्णन हो, वह **मुख्य तन्त्र** कहलाता है।

तन्त्रशास्त्र की उत्पत्ति कब से हुई इसका निर्णय नहीं हो सकता। प्राचीन स्मृतियों में चौदह विद्याओं का उल्लेख है किन्तु उसमें तन्त्र गृहीत नहीं हुआ है। इनके अतिरिक्त किसी महापुराण में भी तन्त्रशास्त्र का उल्लेख नहीं है। अतएव तन्त्रशास्त्र को प्राचीनकाल में विकसित शास्त्र नहीं माना जा सकता। 'अथर्ववेदीय नृसिंहतापनीयोपनिषद्' में सबसे पहले तन्त्र का लक्षण देखने में आता है। इस उपनिषद् में मन्त्रराज नरसिंह अनुष्टुप् प्रसंग में तान्त्रिक महामन्त्र का स्पष्ट आभास सूचित हुआ है। शंकराचार्य ने भी जब उक्त उपनिषद् के भाष्य की रचना की तब निस्सन्देह वह विक्रमी आठवीं शताब्दी से पहले की है। हिन्दुओं के अनुकरण से बौद्ध तन्त्रों की रचना हुई है। विक्रम संवत् की दसवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी के भीतर बहुत से बौद्ध तन्त्रों का तिब्बतीय भाषा में अनुवाद हुआ था। ऐसी दशा में मूल बौद्ध तन्त्र विक्रम संवत् की आठवीं शताब्दी के पहले और उनके आदर्श हिन्दू तन्त्र बौद्ध तन्त्रों से भी पहले प्रकटित हुए हैं, इसमें सन्देह नहीं।

तान्त्रिक गण पाँच प्रकार के आचारों में विभक्त हैं। ये श्रेष्ठता के क्रम से निम्नोक्त हैं –

वेदाचार, वैष्णवाचार, शैवाचार, दक्षिणाचार, वामाचार, सिद्धान्ताचार एवं कौलाचार।

सभी तन्त्रों ने अपनी साधना पद्धति में एक विषय को समान रूप से अङ्गीकार किया है, वह है:– **पञ्चमकार** - मद्य, माँस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

'आगमसार' के अनुसार पञ्चमकारों का सेवन करने वाला मोक्ष का अधिकारी होता है और उसका पुनर्जन्म नहीं होता–

मद्यं मांसं तथा मत्स्यं मुद्रां मैथुनमेव च।
मकार पञ्चकं कृत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

अपि च

मद्यं मांसश्च मुद्रा मैथुनमेव च।
मकार पंचकप्राहुर्योगिनां मुक्तिदायकम्।।

(१) मद्य :

सहस्रार (सहस्र दल कमल) से निःसृत सोमसुधा ही मद्य है तथा उसका पान करने वाला ही मद्यप है।

सोमधारा क्षरेद् या तु ब्रह्मरन्ध्राद्र वरानने।
पीत्वा नन्दमयस्तां यः स एव मद्यसाधकः।।
यदुक्तं परमं ब्रह्म निर्विकारं निरञ्जनम्।
तस्मिन प्रमदनज्ञानं तन्मद्यं परिकीर्तितम्।।

(२) माँस :

पाप एवं पुण्य रूपी पशुओं का ज्ञान रूपी खड्ग से हनन करके अपने चित्त को जो परम तत्व में लीन कर देता है उसे माँसभक्षी कहा जाता है। इस प्रकार पाप और पुण्य रूपी फलों से मुक्त रहना ही माँस है।

माशब्दाद्रसना ज्ञेया तदंशान् रसना प्रिये।
सदा यो भक्षयेद् देवि स एव मांस साधकः।।
मां सनोति हि यत्कर्म तन्मांसं परिकीर्तितम्।
न च कायप्रतीकन्तु योगिभिर्मासमुच्यते।।

(३) मीन :

अपने मन तथा इन्द्रियों को संयमित रखकर उन्हें आत्मतत्त्व में नियोजित करने वाला साधक ही मत्स्यभक्षी है और प्राणियों में जो सुख-दुःख का समता रूपी सात्त्विक ज्ञान है, वह मत्स्य है।

गङ्गायमुनयोर्मध्ये द्वौ मत्स्यौ चरतः सदा।
तौ मत्स्यौ भक्षयेद् यस्तु स भवेन्मत्स्यसाधकः।।
मत्स्यमानं सर्वभूते सुखदुःखमिदं प्रिये।
इति यत्सात्त्विकं ज्ञानं तन्मत्स्यः परिकीर्तितः।।

(४) मुद्रा :

आशा, तृष्णा, जुगुप्सा आदि अष्ट पाशों को ब्रह्माग्नि में भस्म कर देना ही मुद्रा है। दूसरे शब्दों में असत्संग का त्याग ही मुद्रा है और जो असत्संग का परित्याग करता है उसे मुद्रासाधक कहते हैं।

सत्सङ्गेन भवेन्मुक्तिरसत्सङ्गेषु बन्धनम्।
असत्सङ्गमुद्रनं यत्तन्मुद्रा परिकीर्तिता।।

(५) मैथुन :

सहस्र दल कमल में स्थित शिव के साथ कुण्डलिनी शक्ति का महामिलन ही मैथुन है।

मैथुनं परमं तत्त्वं सृष्टिस्थित्यन्तकारणम्।
मैथुनाज्जायते सिद्धं ब्रह्मज्ञानं सुदुर्लभम्।।
कुलकुण्डलिनी शक्तिर्देहिनां देहधारिणी।
तया शिवस्य संयोगो मैथुनं परिकीर्तितम्।।

हिन्दू तन्त्र ग्रन्थ दो स्वरूप प्रकट करते हैं– एक है – दार्शनिक एवं आध्यात्मिक। दूसरा है – प्रचलित, व्यावहारिक तथा अधिक या कम ऐन्द्रजालिक, जो मन्त्रों, मुद्राओं, मण्डलों, न्यासों, चक्रों एवं यन्त्रों पर निर्भर रहता है, जो मात्र भौतिक साधन हैं जिनके द्वारा ध्यान लगाकर परम शक्ति से तादात्म्य स्थापित किया जाता है और जो भक्त को अलौकिक शक्तियाँ प्रदान करते हैं। इसका निदर्शन आदर्शभूत तन्त्र ग्रन्थों यथा : महानिर्वाणतन्त्र, शारदातिलक आदि में किया जा सकता है। महानिर्वाण तन्त्र, जिसने पञ्चमकारों को उपासना के साधन के रूप में ग्रहण किया है, के अनुसार "यदि महान तन्त्र को लोग समझ लें तो वेदों, पुराणों एवं शास्त्रों की उपयोगिता कुछ भी नहीं रह जाती।" महानिर्वाण तन्त्र के ४/३४–३७ में महत्त्वपूर्ण धारणा उपस्थित है कि परमेश्वर एक है और उसे सत्, चित् एवं आनन्द कहना चाहिए। वह अद्वितीय है, गुणातीत है और उसका परिज्ञान वेदान्त वचनों से ही प्राप्त हो सकता है। इसमें पुनः आया है कि सर्वोत्तम मन्त्र है– **ॐ सच्चिदेकं ब्रह्म** (३/१४)। जो परम ब्रह्म की उपासना करता है उसे अन्य साधना की आवश्यकता नहीं, इस मन्त्र पर आरूढ़ होकर व्यक्ति ब्रह्म हो जाता है।

■ **अघोर**

महाराज श्री कीनाराम जी की परम्परा के एक प्रमुख सन्त गुलाब चन्द 'आनन्द' का कथन है, "अघोर या अवधूत मत कोई नवीन मत नहीं हैं।

शिवजी महाराज के पाँच मुखों में से एक मुख अघोर का भी है। यह 'लिङ्ग पुराण' से सिद्ध है। उपनिषद्, रुद्री और शिव-गायत्री से भी भेष का महत्व प्रकट है। "अघोरान्नापरो मन्त्रः" यह हमारा कहा हुआ नहीं है। यह आदि काल से चला आ रहा है। महाराज कीनाराम ही ने इसको नहीं चलाया है। यह सचमुच शिव जी का चलाया हुआ है। जगद्गुरु दत्तात्रेय भगवान ने भी इसका प्रचार किया और बाद में श्री महाराज कालूराम जी और कीनाराम जी के शरीर से यह चला।"

उपलब्ध पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक प्रमाण बाबा 'आनन्द' के उपर्युक्त कथन की पुष्टि करते हैं। भारत में अघोर मत के अस्तित्व के चिन्ह सर्वप्रथम सिन्धु घाटी की कला में देखने को मिलते हैं। मार्शल द्वारा प्रतिपादित पशुपति की मुहर पर अंकित योगी का स्वरूप अघोर साधना की सिद्धि का पहला मूर्त रूप है। सैंधव सभ्यता में लिङ्ग-योनि पूजा के बहुसंख्यक प्रमाणों से यही सिद्ध होता कि सिन्धु घाटी के नर-नारी जिस लोक धर्म के मतावलम्बी थे, वह अघोर मत ही हो सकता है। अघोर मत की वैदिक, औपनिषदिक, पौराणिक पृष्ठभूमि अत्यन्त समृद्ध है। यथा–

अघोरचक्षुरपतिध्येधि - **ऋग्वेद x. 85.44**

अघोरेण चक्षुषा मित्रियेण। गृहानौमि - **अथर्ववेद vii 60.1**

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी - **वाजसनेयी संहिता 16.2**

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यः .....

..... नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः - **तैत्तिरीय आरण्यक x. 45.1**

या ते रुद्र ..... तनूरघोरा.....

... तथानस्तनुवा ... अभिचाक .... शीहि. - **श्वेताश्वतर उपनिषद् 3.5**

अघोराः पितरः सन्तु सन्त्वित्युक्तः पुनर्द्विजः - **मत्स्य पुराण 17.53**

- **पद्म पुराण V. 9.182 / - अग्नि पुराण 117.25**

अनित्यं परतोऽघोरमनालम्बमनामयम् - **ब्रह्माण्ड पुराण i. 19-166**

विहितानि विधानानि कल्पकृद्भि पुरातनैः । अघोराणि - **लक्ष्मी तन्त्र 50.20**

अघोराशिवत्वयोगेनैव सर्वहृदयङ्गमा - **ब्रह्मसूत्र भाष्य (श्रीकण्ठ)**

भगवान शिव के पर्याय के अर्थ में

अघोराय त्वा परिददामि

प्राणायामपरः श्रीमान् हृदि कृत्वा महेश्वरम्। - **कौशिक सूत्र 56.13**

अघोरेति ततो ब्रह्मा ब्रह्म एवानुचिन्तयत्।। - **वायुपुराण i, 23.26**

ओंकारं शिवतत्त्वमघोरे इत्यत्र शक्तितत्त्वम् - **प्रत्रिमशिखा 123.3**

कथं वै दृष्टवान् ब्रह्मा ..... अघोरम् - **लिङ्ग पुराण i, 11.2**

उत्पद्यते शक्तिकला विद्याघोरसमुद्भवा - **शिव पुराण vi, 16.59**

अघोर श्रीकण्ठ शक्ति धरक्रोधत्र्यम्बक .....

..... इति पराक्रमपादुकाः - **परानन्द सूत्र**

इष्टार्थदायी भवदनभिमतच्छित्तये .....

..... स्यादघोरः - **शिल्प रत्न श्रीकुमार ii, 22.189**

घोरं भवमपहातुं केचिदघोरं प्रपद्यन्ते - **वैराग्य शतक, अप्पय दीक्षित**

पञ्चमुखी शिवः

स्यादघोरं तु दक्षिणे - **ईशानशिवगुरुदेव पद्धति**

अघोर संज्ञमावर्तित भ्रुकुटिभीषणमाननं ते।

तद्दक्षिणं पशुपतेः परमं पदं में - **नीलकण्ठ विजय**

भगवान शिव के एक रूप के अर्थ में

ईशानतत्पुरुषाघोरवामदेवसद्योजाताख्यानि

..... पञ्च ब्रह्माणि - **ललितात्रिशत भाष्य 275.12 (10)**

शिवेशानतत्पुरुषाघोरवामादिभिः

..... पञ्चभिर्हृन्मुखे :

शिवभुजङ्ग स्तोत्र 1.4, शिव पुराण (iii) - 1-39 (295B:15)

ईशानशिवगुरुदेव पद्धति (i) 28.18

शारदातिलक तन्त्र 18.5

कुलार्णव तन्त्र 4.56

मन्त्र के रूप में

प्रत्येकमष्टोत्तरशतमघोरेणैव होमयेत् - नारद संहिता 41.7

मृदमादाय ..... अघोरेण मन्त्रयेत् - मृगेन्द्र तन्त्र ii 2.7

..... अघोरं वा जपेन्मन्त्रम् - स्कन्दपुराण vii(i) 301.7

मूलमन्त्रेण संपूज्य .. अघोरेण च

..... प्रणिपत्य प्रसादयेत - ब्रह्माण्ड पुराण 57.7

अघोरेण ललाटे तु तेनैव हृदयेऽपि च - देवी भागवत पुराण xi 7.21

अघोरेणात्ममन्त्रेण विल्वकाष्ठं प्रदादयेत् - शिव पुराण (i) 18.62

अत्र सशिवाग्नेः प्रमादान्निर्वार्णासति

.... त्रिरात्र मुपोषितो अघोरं जपेत् - ईशानशिवगुरुदेव पद्धति ii, 15.3

लिङ्ग पुराण (१.१४) में अघोरोत्पत्ति का विस्तृत वर्णन है। यथा,

सूत उवाच –

ततस्तस्मिन्गते कल्पे पीतवर्णे स्वयंभुवः। पुनरन्यः प्रवृत्तस्तु कल्पो नाम्नाऽसितस्तु सः।। १।।
एकार्णवे तदा वृत्ते दिव्ये वर्षसहस्रके। स्रष्टुकामः प्रजा ब्रह्मा चिंतयामास दुःखितः ।। २।।
तस्य चिंतयमानस्य पुत्रकामस्य वै प्रभो । कृष्णः समभवद्वर्णो ध्यायतः परमेष्ठिनः ।। ३।।
अथापश्यन्महातेजाः प्रादुर्भूतं कुमारकम्। कृष्णवर्णं महावीर्यं दीप्यमानं स्वतेजसा।। ४।।
कृष्णांबरधरोष्णीषं कृष्णयज्ञोपवीतिनम्। कृष्णेन मौलिना युक्तं कृष्णस्रगनुलेपनम्।। ५।।
स तं दृष्ट्वामहात्मानमघोरं घोरविक्रमम्। ववं दे देवदेवेशमद्भुतं कृष्णपिंगलम् ।। ६।।
प्राणायामपरः श्रीमान् हृदि कृत्वा महेश्वरम्। मनसा ध्यानयुक्तेन प्रपन्नस्तुतमीश्वरम् ।। ७।।
अघोरं तु ततो ब्रह्मा ब्रह्मरूपं व्यचिंतयत्। तथा वै ध्यायमानस्य ब्रह्मणः परमेष्ठिनः ।। ८।।
प्रददौ दर्शनं देवो ह्यघोरो घोरविक्रमः। अथास्य पार्श्वतः कृष्णाः कृष्णस्रगनुलेपनाः।। ९।।
चत्वारस्तु महात्मानः संबभूवुः कुमारकाः । कृष्णः कृष्णशिखश्चैव कृष्णास्यः कृष्णवस्त्रधृक्।।१०।।
ततो वर्ष सहस्रं तु योगतः परमेश्वरम्। उपासित्वा महायोगं शिष्येभ्यः प्रददुः पुनः ।। ११।।
योगेन योग सम्पन्नाः प्रविश्य मनसा शिवम्। अमलं निर्गुणं स्थान प्रविष्टा विश्वमीश्वरम् ।।१२।।
एवमतेन योगेन येपि चान्ये मनीषिणः। चिंतयति महादेव गंतारो रुद्रमव्ययम् ।। १३।।
इति श्रीलिङ्गमहापुराणे पूर्वभागे अघोरोत्पत्तिवर्णनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः।। १४।।

अघोर ; शब्द विन्यास :

अघोर, औघड़ अवधूत वस्तुतः ये तीनों शब्द एकार्थक हैं। महर्षि पाणिनि के अनुसार 'घुर्' धातु भीम और शब्दन (उच्चारण) अर्थ में है। उससे अच् प्रत्यय करके 'घुरति भीषयति शब्दनम् करोति सः घोरः, न घोरः इति अघोरः।' भ्वादिगण में पठित घुरी हिंसावयोहान्योः इस धातु से अच् प्रत्यय करके 'घुर्यते असौ घोरः, न घोरः इति अघोरः'। इस प्रकार दोनों धातु से व्युत्पत्ति करने पर जो कठिन, कष्टकारक, भयदायक और भीषण अर्थ का प्रयोजक न हो, वह अघोरपद प्रतिपाद्य है।

'औघड़' शब्द अघोर का अपभ्रंश है। क्योंकि अघोर शब्द के मध्य में 'घो' का ओकार उच्चारण व्यतिक्रम अथवा मुख सुखार्थ होकर 'अ' पर चला आया। 'घ' खाली हो गया अघोर ऐसा हुआ। अधिकांश जन 'र' को 'ढ़' जैसा उच्चारण करते हैं। अतः 'अघोढ़' हुआ। तदनन्तर ओकार–औकार के रूप में कालक्रम से परिवर्तित हुआ। इस प्रकार अघोर ही जन सामान्य के बीच औघड़ हो गया।

परम पूज्य बाबा अघोरेश्वर भगवान राम जी अवधूत को यों परिभाषित करते हैं : –

अ – अविनाशी

व – सर्वोत्तम

धू – विधि निषेध से परे

त – सत्–चित्–आनन्द

'अवधूत'; धूञ् कम्पने, प्रीणने–च धातु से भूतार्थ में क्त प्रत्यय करने पर धूत शब्द बनता है। जिसका अर्थ कम्पित, प्रीत, स्पन्दित, आन्दोलित, स्फुरित विस्तारितादि रूप में सिद्धान्त कौमुदी के धातु गण का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है–

धूनोति चम्पकवनानि धुनोत्यशोकं
चूतं धुनाति धुवति स्फुटातिमुक्तम।
वायुर्बिधूनयति चम्पकपुष्परेणून्

श्लोकोक्त 'धुञ्' धातु के तत्तद् विकरण प्रत्यय करने पर असंख्य अर्थों की सम्भावना हो सकती है।

अतएव धूत अर्थात् कम्पन, स्पन्दन, गति, स्थैर्य आदि पूर्वोक्त समस्त सम्भावित अर्थो को जानकर जो बिना जाने हुए के सदृश लोकनिषिद्ध वस्तुओं से ही रमण करता हुआ, निषेध को विधि का स्थान देता हुआ, कर्तुम-कर्तुम् अन्यथाकर्तुम् समर्थ होता है वही अवधूत कहलाता है। अवधूत (अव+धूत) से औघड़ व्युत्पत्ति सम्भव है। धकार तवर्ग का चतुर्थ वर्ण है। वर्णोच्चारण विकृति फलस्वरूप ध का घ बन गया और त भी ट होकर र हो गया। यथा, औधूत–औधुत–औघर–औघड़।

■ **अघोर परम्परा**

सन्तो को परम्परा या पन्थ के खाँचे में फिट करने का दौर मध्य युग से शुरू हुआ। सन्तमत आरम्भ में संकीर्ण परिधियों से मुक्त था। किन्तु मत विशेष के प्रवर्तन के बाद सिद्धान्त प्रचार की बलवती इच्छा परम्परा के आचार्य और उसके अनुगामियों में हुई। योग्य उत्तराधिकारी की नियुक्ति द्वारा सिद्धान्त विशेष की सुरक्षा और प्रसार की सम्भावना बढ़ गई । इस लिहाज से सर्वप्रथम कबीर साहब के अनुयायियों में पन्थ निर्माण की भावना आरम्भ हुई जिसने युग विशेष को प्रभावित किया। भगवान शंकर से चला आ रहा अघोर का प्रवाह, जिसके कभी दत्तात्रेय जी महान संवाहक बने, मध्ययुग में परम्परा का रूप धारण किया। इसके प्रवर्तक के रूप में महाराज श्री बाबा कीनाराम जी विख्यात हुए।

बाबा कीनाराम जी अपनी रचना **विवेकसार** में इसका उल्लेख करते हुए कहते हैं –

दत्तात्रय मोहि कहं मिले शिव सिद्धेश्वर जान।

बाबा कीनाराम जी ने **विवेकसार** में अपने गुरु के उपदेश को अवधूत मत कहा है –

यह संसार असार अति पाँच भूत को वारि।
तातें यह अवधूत मत विरच्यों स्वमति विचारि।।

महाराज श्री कीनाराम जी एक दार्शनिक औघड़ थे। **विवेकसार** में अपने स्वरूप को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं–

"मैं ही जीव हूँ, मैं ही ब्रह्म हूँ, मैं ही अकारण निर्मित जगत हूँ। मैं ही निरञ्जन हूँ और मैं ही विकराल काल हूँ। मैं ही जन्मता हूँ और मरता हूँ। पर्वत और आकाश मैं हूँ। ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी मैं हूँ। सुमन और उसका वास, तिल और उसका तेल मैं हूँ। बंधन, मुक्ति, अमृत, हलाहल, ज्ञान-अज्ञान, ध्यान ज्योति मैं हूँ।"

इस प्रकार बाबा कीनाराम हर अच्छे-बुरे में मौजूद हैं। आस्तिकवादी दर्शन को बाबा की यह महत्त्वपूर्ण देन है।

महाराज श्री कीनाराम जी की प्रमुख रचनाएँ है – **विवेकसार, उन्मुनि राम** व **रामगीता, राम रसाल**।

■ **अघोर मत का परवर्ती स्वरूप :**

अघोर परम्परा के बीसवीं सदी के महान अघोर सन्त **पूज्यपाद बाबा अघोरेश्वर भगवान राम जी** ने 'श्री सर्वेश्वरी समूह' नामक संस्था का गठन करके अघोर-मत को एक नया आयाम दिया। अघोर-मत के दार्शनिक और व्यावहारिक दोनों पक्षों में नयी मान्यताओं की स्थापना की। उन्होंने अघोर साधना को शमशान से लाकर आश्रम में प्रतिष्ठित किया। मानवीय घृणा के प्रतिरूपों मल, माँस और मूत्रादि के स्थान पर कुष्ठ आदि रोगों के प्रतिमान उन्होंने स्थापित किये। घृणास्पद वस्तुओं को अपनाने का अर्थ मलमूत्र का भक्षण नहीं अपितु कुष्ठ रोगियों की सेवा भी हो सकती है। पूज्य-पाद द्वारा स्थापित कुष्ठ सेवा आश्रम जिसका आज समूचे संसार में कोई सानी नहीं है। मदिरा आदि मादक द्रव्यों का परिहार और सदाचारपूर्ण जीवन की स्थापना के प्रयत्नों के साथ अघोर-मत में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। आपने अघोर-मत को एक 'वैज्ञानिक टेम्पर' दिया। अघोर तन्त्र के नाम पर चल रहे तमाम कुकृत्यों की पुरजोर खिलाफत की आपने। यथा – औघड़ साधु तन्त्र-मन्त्र, जादू-टोना आदि धूर्तताओं से जनता की आँख में धूल नहीं झोंकता है। अपने को गर्त में नहीं डालता है, जादू-टोना में विश्वास नहीं करता है और न दूसरों को उसकी ओर प्रोत्साहित करने वाला होता है।

इसके विपरीत करने वाला हो तो उसकी समाधि, योग-क्षेम बहती हुई नदी के वेग की तरह बह जाता है, उसका चित्त दूषित हो जाता है। वह नट की तरह दर-दर घूमकर, जोग-टोना दिखाकर उदर पालन करता है। दर-दर घूमने पर भी उसे रोटी नहीं मिलती। वह सत्संग से औघड़ के विचार से वंचित काया, औघड़ नहीं हो सकता है। श्वान की तरह दर-दर घूमकर, किसी के द्वार का रखवाला बनकर, उदर के निमित्त, अपने जीवन को दूषित करता है। जो औघड़-साधु सत्संग किये होता है, सज्जन का संग किये होता है, साधु की सभा में बैठा हुआ होता है, अघोरेश्वर का अनुगमन किये होता है, अघोरेश्वर के मापदण्ड से तौला होता है, जादू-टोना, तन्त्र-मन्त्र में विश्वास नहीं करता, वहीं औघड़ होता है।

'अघोर' को परिभाषित करते हुए **पूज्यपाद अघोरेश्वर भगवान राम जी** कहते हैं –

''जो घोर न हों, कठिन न हो, कड़ुवा न हो उसे 'अघोर' कहते हैं। अघोर सुगम पथ है। इसका अनुगमन स्वभाव की मन्थर गति से होता है। पापों का पक्ष, तापों की गति जहाँ न हो वहीं अघोर है। हम घर व बाहर सुगम उपायों को ढूँढ़ते हैं। वह क्या है ? वह अघोर है। यह पावन–पथ है, इसमें जीवन का रस निहित है, ये मर्मीली बातें हैं समझने पर ही मिलती हैं। यह आनन्द–संग्रह का सब रस है। इसे निःसंकोच पाया जा सकता है। भटकते हुए मानवों के कृतसंकल्प को यह पुराता है। यह शिव है, यह गूँगों का रस है। इसे पाने के लिए दृष्टि–भेद छोड़ना होगा। यह न पृथक है न अपना है। जगतमिथ्या या सपना नहीं होता। ब्रह्म सत्य है तो ब्रह्म की सृष्टि भी सत्य है। जिन बीजों से पौधे उगते हैं यदि वह सत्य है तो पौधे उससे अलग नहीं। अतः वह सत्य है और उसका जगत सत्य है। यह विचार भी सत्य है। अपने को तृप्त करने के लिए जब सुमन-सा प्रसन्न मन का गौरवमय पर्णों से हार गूँथोगे तो यह हार हृदय का स्वागत करेगा। अपरिपक्व ज्ञान का त्याग करके जो पूरन है उसके पथ पर साधकों को चलना है। अनन्त आनन्द प्राप्त करने के लिए मन-विचार के क्रन्दन को अनसुनी करना होगा। तब शान्त-हृदय होकर साधक त्रितापों को काटकर

सुख-समृद्धि के घेरे में विश्राम पाता है। जन-समूह के गौरव को उन्नतिशील बनाना साधना का लक्ष्य है। साधु-पथ इससे भिन्न कुछ नहीं है, परन्तु समझने पर ही वह दिखता है और सभी गुण दिखलाने लगते हैं, यह अविचल सत्य है।''

परम पूज्य अघोरेश्वर अघोर परम्परा के विकास क्रम को इस प्रकार व्यक्त करते हैं – ''जहाँ से अघोर भैरवाचार्य रुक गये थे वहीं से अघोरेश्वर कीनाराम ले के चले। ..... वह अवधूतों का ज्ञान अभिव्यक्त किया हुआ, हजारों वर्षों तक उदाहरण के रूप में रहेगा। ..... औघड़-महात्माओं की बहुत सी कहानियाँ केवल जनश्रुतियों में है। इन लोगों के फक्कड़ स्वभाव के कारण इनकी कहानियों का समय तथा कालबद्ध संग्रह नहीं हो सका और ये लिपिबद्ध नहीं हो सकीं.....''

अन्त में, प्रस्तुत **अघोर पञ्चाङ्गम्** अघोर तन्त्र वाङ्मय का भाषानुवाद सहित प्रकाशित होने वाला प्रथम ग्रन्थ है जो **पूज्यपाद बाबा गुरुपद संभव राम जी** के सम्यक् निर्देशन एवं आशीर्वाद से ही सम्भव हो पा रहा है। काफी कम समय में ही यह ग्रन्थ आप तक पहुँच रहा है, लिहाजा त्रुटि अपेक्षित है। सुझाव आमन्त्रित है।

अशोक कुमार

शोध सहायक

अघोर शोध संस्थान एवं ग्रन्थालय

अघोर परिषद ट्रस्ट, वाराणसी

पानांचत्रिलोकानांमहापुष्टि:प्रजायते
नाविधिनासम्यक्शक्तिपूजांचरेन्नर:
स्त:समासीन:शक्तिपूजापरायण:

स्वविवाहदिनेदेविकामान्तुसायकोनमः यथो
त्सोत्सवेमहानंदेजपेन्मन्त्रायुतंशिवे शक्तिच
होमेरजस्वलारक्तासिक्तकार्परखंडके: घृतपाय

अघोरपटल:

अघोरपटलः

ॐ स्वस्ति[1]। श्री गणेशाय नमः। श्री शिवाय[2] नमः।

ॐ हिमाद्रिशिखरासीनमीशानं पार्वतीपतिम्।
त्रिशूलखट्वाङ्गधरं कपालास्थिविभीषणम् ।। १।।

गणगन्धर्वसिद्धौघैः सेवितं त्रिपुरान्तकम् ।
स्कन्दैकदन्तसहितं विकसद्वदनाम्बुजम् ।। २।।

गुणातीतं चिदाकारं सदसत्पदराजितम् ।
पार्वती विनता भूत्वा पप्रच्छ परमेश्वरम् ।। ३।।

श्री पार्वत्युवाच

भगवन्सर्वलोकेश सर्वभूतदयानिधे।
सर्वतत्त्वैकनिलयप्रलयोत्पत्तिकारक[3] ।। ४।।

---

१. ख - इदं नास्ति।
२. ख - इदं नास्ति
३. ख - कारकः

महादेव महारुद्र महागुण विभूषण[४]।
महद्रूप महेशान महाहीनोपवीतक[५] ।। ५।।

महेश मदनध्वंसिन्महासेनवरप्रद।
त्वमेव वरदो नित्यं देवानामपि सर्वदा ।। ६।।

त्वमेव त्रिजगन्नाथस्त्वं सूर्यस्त्वं शशी शिवः।
त्वं वह्निस्त्वं सदावायुस्त्वं जलं त्वं वसुन्धरा ।।७।।

त्वमाकाशो महाकारस्त्वमेव परमा गतिः।
त्वदृतेऽन्यं[६] न पश्यामि त्रातरं तरणप्लवम् ।।८।।

भगवन्मे प्रसीद त्वं वरं देव प्रयच्छ मे।
अघोरस्य पुरा दिव्यमुचितं पटलं वद ।। ९।।

येन सम्यक् श्रुतेनैव साधकस्तत्पदं व्रजेत्।
सारात्सारतरं ब्रूहि चेदस्ति मयि ते दया।। १०।।

भैरव उवाच :

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि पटलं देवदुर्लभम्।
अघोरस्य महामन्त्रं यन्त्रं सर्वस्व निश्चितम् ।। ११।।

अघोरो यः परो देवस्त्रिजगत्प्रभुरीश्वरः।
भैरवो भैरवाकारो निर्गुणो विश्वकारणम् ।। १२।।

तेनेदं सृज्यते विश्वं तेनेदं परिपाल्यते[७]।
तथा संह्रियते चान्ते त्रैलोक्योद्धरणक्षमः[८] ।। १३।।

---

४. ख - विभूषणः
५. ख - महाहीनोपवीतकः
६. क - त्वदृतेन्यै, ख - त्वद्दत्यन्यं
७. क एवं ख - यदिपाल्यते
८. क - त्रैलोक्ये

तस्याहं पटलं देवि पद्धतिं कवचं शुभम्।
मन्त्रं नामसहस्रं च स्तोत्रं मन्त्रमयं शिवे।। १४।।

तव प्रीत्या प्रवक्ष्यामि मन्त्रोद्धारं वरानने।
यन्त्रोद्धारं लयाङ्गं च प्रयोगांश्च दशैव तु।
श्रुत्वा गोप्यं प्रयत्नेन पञ्चाङ्गं देवि दुर्लभम्।। १५।।

अथ मन्त्रोद्धारः

ॐ मात्रादिः षडभिज्ञ वह्निकुलिशास्तस्माद्वलं भारजिद्
वह्नि वज्र करोत्तमाग्नियुगलं रात्राग्नि वज्रांकितम्।
संकोचौर्वतमै शुभौ वकयुतौ शक्त्योर्ववज्राश्मका
रत्यंद्धीन्द्रिय सिन्धुमत्स्यकुलिशा मन्त्रोऽयमाघोरिकः।।

।। इति मन्त्रोद्धारः।।

प्रकाशं -

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः।।

नास्य विघ्नो न वा क्लेशो न विपर्ययभीस्तथा।
न मोहो न च दारिद्र्यं न च दीक्षादिसंग्रहः।
सिद्धसाध्यविचारोऽपि वैरिपक्षभयं न हि।।१६।।

साक्षादमृतरूपोऽयमणिमाद्यष्टसिद्धयः।
दीक्षिताय कुलीनाय तन्त्रमन्त्रार्थसंविदे।।१७।।

अष्टकीलविदे मन्त्रसञ्जीवन विदे परम्।
अघोरस्य मनुर्देवि कीलैरष्टभिराश्रितः।।१८।।

मन्त्रकीलनमाचारं मन्त्रसंजीवनं परम्।
सम्पुटं च प्रवक्ष्यामि गोपनीयं प्रयत्नतः।।१६।।

वज्रस्य पञ्चभिर्वीर्यैर्विश्वराडक्षरैस्तथा।
कीलितोऽयं महामन्त्रः सर्वैश्वर्यप्रदायकः।।२०।।

सूतोऽयमौर्ववीजैश्च विश्ववीर्यत्रयेण च।
एतेषां साधनं वक्ष्ये शृणु देवि यथाक्रमं।।२१।।

आदावक्षादि वज्रान्तं दद्यान्मन्त्रोपरि प्रिये।
अयमुत्कीलनो मन्त्रो मन्त्रं[६] सञ्जीवनं शृणु।।२२।।

विश्वबीजादि वज्रान्तमादौ दद्यात्सुरेश्वरि।
तत्पदे प्रोच्चरेदादि बीजवज्रान्तमीश्वरि।।२३।।

अस्यायं मन्त्रराजस्य प्रोक्तः सञ्जीवनो मनुः।
सिद्धमन्त्रस्य जप्त्वेदं सम्पुटस्य मनुं शृणु।।२४।।

बिलादि वज्रवीजान्तमन्ते दद्यात्सुरेश्वरि।
सम्पुटस्यास्य मन्त्रोऽयं गोप्तव्यः पशुसन्निधौ।।२५।।

प्रकाशं

रुद्ररूपेभ्यो अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो
घोरघोरतरेभ्यः सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते।
।। इत्युत्कीलन मन्त्रः।।

सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः
अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः।
।। इति सिद्ध मन्त्रः।।

---

६. क - मंजं

अघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वतः
सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्योऽथ घोरेभ्यः।
।। इति सम्पुट मन्त्रः।।

एवं जपेन्महादेवि दीक्षितः साधकोत्तमः।
वर्णलक्षावधिं देवि पुरश्चरणमाचरेत्।।२६।।

जीवहीनो यथा देही सर्वकर्मसु न क्षमः।
पुरश्चरणहीनो हि न मन्त्रो फलदायकः।।२७।।

गृहेऽर्द्धरात्रे मध्याह्ने शून्यागारे चतुष्पथे।
वटे श्मशानेऽरण्ये वा पुरश्चर्या चरेत्सुधीः।।२८।।

भूकम्पे पूजयेद्देवं जपेन्मन्त्रं तथायुतम्।
वर्णलक्षजपस्यापि फलं प्राप्नोति साधकः।।२९।।

सुदिने सुग्रहे स्वच्छे पूजयेत्स्वच्छमादरात्।
जपेन्मन्त्रायुतं सम्यक् पूजा कोटिफलं लभेत्।।३०।।

यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि सर्वतन्त्रेषु गोपितम्।
सर्वसिद्धिप्रदं यन्त्रं सर्वाशापरिपूरकम्।।३१।।

अथ यन्त्रोद्धारः

त्रिकोणं सबिन्दुं शरारं सनागं तथा नागपत्रं सुवृत्त कलास्थम्[१०]।
चतुर्भूगृहोद्भासितं वह्निरेखं सदोद्योततेऽघोरदेवस्य यन्त्रम् ।।

इति यन्त्रोद्धारः

अघोरस्यास्य मन्त्रस्य महाकालोऽथ भैरवः।
ऋषि उष्णिक् तथा छन्दः श्रीमत्कालाग्निरुद्रकः ।। ३२।।

---

१०. ख - कलास्यम

अघोर देवता देविवीर्य कर्णः समीरितः।
श्रुति बीजं तथा शक्तिः श्रवणं कीलनं तथा।।
अणिमाद्यष्टसिद्ध्यर्थ विनियोगः प्रकीर्त्तितः।।३३।।

अस्य श्रीमदघोरमन्त्रस्य श्री कालाग्निरुद्रमहाकालवामदेव ऋषयः। त्रिष्टुप्-पंक्ति-अनुष्टुप् छन्दासि श्रीमदघोरभैरवो देवता अणिमाद्यष्टसिद्ध्यर्थमघोरजपे विनियोगः।

लयाङ्गं शृणु देवेशि सकलागमनिश्चितम्।
येन श्रवणमात्रेण पुरश्चर्याफलं लभेत्।।३४।।

इन्द्रो वह्नि धर्मराजो निर्ऋतिर्वरुणोऽनिलः।
कुवेर ईश इत्यासां पतयो द्वारपालकाः।।३५।।

दिक्पाला दिक्षु सम्पूज्य विदिगीशा विदिक्षु च।
दक्षिणावर्त्तकेनार्चां चरेत्साधकसत्तमः।।३६।।

उर्ध्वे गणपतिः पूज्यो वटुकोऽधः[११] प्रयत्नतः।
पूर्वपश्चिमयोर्देवि साधकैर्मन्त्रसाधकैः।।३७।।

नन्दी च भृङ्गिरीटी च दक्षिणोत्तरयोस्तथा।
देवेशि विधिवद् वक्ष्ये शृणुष्व अष्टदलार्चनम्।।३८।।

नन्दिवीरेश-सौभाग्य-भृङ्गिरीटि विराटकाः।
पुष्पदन्तविकेतान्त्य चित्त लोहित सुन्दकाः।।३९।।

त्रिपुरारिथि विचारोग्ररूप स्वप्न विनर्त्तकाः।
गणाः षोडश[१२] सम्पूज्याः षोडशारेषु सुन्दरि।।४०।।

---

११. क - वज्रक्रोधः

१२. क - शोडश

अद्याष्टदलपूजां तु प्रवक्ष्यामि वरानने।
यां विधायार्द्धरात्रे तु सद्यः सिद्धिमवाप्नुयात्।।४१।।

महाकालश्च कालाग्निः संहारो रुद्रभैरवः।
उन्मत्तः समरानन्दः करालो विकरालकः।।४२।।

पूज्या अष्टारकेष्वेव साधकैरष्टभैरवाः।
अष्ट कोणार्चनं वक्ष्ये शृणु पर्वतनन्दिनी।।४३।।

ब्रह्माद्या मातरः पूज्या अष्टकोणेषु साधकैः।
ब्राह्मी नारायणी चैव कौमारी चापराजिता।।४४।।

माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहिका।
वामावर्त्तेन सम्पूज्य एता अन्ये च सव्यतः।।४५।।

पञ्चकोणं महादेवि प्रसन्नमुखपङ्कजम्।
हयास्यमुष्ट्रवक्त्रं च वह्निवक्त्रं वरानने।।४६।।

व्यालास्यं[१३] मकरास्यं[१४] च पूजनीयं प्रयत्नतः।
सव्यावर्त्तं क्रमेणैव दूर्वाङ्कुरचयैः[१५] शिवे।।४७।।

त्रिकोणे पूजयेद्देवि नदीस्तिस्त्रो विशेषतः।
गङ्गा च यमुनां चैव पूर्वा आदौ सरस्वतीम्।।४८।।

वामदेवं महादेवं सद्योजातं सदाशिवं।
बलप्रमथनं शर्वं तथा विकरणं वलम्।।४९।।

छिन्दौ[१६] सम्पूजयेद्देवमघोरं मन्त्रनायकम्।
ततः सम्पूजयेद्देवि ईशानं रुद्रमर्चयेत्।।५०।।

---

१३. क - व्यालास्ये
१४. क - मकरास्ये
१५. क - धूर्वाकुर
१६. क - विंदौ

तत्पुरुषादि गायत्री सावित्री भारती तथा।
एतल्लयाङ्ग[१७] त्रिविधं त्रिषु तन्त्रेषु गोपितम्।।५१।।

ध्यानमस्य प्रवक्ष्यामि यथा ध्यात्वा जपेन्नरः।
त्रिविधं त्रिगुणकं च रजः सत्त्वतमोमयम्।।५२।।

अथ ध्यानम्

श्री चन्द्रमण्डल गताम्बुज पीठ[१८] मध्ये देवं सुधाम्रविणमिन्दुकलावतंसम्।
मुद्राक्षसूत्रं कलशामृतपद्महस्तं देवं भजामि हृदये भुवनैकनाथम्।।

इति ध्यानम्

स्वनाभौ भैरवं ध्यायेछुक्लं विकसितं सितम्।
तन्मध्ये तु रजःसत्त्वतमोरूपं विभावयेत्।।५३।।

तस्य मध्ये तु तं देवं सूर्यकोटिसमप्रभम्।
अष्टादशभुजं दिव्यं रजोगुणविभूषितम्।।५४।।

वालार्कमण्डलाकारं लोचनत्रयभूषितम्।
मुद्राक्षसूत्रवलयं प्रासशूलगदाधरम्।।५५।।

कुन्तखड्गं चैव पाशपट्टिसधारणम्।
शक्तितोमरनाराच चर्म खट्वाङ्गभूषितम्।।५६।।

सुधाकलशवक्राङ्गं वराभयकराम्बुजम्।
दिगम्बरं वक्रकेशं पिङ्गकेशं जटाधरम्।।५७।।

अष्टाभिर्मातृभिर्युक्तं गणगन्धर्वसेवितम्।
महामन्त्रात्मकं देवमघोरं मन्त्रनायकम्।
''चेतसि स्मरेदिति ध्यानम्''।।५८।।

---

१७. ख - एतद्त्रयांगं १८. क - पीत

प्रयोगान् शृणु देवेशि दशतन्त्रेषु गोपितम्।
येन सम्यग्विधानेन जीवन्मुक्तिर्भविष्यति।।५६।।

स्तम्भनं मोहनं चैव मारणं कर्षणं तथा।
वशीकरं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा।।६०।।

सन्तानिकं मौक्तिकं च प्रयोगा दश कीर्तिता।
एतेषां साधनं वक्ष्ये यथावच्छृणु पार्वति।।६१।।

विधाय विधिवत्पूजां तत्त्वेनाघोर भैरवी।
गत्वार्द्धरात्रे विधिना स्नानं कृत्वा नदी तटे।।६२।।

वने चतुष्पथे वापि साधको विजितेन्द्रियः।
आसने साधनं कृत्वा वटमूले महेश्वरि।।६३।।

देवं सम्पूज्य स्वे यन्त्रे पठेत्कवचमादरात्।
मन्त्रं नामसहस्रं तु मंत्र स्तोत्रं च पार्वति।।६४।।

मूलं[१६] निष्कीलकं कृत्वा पठेदयुतसंख्यया।
होमो दशांशतः कार्यः सर्पिगोधूमचूर्णकैः।।६५।।

नीलसूत्रेण पुष्पैश्च श्वेतैर्नीलैस्तथा शिवे।
रजस्वलासृगकेन कर्पटेन विशेषतः।
तर्पयित्वा[२०] दशांशेन मार्जयित्वा दशांशतः[२१]।।६६।।

सम्भोज्य विधिवद् विप्रान्भस्मना तिलकं चरेत्।
स्तम्भनं जायते शीघ्रं रविचन्द्रादिपाथसाम्।।६७।।

रिपुसैन्यादिदस्यूनां कामिनां स्तम्भनं भवेत्।
कुग्रहे कुदिने रात्रौ शक्तिं सम्पूज्य साधकः।।६८।।

---

१६. क - श्रृलं
२०. ख - दर्पयित्वा
२१. क - दशांदतः

अन्यां वा स्वां महादेवि शक्तिं पूज्या विधानतः।
तथैव सुरतं कृत्वा ध्यात्वाघोरं सुरेश्वरम्।।६६।।

नदीतटे तथोद्याने[२२] ततस्थो विष्टरासनः।
अयुतं तु जपेन्मूलं होमः पायस सर्पिषा।।७०।।

तेन रेतोत्थकल्केन भस्मना तिलकं चरेत्।
मोहयेदखिलांल्लोकां मोहयेदपि केशवं।
मोहयेदपि ब्रह्माणं किं पुनः क्षुद्रमानुषान्[२३]।।७१।।

कृत्तिकाद्यन्तचरणे गत्वा शून्याटवीं शिवे।
संपूज्य विविधैः मन्त्रैः देवं सपरिवारकं।
शत्रुनाम्ना च संकल्प्य जपेन्मूलं तथायुतम्।।७२।।

होमः काकपलेनैव सर्पिषा सर्षपैस्तथा[२४]।
सद्य एव रिपुं देवि मारयेन्नात्र संशयः।।७३।।

शुभेऽह्नि देवि मध्याह्ने पूजयेद्देवमीश्वरम्।
जपेन्मूलं दिक्सहस्रं होमयेत्कुसमानि च।।७४।।

सर्पिषानाथ क्षौद्रेण कुंकुमं माहिष पलं।
आकर्षयेत् देवकन्याः स्वर्गस्था अपि सुन्दरीः।।७५।।

सुदिने देवि मध्याह्ने गत्वोपवनमण्डलम्।
सुवृक्षस्य तले देवि पूजयित्वा महेश्वरम्।।७६।।

जप्त्वा मूलायुतं देवि होमं कृत्वा विधानतः।
जातीफलैश्च दध्ना च सर्पिषा कुसुमैस्तथा।।७७।।

---

२२. क - तथाध्याने
२३. क - मानुषाः
२४. क - सर्पिषैस्त्था

शर्कराक्षौद्रमिश्रेण तर्पयित्वा दशांशतः।
इन्द्रोऽपि वशतामेति के वराका इमे नृपाः।।७८।।

शनौ रात्र्यवसाने तु स्नात्वा कर्मादिकं चरेत्।
अश्वत्थस्य तले देवं पूजयेच्छिवसुन्दरि।।७९।।

भूमौ यन्त्रं लिखेन्मन्त्रैर्वर्णैः संवेष्टयेत्ततः।
मूलेन पूजयेत् यन्त्रं जपेन्मूलं तथायुतम्।।८०।।

होमः सर्पियवैर्मत्स्यैः शृगालपलसर्षपैः।
कर्मणा मनसा वाचा रिपुमुच्चाटयेद् ध्रुवम् ।।८१।।

सुपर्वदिवसे सायं चन्द्रं दृष्टोदितं शिवे।
फट्कारेण दिशो बद्धा विधायासनशोधनम् ।।८२।।

जप्त्वा मूलायुतं मन्त्री होमः सर्पिःकचैर्नखैः।
मनुष्याणां तथान्त्रैश्च विडालस्य महेश्वरि।।८३।।

ग्रहाणामतिवृष्टेश्च मारीभीतेर्महेश्वरि।
दुर्भिक्षकाले देवेशि सद्यः शान्तिर्भविष्यति।।८४।।

स्वजन्मदिवसे जन्मकालावसरके तथा।
सम्पूज्य विधिना देवं जपेन्मन्त्रायुतं शनैः।।८५।।

होमयेत् घृतक्षीरादि पायसामलकत्वचः[२५]।
नृमांसमत्स्यखण्डानि तथान्त्राण्युष्ट्रकस्य च।
देवानां च त्रिलोकानां महापुष्टिः प्रजायते।।८६।।

स्वविवाहदिने देवि कामात्तु साधकोत्तमः।
यथोक्तविधिना सम्यक् शक्तिपूजां चरेत्ततः।।८७।।

---

२५. क - पायासा

रतोत्सवे महानन्दे जपेन्मन्त्रायुतं शिवे।
शक्तिवक्षःसमासीनः शक्तिपूजापरायणः।।८८।।

होमे रजस्वलारक्तसिक्तकर्पटखण्डकैः।
घृतपायसमृद्वीका शर्करादिप्रसूनकैः।
वन्ध्या च मृतवत्सापि लभते सन्ततिं शुभाम्।।८९।।

तिष्येवकृकरसोत्पन्ने मध्याह्ने वार्द्धरात्रके।
शून्यागारं समागत्य श्मशानं वा महेश्वरि।।९०।।

यथोक्तपूजया देवि पूजयित्वा सशक्तिकं।
जपेन्मूलायुतं देवि होमयेद् घृतपायसं।।९१।।

अथोपहारयेद् देवि मीनकंठकममासृजम्[२६]।
स्त्रीगर्भो निगडैर्बद्धो[२७] योगी रोगी सरीसृपः।
मुक्तिमेष्यति देवि त्वं सत्यं जानीहि मद्वचः।।९२।।

एते प्रयोगाः सकलाः साध्याः साधकसत्तमैः।
गोपनीया विशेषेण रक्षायै स्वात्मनः प्रिये[२८]।।९३।।

इतीदं पटलं गुह्यं तन्त्रमंत्राम्बुधिप्लवं।
गुह्यसर्वस्वमीशस्य गोपनीयं प्रयत्नतः।।९४।।

इति श्री रुद्रयामलतन्त्रेऽघोरसहस्राख्ये कल्पेऽघोर
पटलाख्यं नाम प्रथम पटलः।।
।। श्री अघोरभैरवाय नमः।।

---

२६. क - सृजसू
२७. क - निगडेर्बद्धो
२८. क - श्रिये

अघोर पटल

ॐ स्वस्ति। श्री गणेशाय नमः। श्री शिवाय नमः।

पार्वती ने विभ्रम होकर हिमालय के शिखर पर आसीन, भवानी पति ईश्वर, त्रिशूल एवं खट्वाङ्ग धारण करने वाले, कपाल एवं अस्थिमाला धारण करने से भयंकर, गणों, गन्धर्वो एवं सिद्ध समूहों के द्वारा सेवित, त्रिपुर का अन्त करने वाले, कार्तिकेय एवं गणेश से युक्त, विकसित मुख कमल वाले, गुणातीत, चिदाकर, सत् और असत् पदों को सुशोभित करने वाले, परमेश्वर शंकर से पूछा।। १, २, ३।।

श्री पार्वती उवाच

हे भगवन् ! समस्त लोकों के स्वामी ! समस्त प्राणियों के दयानिधि ! समस्त सांसारिक तत्त्वों के एकमात्र निलय, प्रलय एवं उत्पत्ति करने वाले ! महादेव ! महारुद्र ! महान् गुणों से विभूषित ! महान् रूप वाले ! महेश्वर ! महान सर्प को उपवीत की तरह धारण करने वाले ! महेश ! कामदेव का नाश करने वाले ! महासेन (कार्तिकेय) को वर प्रदान करने वाले ! तुम्हीं देवताओं को नित्य सदा वर प्रदान करने वाले हो।। ४, ५, ६।।

तुम्हीं तीनों लोकों के स्वामी हो, तुम्हीं सूर्य हो, तुम्हीं चन्द्र हो, तुम्हीं शिव हो, तुम्हीं अग्नि हो, तुम्हीं वायु हो, तुम्हीं जल हो, तुम्हीं पृथ्वी हो।। ७।।

तुम्हीं महान् आकाश हो, तुम्हीं परम गति हो, तुम्हारे अतिरिक्त मैं किसी को इस संसार सागर से पार कराने वाला नहीं देखती हूँ।। ८।।

हे भगवन् ! तुम मेरे ऊपर कृपा करो। हे देव ! मुझे वर प्रदान करो। अघोर तन्त्र के पुरातन, दिव्य एवं उचित पटल को मुझे बताइए।। ६।।

जिसके सम्यक् श्रवण मात्र से ही साधक उस पद को प्राप्त कर लेता है, यदि मेरे ऊपर दयावान हो तो उसके सार से भी सारतर अंश को हमसे कहिए।। १०।।

भैरव उवाच

हे देवि ! मैं देवताओं के लिए भी दुर्लभ अघोर का महामन्त्र एवं समस्त समृद्धियों का सुनिश्चित यन्त्र "पटल" कह रहा हूँ। उसे सुनो।। ११।।

जो अघोर नामक श्रेष्ठ देवता हैं, तीनों लोकों के स्वामी हैं, ऐश्वर्यवान् हैं, भैरव हैं, भयंकर आकार वाले हैं, गुणातीत हैं एवं समस्त सृष्टि के कारणभूत हैं, उनके द्वारा इस विश्व का सृजन किया जाता है, उन्हीं के द्वारा इस सृष्टि का पालन किया जाता है तथा अन्त में इस सृष्टि का संहार किया जाता है, वे तीनों लोकों का उद्धार करने में समर्थ हैं।। १२, १३।।

हे पार्वती देवि ! मैं उनके पटल, पद्धति, शुभ कवच, नाम सहस्रात्मक मन्त्र और मन्त्रमय स्तोत्र को तथा हे सुमुखि ! तुम्हारी प्रीति के कारण मैं मन्त्रोद्धार, यन्त्रोद्धार, लयाङ्ग और दस प्रयोगों को कहता हूँ। हे देवि ! इस दुर्लभ पञ्चाङ्ग को सुनकर प्रयत्नपूर्वक इसकी रक्षा करनी चाहिए।। १४,१५।।

अथ मन्त्रोद्धारः

ॐ मात्रादिः षडभिज्ञ वह्निकुलिशास्तस्माद्वलंभारजिद्
वह्नि वज्र करोत्तमाग्नियुगलं रात्राग्नि वज्रांकितम्।
संकोचौर्वतमै शुभौ वकयुतौ शक्त्यौर्वज्राश्मका
रत्यद्वीन्द्रिय सिन्धुमत्स्यकुलिशा मन्त्रोऽयामाघोरिकः ।।१६।।

।। इति मन्त्रोद्धारः।।

प्रकाश

अघोर, घोर, घोर से घोरतर, समस्त तत्त्वों के सर्वस्व (सब की आत्मा) उस रुद्र रूप को सब ओर से नमस्कार।।

इसके उपासक को विघ्न, कष्ट, विरोध, भय, मोह, दरिद्रता आदि का भय नहीं रहता और उसे दीक्षा की भी आवश्यकता नहीं है। यहाँ न सिद्ध और साध्य का विचार और न हीं शत्रु पक्ष का भय है।। १६।।

यह साक्षात् अमृत स्वरूप अणिमादि अष्ट सिद्धियों को देने वाला है। सम्प्रदाय में दीक्षित कुलीन और तन्त्र, मन्त्र के मर्मज्ञ को ही यह दिया जाय।। १७।।

अष्ट विधि कीलन, उत्तम सञ्जीवन मन्त्र को जानने वाले हे देवि ! अघोर मन्त्र आठ कीलों से कीलित है।। १८।।

प्रयत्नपूर्वक गोपनीय मन्त्र कीलन, आचार, उत्तम सञ्जीवन मन्त्र और सम्पुटविधि प्रकाशित करता हूँ।। १९।।

सभी ऐश्वर्य को देने वाला यह महामन्त्र कीलित है जिसमें वज्र के पाँच बीज और विश्वराट् अक्षर हैं।। २०।।

हे देवि ! तीन विश्व बीज और पार्थिव बीज से उत्पन्न इस उत्तम मन्त्र की साधना विधि सुनें।। २१।।

हे प्रिये ! मन्त्र के आदि में अक्ष से वज्र तक बीजों का प्रयोग करें। यह उत्कीलन मन्त्र है। अब सञ्जीवन मन्त्र सुनें।। २२।।

हे सुरेश्वरि ! प्रारम्भ में वज्रान्त का प्रयोग करना चाहिए। हे ईश्वरि ! उस मन्त्र में आदि बीज से वज्रान्त तक मन्त्रोद्धार करना चाहिए।। २३।।

यह मन्त्रराज सञ्जीवन मन्त्र सिद्ध मन्त्र जप करने योग्य है। इसकी सम्पुट विधि सुनें।। २४।।

विलादि से वज्रान्त तक इस मन्त्र को सम्पुटित करना चाहिए। पशु के सान्निध्य से हे सुरेश्वरि ! इसे गुप्त रखना चाहिए।। २५।।

प्रकाश

रुद्र रूप को, अघोर को, घोर को, घोर से घोरतर को, समस्त तत्त्वों के सर्वस्व को, सब ओर से नमस्कार। यह उत्कीलन मन्त्र है।

समस्त तत्त्वों में श्रेष्ठ, घोर से भी घोरतर, अघोर, घोर उस रुद्र रूप को सब ओर से नमस्कार। यह सिद्ध मन्त्र है।

अघोर, घोर से भी घोरतर, समस्त तत्त्वों में श्रेष्ठ, घोर रुद्र रूप को सब ओर से नमस्कार। यह सम्पुट मन्त्र है।

हे महादेवि ! इस मन्त्र को दीक्षित साधक, वर्णलक्ष संख्या पूरी होने तक जप करे, यही पुरश्चरण है। जिस प्रकार जीव रहित शरीर किसी कार्य को करने में समर्थ नहीं है। उसी प्रकार पुरश्चरण किये बिना मन्त्र फलदायक नहीं होता।। २६, २७।।

अर्द्धरात्रि में मध्याह्न में, सूने घरों में, चौराहे पर, वटवृक्ष के नीचे, श्मशान में अथवा जंगल में पुरश्चरण करना चाहिए। भूकम्प के समय देवता की पूजा करके मन्त्र के दस हजार जप करने से साधक को वर्णलक्ष जप करने का फल प्राप्त होता है।। २८, २९।।

प्रशस्त दिन एवं ग्रह स्थित रहने पर स्वच्छ घर में देवता की पूजा करके दस हजार मन्त्र जप करने से एक कोटि जप करने का फल होता है।। ३०।।

अब मैं समस्त तन्त्रों में गुप्त, समस्त सिद्धियों को प्रदान करने वाले और समस्त अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाले यन्त्र का यन्त्रोद्धार कहता हूँ।। ३१।।

अथ यन्त्रोद्धारः

अघोर देवता का तीन कोणों वाला, बिन्दुयुक्त, पाँच कोणों वाला, आठ कोणों वाला, आठ पत्तों वाला, सुन्दर वृत्त वाला, कला में स्थित, चार भूगृहों से सुशोभित वह्नि रेखाओं से युक्त यन्त्र सदा प्रकाशित होता है।

इति यन्त्रोद्धारः

हे देवि ! इस अघोर मन्त्र के महाकाल भैरव ऋषि, उष्णिक् छन्द तथा श्रीमान् कालाग्निरुद्र अघोर देवता एवं वीर्य कर्ण कहे गये हैं। श्रुति रूप बीज, श्रवण रूप शक्ति एवं कीलन, अणिमा आदि आठ सिद्धियों के लिए विनियोग बतलाए गये हैं।। ३२, ३३।।

इस श्रीमान् अघोर मन्त्र के श्री कालाग्निरुद्र, महाकाल और वामदेव ऋषि हैं, त्रिष्टुप् पंक्ति, अनुष्टुप् छन्द है, श्रीमान् अघोर भैरव देवता हैं। इस

मन्त्र का अणिमा आदि आठ सिद्धियों की प्राप्ति के लिए अघोर जप में विनियोग होता है।

हे देवि ! जिसके श्रवण मात्र से पुरश्चरण के फल की प्राप्ति होती हो, सभी आगमों से प्रतिपादित लयाङ्ग को सुनें।। ३४।।

इन्द्र, अग्नि, धर्मराज, निर्ऋति, वरुण, अनिल, कुबेर और ईश ये आठों द्वारपाल हैं। चार दिक्पालों की दिशाओं में एवं विदिशापालकों की विदिशाओं (दो दिशाओं के बीच का कोण) में दक्षिणावर्त क्रम से पूजन करना उत्तम है।। ३५, ३६।।

हे देवि ! मन्त्र सिद्ध करने वाले साधक को प्रयत्नपूर्वक उर्ध्व दिशा में गणपति की तथा नीचे वटुक की पूजा करनी चाहिए। इसी प्रकार पूर्व और पश्चिम दिशा में भी गणपति एवं वटुक की पूजा करनी चाहिए तथा दक्षिण एवं उत्तर दिशा में क्रमशः नन्दी तथा भृङ्गरीटि की पूजा करनी चाहिए। हे देवेशि ! मैं अष्टदल पूजन को विधिवत् ! कहता हूँ। तुम उसे सुनो। हे सुन्दरि ! नन्दी, वीरेश, सौभाग्य, भृङ्गिरीटि, विराटक, पुष्पदन्त, विकेत, अन्त्य, चित्त, लोहित, सुन्दक, त्रिपुरास्थि, विचार, उग्ररूप, स्वप्न, विनर्तक ये सोलह गण षोडशार में पूजनीय होते हैं।। ३७, ३८, ३९, ४०।।

हे सुमुखि ! अब मैं अष्टदल पूजा कहने जा रहा हूँ। अर्द्धरात्रि में जिसका विधान करके मनुष्य शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त करता है। साधकों के द्वारा महाकाल, कालाग्नि, संहार, रुद्र भैरव, उन्मत्त, समरानन्द, कराल एवं विकराल इन आठ भैरवों की अष्टारक में ही पूजा करनी चाहिए।

हे पर्वतनन्दिनी ! मैं अष्टकोणार्चन कह रहा हूँ उसे सुनो ! साधक को अष्टकोणों में ब्राह्मी, माहेश्वरी आदि अष्टमातृकाओं का पूजन करना चाहिए। ब्राह्मी, नारायणी, कौमारी, अपराजिता, माहेश्वरी, चामुण्डा, वाराही और नारसिंही ये अष्टमातृकाएँ हैं। वामावर्त्त से इनका पूजन और दक्षिणावर्त्त अन्य पूजन विहित है।। ४१, ४२, ४३, ४४, ४५।।

दे देवि ! प्रसन्न मुख कमल वाले, हयास्य, उष्ट्रवक्त्र, वह्निवक्त्र, व्यालास्य और मकरास्य इन पाँचों की पञ्चकोण में सव्यावर्त्त क्रम से दूर्वाङ्कुर से पूजन करना चाहिए।। ४६, ४७।।

हे देवि ! त्रिकोण में विशेष रूप से तीन नदियों की पूजा करनी चाहिए- प्रथमतः गंगा और यमुना, तदनन्तर सरस्वती की।

वामदेव, महादेव, सद्योजात, सदाशिव, बलप्रमथन, शर्व, विकरण एवं वल–इन मन्त्रनायक अघोर देव का वज्र में सम्यक् प्रकार से पूजन करना चाहिए। हे देवि ! तदनन्तर ईशान का पूजन करना चाहिए तथा रुद्र की अर्चना करनी चाहिए।। ४६, ५०।।

तत् से प्रारम्भ होने वाली गायत्री, सावित्री और भारती ये तीन प्रकार के लयाङ्ग तीन तन्त्रों में सुरक्षित हैं। इसके त्रिविध एवं सतोगुण, रजोगुण तथा तमोगुणात्मक ध्यान को कहता हूँ।। ५१, ५२।।

अथ ध्यानम्

श्री चन्द्रमण्डल में स्थित कमल पीठ के मध्य विराजित अमृतवर्षी, चन्द्रकलारूपी आभूषण से युक्त, मुद्राक्ष की माला से युक्त, अमृत कलश को कर कमल में धारण करने वाले, सम्पूर्ण भुवनों के एकमात्र स्वामी अघोर देव का मैं हृदय में ध्यान करता हूँ।। **इति ध्यानम्।।**

विकसित कुल वाला व्यक्ति अपनी नाभि में सित भैरव के मण्डल में रज, सत्त्व, तम रूप की भावना करें।। ५३।।

अट्ठारह भुजा, दिव्य रजोगुणविभूषित, कोटि सूर्य के समान प्रभावाले अघोर देव का उस मण्डल के मध्य अनुसन्धान करें।। ५४ ।।

प्रातः कालीन सूर्यमण्डल के आकार वाले, तीन नेत्रों से सुशोभित, मुद्राक्ष माला रूपी कंगन से युक्त तथा बरछी, शूल एवं गदा धारण करने वाले, भाला एवं तलवार धारण करने वाले, पाश, पट्टिश धारण करने वाले, शक्ति, तोमर, बाण, चर्म एवं खट्वाङ्ग से विभूषित, अमृत कलश पकड़ने से टेढ़े अंगों वाले, अभय वरदान की मुद्रा से युक्त दिगम्बर, घुँघराले भूरे बालों वाले, जटाधारी, आठ मातृकाओं से युक्त, गणगन्धर्वों से सेवित महामन्त्रात्मक मन्त्रनायक अघोर देव का स्वरूप है। ऐसे देव का हृदय में स्मरण करते हुए ध्यान करना चाहिए।। ५५, ५६, ५७, ५८।।

हे देवेशि ! जिसका उचित विधान करने से जीवन्मुक्ति प्राप्त होती है, दश तन्त्रों में भी जो गुप्त है, ऐसी प्रयोग विधि, आप सुनें।। ५९।।

स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण, उच्चाटन, शक्ति प्रयोग, पुष्टि प्रयोग, सान्तनिक प्रयोग और मुक्ति साधन ये दस प्रयोग कहे हैं। हे पार्वती ! मैं इन दशों का साधन यथाक्रम कहता हूँ। आप सुनें।। ६०, ६१।।

अघोर भैरवी की विधिवत् पूजा करके जितेन्द्रिय साधक नदी तट, वन या चौराहे पर अर्द्धरात्रि के अनन्तर विधिपूर्वक ध्यान करे। वट मूल में आसन शुद्धि कर, स्वयन्त्र का पूजनकर आदर पूर्वक, हे महेश्वरि ! कवच का पाठ करें। हे पार्वती ! मूल निष्कीलन कर सहस्रनाम मन्त्र स्तोत्र का दस हजार बार पाठ करें। हे शिवे ! घी, गेहूँ का आटा, नीलसूत्र, श्वेत और नीले पुष्प द्वारा दशांश होम विहित है। विशेष रूप से रजस्वला स्त्री के रज से भीगे कपड़े द्वारा दशांश तर्पण और दशांश मार्जन भी करें।। ६२, ६३, ६४, ६५, ६६।।

विधिपूर्वक ब्राह्मण भोजन कराकर भस्म का तिलक धारण करने से सूर्य और चन्द्र के पथ में शीघ्र स्तम्भन होता है।। ६७।।

शत्रु सेना, दस्यु, कामिनी का भी स्तम्भन होता है यदि कुदिन और कुग्रह, और रात्रि में साधक शक्ति का पूजन करे।। ६८।।

हे महादेवि ! विधानपूर्वक शक्तिपूजन कर सुरेश्वर अघोर देव का ध्यान करता हुआ सुरति साधन करे।। ६६।।

नदी तट या उद्यान में कुशासन पर स्थित हो दस हजार बार मूल मन्त्र का जप कर खीर और घृत से हवन करना चाहिए।। ७०।।

उस हवन के भस्म में वीर्य मिलाकर तिलक लगाने से अखिल लोक के साथ केशव और ब्रह्मा को भी साधक मोहित कर लेता है। फिर साधारण जन के लिए क्या कहना।। ७१।।

हे पार्वती ! कृत्तिका आदि नक्षत्र के अन्तिम चरण में सूने जंगल में जाकर विविध मन्त्रों से परिवार सहित अघोर देव का भलीभाँति पूजन कर संकल्पपूर्वक शत्रु का नामोच्चारण करके मूल मन्त्र का दस हजार बार जप करें।। ७२।।

कौए के माँस, घी एवं सरसों के द्वारा हवन करने पर शीघ्र ही शत्रु की मृत्यु हो जाती है। इसमें किसी भी प्रकार का संशय नहीं है।। ७३।।

हे देवि ! शुभ दिन मध्याह्न के समय देवता का पूजन कर, मूल मन्त्र का सहस्र जप करें। पुष्प, घी, कुंकुम और भैंसे के माँस के द्वारा हवन करना चाहिए। इससे देव कन्याएँ तथा स्वर्ग स्थित सुन्दरियाँ भी आकर्षित की ज़ा सकती हैं।

हे देवि ! शुभ दिन मध्याह्न के समय उपवन में जाकर सुन्दर वृक्ष के नीचे रुद्र का पूजन कर, मूल मन्त्र का दस हजार बार जप करके एवं विधान के अनुसार चमेली-पुष्प, फल, दही, व पुष्प के द्वारा हवन करके, शक्कर एवं शहद के मिश्रण के द्वारा दशांश से तर्पण करने पर इन्द्र भी वश में हो जाते हैं। ये बेचारे नृप क्या हैं।। ७६, ७७, ७८।।

हे पार्वती ! शनि की रात्रि की समाप्ति और रवि के आगमन के समय, अश्वस्थ (पीपल) के नीचे रुद्र का पूजन करें। पृथ्वी पर यन्त्र लिखें एवं बीजों से उसे वेष्टित करें, मूलमन्त्र से यन्त्र का पूजन करें और मूलमन्त्र का दस हजार बार जप करें। घी, जौ, मत्स्य, शृङ्गमांस और सरसों से हवन करें। ऐसा करने से मन, कर्म और वाणी से निश्चित ही शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।। ७६, ८०, ८१।।

हे पार्वती ! शुभ पर्व में सायंकाल चन्द्रोदय होने पर फट्कार से दिग्बन्धन करें, आसन शुद्धि करें। घी, मनुष्य के नख और केश तथा बिल्ली की अँतड़ी से हवन करें। ऐसा करने से दुर्भिक्ष में शान्ति मिलती है।। ८२, ८३, ८४।।

अपने जन्म के दिन और जन्म के समय देवता का पूजन कर मूलमन्त्र का दस हजार बार जप करें। खीर, पायस, आँवले के छिलके, मनुष्य माँस, मत्स्य खण्ड तथा ऊँट की अँतड़ी से हवन करने से देवताओं तथा तीनों लोकों की महापुष्टि होती है।। ८५, ८६।।

हे देवि ! साधक अपने विवाह के दिन कही हुई विधि के अनुसार शक्ति का पूजन करे। आनन्ददायक रतोत्सव के समय मूलमन्त्र का दस हजार बार जप करे। शक्ति के वक्षस्थल पर बैठे हुए तथा शक्ति उपासना में लीन होकर रजस्वला के रक्त में डूबा हुआ वस्त्र खण्ड, घी, पायस, अंगूर, चीनी,

और पुष्प से हवन करें। ऐसा करने से बन्ध्या और जिसके बच्चे मर गए हों, ऐसी स्त्री भी सुन्दर सन्तान प्राप्त करती है।। ८७, ८८, ८९।।

हे महेश्वरि ! तिष्य नक्षत्र में मध्याह्न अथवा अर्द्धरात्रि में शून्य गृह अथवा श्मशान में जाकर हे देवि ! यथोक्त पूजा के द्वारा शक्ति सहित पूजन करके दस हजार बार मूल मन्त्र का जप करना चाहिए। घी और पायस का हवन करे। तत्पश्चात् मत्स्य आदि का उपहार दे। ऐसा करने से स्त्री का जकड़ा हुआ गर्भ, योगी, रोगी, एवं सरीसृप वर्ग सभी मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।। ९०, ९१, ९२।।

हे देवि ! तुम मेरे वचन को सत्य जानो। उत्तम साधकों के द्वारा उपर्युक्त समस्त प्रयोग साधनीय हैं। हे प्रिये ! अपनी रक्षा के लिए उपर्युक्त सब प्रयोग अत्यन्त गुप्त रखना चाहिए। इस प्रकार अत्यन्त गुप्त तन्त्र और मन्त्र रूपी सागर को पार करने वाला यह पटल मैंने कहा। इसे गुप्त रखना चाहिए और प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिए।। ९३, ९४।।

इस प्रकार श्री रुद्रयामल में तन्त्र अघोर सहस्र नामक कल्प में
'अघोर पटल' नामक प्रथम पटल समाप्त हुआ।
।। श्री अघोर भैरवाय नमः।।

प्रातरुत्थायशिरसि श्रीगुरुंध्यात्वातद्यथा
करांबुयंविचिंत्यगांयशुभ्रांबरांस्मरेत्
पद्मेस्वानंदविग्रहं यस्यसान्निध्यमात्रेणचिदानंदायतिविभुः

सहस्रदलपंकजेसकलशीतरश्मिप्रभंवराभय
शिरसिहंसगंतनदपिरूर्वेश्वरं श्रीगुरुंपरमात्मानं
इतिध्यात्वानमस्कृत्वाश्री

अघोरपूजापद्धतिः

अघोरपूजापद्धतिः

प्रातरुत्थाय शिरसि श्रीगुरुं ध्यायेत्।

तद्यथा -

सहस्रदलपङ्कजे सकलशीतरश्मिप्रभं वराभय
कराम्बुजं विविधगन्धपुष्पाम्बरम् ।
प्रसन्नमुखपङ्कजं सकलदेवतारुपिणं
स्मरेच्छिरसि सन्ततं तद्भिधानपूर्व गुरुम्[1]।। १।।

श्री गुरुं परमात्मानं वन्दे रवानन्दविग्रहम्।
यस्य सन्निधिमात्रेण चिदानन्दायति वपुः।। २।।

इति ध्यात्वा नमस्कृत्यावश्यकं कृत्वा यथाविधि स्नानं सन्ध्यां कृत्वा मन्त्रसन्ध्यां समाप्य तर्पणं कुर्यात्। पितृतर्पणपूर्वकं गृहमागत्य सामान्यार्घं विधाय द्वारपूजां कुर्यात्। तद्यथा – सूर्याय अर्घ्यं दत्त्वा पूजयेत्। हुं फडिति द्वारं प्रक्षाल्य। ऊर्ध्वं गणेशाय नमः। वामदक्षिणौ

---

१. क -

''सहस्रदलपंकजेसकलशीतरश्मिप्रभं वराभव
करांबुधं विविधगंधपुष्पांबरां स्मरेत्
शिरसि हंसगंत तदपि पूर्व गुरुं।।''

क्रमात् महालक्ष्म्यै नमः। सरस्वत्यै नमः। गङ्गायै नमः। यमुनायै नमः। धात्रे नमः। विधात्रे नमः। नन्दाय नमः। सुनन्दाय नमः। प्रचण्डाय नमः। चण्डाय नमः। क्षेत्रपालाय नमः। वेतालाय नमः। अग्निवेतालाय नमः।

ततः आसनमन्त्रेण पुष्पं कृत्वा। अनन्तासनाय नमः। विमलासनाय नमः। पद्मासनाय नमः।

पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

इत्यासन मंत्रः। त्रिर्वामपार्श्वे छातं कृत्वा।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

इति विघ्नानुत्सार्य। अघोराय फट् इति दश दिशो बद्धा भूत शुद्धिं कुर्यात्। अद्य भूतशुद्धिमहं करिष्ये इति संकल्पः। वामे गुरुभ्यो नमः। दक्षिणे गणेशाय नमः। अग्रे शिवाय नमः। पृष्ठे क्षेत्रपालाय नमः। इति नमस्कारः। प्रणवेण प्राणायामत्रयं कृत्वा हूमिति मूलाधारात्कुण्डलिनीमुत्थाप्य सुषुम्णा वर्त्मना हृदयस्थ-जीवमादाय ब्रह्मरन्ध्रगतं विभाव्य हंसः इति ब्रह्मणि योजयेत्। ततः पादादिजान्वतं पृथिवी। जान्वादिनाभ्यन्तं जलं। नाभ्यादिहृदान्तं वह्निं। हृदादि भ्रूमध्यान्तं वायुं। भ्रूमध्यादि द्वादशान्तमाकाशं। प्रत्येकं प्रविलाप्य आकाशमहंकारे। अहंकारं महत्तत्त्वे। अहं प्रकृतौ। सच्चिदानन्दरूपे। ब्रह्मणि विलाप्य आत्मानं ब्रह्ममयं विभाव्य।

अहं देवो न चान्योऽस्ति ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।
सच्चिदानन्दरूपोऽहं नित्यमुक्तः स्वभाववान्।।

एवं विभाव्य स्वशरीरदक्षकुक्षौ पापपुरुषं ध्यायेत्।

ब्रह्महत्या शिरस्कं च स्वर्णस्तेयं च बाहुकं।
सुरापानं हृदायुक्तं गुरुतल्पं कटिद्वयं।।

तत्संयोगादि पद त्वक् च रोमं प्रत्यङ्गपातकं।
उपपातकरोमाणां रक्तश्मश्रु विलोचनम्।।

खड्ग चर्म धरं पापमष्टापरिप्रमाणकं।
अधोमुखं कृष्णवर्णं दक्षकुक्षौ विचिन्तयेत्।।

इति ध्यात्वा। यं। वायुबीजेन प्राणायामः ३२। कुम्भक १६। रेचयेत् १६। स्वशरीरयुतं पापपुरुषं विशोध्य। रं। वह्निबीजेन दग्धं विभाव्य। भस्मरूपं ध्यात्वा। यं वायुबीजेन प्राणायामं तेन दग्धपापपुरुष भस्म बहिः रेचयेत्। ततः वं अमृतबीजेन प्राणायामं तेन ललाटचन्द्रसुतामृतधारया स्वशरीरभस्मं प्लाव्यं। लं। भूबीजेन प्राणायामं तेन शरीरं पिण्डीभूतं विभाव्य। हं। आकाशबीजेन प्राणायामः। तेन शरीरं निष्पाद्य भूतानुत्पाद्य द्वादशान्तं जीवमादाय निर्गच्छन्तीं कुण्डलिनीं ध्यात्वा हृदये सोऽहं इति जीवं संस्थाप्य मूलाधारगतां कुण्डलिनीं ध्यायेत्। इति भूतशुद्धिः। ततः ॐ जप्त्वा।।१६।।

पूर्वं दिनमरुणोदयमारभ्य उच्छ्वासनिरुच्छ्वासरूपेण निष्पन्नं अजपाजपं आधारादिस्थगणेशादिभ्य[२]ः समर्पयिष्ये । इति संकल्पः। आधारस्थगणेशाय षट्शतं, स्वाधिस्थानस्थब्रह्मणे षट्सहस्रं,

---

२. क - दित्यः

मणिपूरस्थविष्णवे षट्सहस्रं, अनाहतस्थरुद्राय षट्सहस्रं, विशुद्धिस्थजीवात्मने सहस्रं, अज्ञास्थपरमात्मने सहस्रं द्वादशान्तस्थगुरवे सहस्रं अजपा गायत्री जपं निवेदयामि नमः। इति जपासंकल्पाः। ॐ सदाशिवाय विद्महे त्र्यंबकाय धीमहि तन्नः शिवः प्रचोदयात्। अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः। ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता। आ बीजं क्रो शक्तिः मम प्राणस्थापने विनियोगः। ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेभ्यो नमः शिरसि। ऋग्यजुःसामभ्यो नमः मुखे। प्राणशक्तये नमः हृदि। आं नमः गुह्ये।। क्रौं नमः पादयोः। ततो वक्ष्यमाण षडङ्गम्। डं. कं. खं गं घं आं आकाशवायुवह्निजलपृथिव्यात्मने हृदयाय नमः। ञं चं छं जं झं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा। णं टं ठं डं ढं श्रोत्रत्वक्चक्षुजिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषट्। नं तं थं दं धं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हुं। मं पं फं बं भं वक्त्रपादानगमन विसर्गतन्द्रात्मने[३] नेत्रत्रयाय वौषट्। शं यं रं लं वं क्षं सं षं मनोमूर्द्धाहंकारचित्तात्मने करतलपृष्ठाभ्यां नमः। अस्त्राय फट्। आं नमः नाभ्यादि पादान्तं। हृं नमः हृदादि नाभ्यन्तं। क्रौं नमः मस्तकादि हृदान्तं। यं त्वगात्मने नमः। रं असृगात्मने नमः। लं मांसात्मने नमः। वं वेदात्मने नमः। शं अस्थ्यात्मने नमः। षं मज्जात्मने नमः। सं क्रोधात्मने नमः। हं जयात्मने नमः। ॐ विजयात्मने नमः। हं प्राणात्मने नमः। सं जीवात्मने नमः। एतान् हृदि।

रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां,
पाशांकुशाभिक्षु शरासबाणान्।

---

३. ख - च च नादानगमन विसर्गनिंदात्मने

शूलं कपालं दधती कराब्जै
रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्।।

इति ध्यात्वा मानसैः संपूज्य हृदिस्थं निधाय जपेत्। आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं ओं क्षं हं सं सः क्षी ओं हंसः मम प्राणाः इह प्राणाः पुनः पुनः मम जीव इह स्थित पुनः पुनः मम सर्वेन्द्रियाणि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।।इति प्राणप्रतिष्ठा।।

अथ मातृकान्यासमाह। प्राणायामत्रयं कृत्वा। मातृकाया ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छंदः मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः उपास्यमाना भवानीशङ्करमन्त्राङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः। ब्रह्मणे नमः शिरसि। गायत्र्यै नमः मुखे। सरस्वत्यै नमः हृदि। हल्भ्यो[४] नमः गुह्ये। स्वरेभ्यो नमः पादयोः। अः कः खः गः घः ङः आः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। इः चः छः जः झः ञः ईः तर्जनीभ्यां नमः। उः टः ठः डः ढ़ः णः ऊः मध्यमाभ्यां नमः। एः तः थः दः धः नः ऐः अनामिकाभ्यां नमः। ओः पः फः बः भः मः औः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। अं यः रः लः वः शः षः सः हः लः क्षः अः करतलपृष्ठाभ्यां नमः। अः कः खः गः घः ङ.: आः हृदयाय नमः। इः चः छः जः झः ञः ईः शिरसे स्वाहा। उः टः ठः डः ढः णः उः शिखायै वषट्। एः तः थः दः धः नः ऐ कवचाय हूं। ओः पः फः बः भः मः औ नेत्रत्रयाय वौषट्। अः यः रः लः वः शः षः सः हः लः क्षः अः अस्त्राय फट्। एवं षडङ्ग कृत्वा ध्यायेत्।।

पंचाशल्लिपिभिर्विभक्तमुखदोर्यत्सन्धिवक्षःस्थलां
भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुंगस्तनीम्।

---

४. क - हल्ला

मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च हस्ताम्बुजै -

बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये।।

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य न्यासं कुर्यात्। अं नमः केशान्ते। आं नमः मुखवृत्ते। इं नमः दक्षनेत्रे। ईं नमः वामनेत्रे। उं नमः दक्षकर्णे। ऊं नमः वामकर्णे। ऋं नमः दक्षनासापुटे। ॠं नमः वामनासापुटे। लृं नमः दक्षकपोले। ॡं नमः वामकपोले। एं नमः ओष्ठे। ऐं नमः अधरोष्ठे। ओं नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ। औं नमः अधोदन्तपंक्तौ। अं नमः शिरसि। अः नमः जिह्वायां । कं खं गं घं ङं दक्षपादसन्धिषु। चं छं झं ञं वामहस्तसन्धिषु। टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं वामपादसन्धिषु। पं नमः दक्षपार्श्वे। फं नमः वामपार्श्वे। बं नमः पृष्ठे। भं नमः नाभौ। मं नमः उदरे। यं नमः हृदये। रं नमः वामांसे। लं नमः ककुदि। वं नमः दक्षांसे। शं नमः हृदादि दक्षभुजान्तं। षं नमः हृदादि वामभुजान्तं। सं । नमस्तदादि दक्षपादान्तं। हं नमः तदादि वामपादान्तं। लं नमः तदादि जठरान्तं। क्षं नमस्तदादि मुखान्तं ।। इति सृष्टिमातृकान्यासः[५]।।

श्री कण्ठादिमातृकाया दक्षिणामूर्ति ऋषिः गायत्री छन्दः अर्द्धनारीश्वरो हरो देवता, हलो बीजानि स्वराः शक्तयः उपास्यमान अघोर मन्त्राङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः। दक्षिणामूर्त्तये नमः शिरसि। गायत्र्यै नमः मुखे। अर्द्धनारीश्वराय नमः हृदि। हल्भ्यो नमः गुह्ये। स्वरेभ्यो नमः पादयोः। ह्सां हृदयाय नमः। ह्सीं शिरसे स्वाहा। ह्सूं शिखायै वषट्। ह्सैं कवचाय हुं। ह्सौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्सः करतलपृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।

---

५. क - सृष्टि

अथ-ध्यानम्

बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशांकुशौ च वरदं निजबाहुदण्डैः।

बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्रम -
र्धाबिकेशमनिशं वपुराश्रयामः ।।

इति ध्यात्वा मानसैः सम्पूज्य न्यसेत् -

ओं ह्सौं अं श्री कण्ठेश पूर्णोदरीभ्यां नमः ललाटे। ॐ ह्सौं आं अनंतेशविरजाभ्यां नमः मुखे। ह्सौं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः दक्षनेत्रे। ॐ ह्सौं ईं त्रिमूर्त्तीशलोलाक्षीभ्यां नमः वामनेत्रे। ॐ ह्सौं उं अमरेश वर्तुलाक्षीभ्यां नमः दक्षकर्णे। ॐ ह्सौं ऊं अधीश दीर्घघोणाभ्यां नमः वामकर्णे। ॐ ह्सौं ऋं भूभारभूतेशदीर्घमुखीभ्यां नमः दक्षनासापुटे। ॐ हंसौ ॠ अतिथीशगोमुखीभ्यां नमः वामनासापुटे। ॐ ह्सां लृं स्थाण्डवीश दीर्घजिह्वाभ्यां नमः दक्षकपोले। ॐ ह्सौं लृं हरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः वामकपोले। ॐ ह्सौं एं जण्टीश उर्ध्वमुखीभ्यां नमः। ॐ ह्सौं ऐं भौतिकेश विकृतमुखीभ्यां नमः अधरोष्ठे । ॐ ह्सौं ओं सद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐ ह्सौं औं अनुग्रहेश उल्कामुखीभ्यां नमः अधोदन्त पंक्तौ। ॐ ह्सौं अं अक्रूरेश श्रीमुखीभ्यां नमः शिरसि। ॐ ह्सौं अः महासेनेशविद्यामुखीभ्यां नमः जिह्वायां।। ॐ ह्सौं कं क्रोधीश महाकालीभ्यां नमः दक्षबाहुमूले। ॐ ह्सौं खं चण्डेशसरस्वतीभ्यां नमः कूर्परे। ॐ ह्सौं गं पञ्चातकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः मणिबन्धे। ॐ ह्सौं घं शिवोत्तमेशत्रिलोकविद्याभ्यां नमः अंगुलिमूले। ॐ ह्सौं डं. रुद्रेशत्रिमूर्तिभ्यां नमः अंगुल्यग्रे। ॐ ह्सौं चं कूर्मेशात्मशक्तिभ्यां

नमः वामबाहुमूले। ॐ ह्सौं छं एकनेत्रेशभूतमातृकाभ्यां नमः कूर्परे। ॐ ह्सौं ज चतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमः मणिबन्धे। ॐ ह्सौं झं अजेशद्राविणीभ्यां नमः अङ्गुलिमूले। ॐ ह्सौं ञ सर्वेशनारीभ्यां नमः अङ्गुल्यग्रे। ॐ ह्सौं टं सोमेशखेचरीभ्यां नमः दक्षपादमूले। ॐ ह्सौं ठं लाङ्गलीशमञ्जरीभ्यां नमः जानुनि। ॐ ह्सौं डं दारुकेशरूपिणीभ्यां नमः गुल्फे। ॐ ह्सौं ढं अर्द्धनारीश्वर वीरिणीभ्यां नमः अङ्गुलिमूले। ॐ ह्सौं णं उमाकान्तेश काकोदरीभ्यां नमः अङ्गुल्यग्रे। ॐ ह्सौं तं आषाढीषपूतनाभ्यां नमः वामपादमूले। ॐ ह्सौं थं दण्डीश भद्रकालीभ्यां नमः जानुनि। ॐ ह्सौं दं अत्रीश योगिनीभ्यां नमः गुल्फे। ॐ ह्सौं धं मीनेश शंखिनीभ्यां नमः अङ्गुलिमूले। ॐ ह्सौं नं मेषेशगततर्जनीभ्यां नमः अङ्गुल्यग्रे। ॐ ह्सौं पं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमः दक्षपार्श्वे। ॐ ह्सौं फं शिखीशकुब्जिनीभ्यां नमः वामपार्श्वे। ॐ ह्सौं बं छागलांडेशकपर्दिनीभ्यां नमः पृष्ठवंशे। ॐ ह्सौं भं द्विरण्डेश वज्रिनीभ्यां नमः नाभौ। ॐ ह्सौं मं महाकालेश जयाभ्यां नमः उदरे। ॐ ह्सौं यं त्वगात्मभ्यां वालीशमुखीभ्यां नमः हृदये। ॐ ह्सौं रं असृगात्मभ्यां भुजगेशरेवतीभ्यां नमः वामांसे। ॐ ह्सौं ल मांसात्मभ्यां पिनाकीश माधवीभ्यां नमः ककुदि। ॐ ह्सौं वं मेदात्मभ्यां खड्गीश वारुणीभ्यां नमः दक्षांसे। ॐ ह्सौं श अस्थात्मभ्यां नमः वामांसे। ॐ ह्सौं शं अस्थात्मभ्यां टवंकेशवायवीभ्यां नमः हृदादि दक्षहस्ताग्रान्तम्। ॐ ह्सौं षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेशरक्षौबधिरीभ्यां नमः हृदादिवामहस्ताग्रान्तम्। ॐ ह्सौं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीश सहजाभ्या[६] नमः हृदादि दक्षपादाग्रान्तम्। ॐ ह्सौं हं प्राणात्मभ्यां नकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः हृदादि वामपादाग्रान्तम्।

---

६. क - सज्जाभ्यां

ॐ ह्सौं ङं॰ शक्त्यात्मभ्यां शिवेश व्यापिनीभ्यां नमः हृदादिजठरान्तम्। ॐ ह्सौं क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्त्तकेशमहामायाभ्यां नमः हृदादि मुखान्तम्।। इति श्री कण्ठादिन्यासः।।

अथाष्टत्रिंशत् कलान्यासः

ईशानः सर्वविद्यानामित्यस्य ईश ऋषिः भूरिगनष्टुप छन्दः ईश्वरो देवता न्यासे विनियोगः। तत्पुरुषाय इत्यस्य तत्पुरुष ऋषिः गायत्री छन्दः आपो देवता न्यासे विनियोगः। अघोरेभ्य इत्यस्य अघोर ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता न्यासे विनियोगः। वामदेव इत्यस्य वामदेव ऋषिः पंक्तिः छन्दो भर्गो देवता न्यासे विनियोगः। सद्योजाताय इत्यस्य हरि ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः न्यासे विनियोगः। ईशान तत्पुरुष अघोरवामदेवहरेभ्यो नमः शिरसि। भूरिगनुष्टुप्गायत्र्यनुष्टुप् कृत्यनुष्टुब्भ्यो नमः मुखे। ईश्वरापोऽग्नि-भर्गेभ्यो नमः हृदि।

ईशानः सर्वविद्यानाम् ईश्वरः सर्वभूतानाम् ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवः सदाशिवो मे अस्तु। इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। इति तर्जनीभ्यां नमः।

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्रेभ्यः।।
।। इति मध्यमाभ्यां नमः।।

वामदेवाय ज्येष्ठाय श्रेष्ठाय कालाय कलविकरणाय वलविकरणाय वलप्रमथनाय सर्वभूतमनोन्मनाय नमः इत्यनामिकाभ्यां नमः।

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः।
भवे भवेनाति भवे भजस्व मां भवोद्भवाय।।
।।इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।।

तेनैव पञ्चमन्त्रेण पञ्चवक्त्रेषु न्यासः -

ततः षडङ्गन्यासमाह। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं सर्वज्ञाय अंगुष्ठाभ्यां नमः हृदयाय नमः। ॐ ऐं श्रीं ह्सौं अमृत ज्वालामालिनि नित्य तन्मये ब्रह्मातर्जनीभ्याम् नमः शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं ज्वलित शिखि शिखाय अनादिबोधाय मध्यमाभ्यां शिखायै वषट्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं वज्रिणे वज्रहस्ताय स्वतन्त्राय अनामिकाभ्यां कवचाय हुं। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं संबौदौ नित्यम् अलुप्तशक्तये कनिष्ठिकाभ्यां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं श्रीं ह्रीं पाशुपतास्त्राय फट् करतलपृष्ठाभ्यां नमः।। इति कराङ्गन्यासः।।

अथ ईशानकला

ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय ईशानः सर्वविद्यानां शशिन्यै नमः पूर्वमुखे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय ईश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिः अङ्गदायै नमः उत्तरमुखे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय ब्रहमणोऽधिपतिर्ब्रह्मेष्टदायै नमः पश्चिममुखे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय शिवो मे अस्तु मरीच्यै नमः दक्षिणमुखे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय अंशुमालिन्यै नमः उर्ध्वमुखे।। इति ईशान कला।।

अथ तत्पुरुष कला

ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय तत्पुरुषाय विद्महे शान्त्यै नमः पूर्वमुखे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय महादेवाय धीमहि विद्यायै नमः उत्तरमुखे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय तन्नो रुद्रः प्रतिष्ठायै नमः पश्चिममुखे। ॐ ह्री हौं नमः शिवाय प्रचोदयान्निवृत्यै नमः दक्षिणमुखे।। इति तत्पुरुषस्य कला।।

अथ अघोर कला

ॐ ह्री हौं नमः शिवाय अघोरेभ्यस्तमायै नमः हृदये। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय अथ धोरेभ्यो मोहाय[८] नमः ग्रीवायां।। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय घोरव्याधये नमः पृष्ठे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय घोरतरेभ्यो क्षमायै नमः दक्षिणांसे। ॐ ह्रीं हौ नमः शिवाय सर्वतः रुजायै नमः वामांसे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय सर्व सर्वेभ्यो मृत्यवे[९] नमः नाभौ। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय नमस्तेऽस्तु तृषायै नमः उदरे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय वामदेवाय रुद्ररूपेभ्यः क्षुधायै नमः पार्श्वे।। इति अघोर कला।

अथ वामदेवस्य कला

ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय वामदेवाय रजसायै नमः गुल्फे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय ज्येष्ठाय[१०] रक्षायै नमः गुदे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय श्रेष्ठाय विकरिण्ये नमः दक्षस्फिजि। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय कलाय करिण्यै नमः वामस्फिजि। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय कलविकरणाय काल्यै नमः दक्षकट्यां। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय

---

८. क - मोहायै
९. क - मृतवे
१०. क - ज्येवाष्टायरक्षयै

वल विकरणाय बलप्रमथिन्यै नमः वामकट्यां। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय वलप्रमथनायसर्वभूतदमिन्यै नमः दक्षपार्श्वे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय मनोन्मनाय रत्यै नमः वामपार्श्वे।। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय सर्वाय भूतदमिन्यै नमः दक्षोरौ। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय दमनाय प्रीत्यै नमः वामोरौ। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय दमनाय पालिन्यै नमः दक्षजानौ। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय भ्रामर्यै नमः वामजानौ। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय उन्मनाय पालिन्यै नमः लिङ्गे।। इति वामदेवस्य कला।।

अथ सद्योजातकला अष्टौ लिख्यते । यथा –

ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय सद्योजातं प्रपद्यामि सिद्धये नमः दक्षपार्श्वे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय सद्योजाताय वैवृध्यै नमः वाम पार्श्वे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय भवादित्यै नमः दक्षपादतले। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय ऋभवे लक्ष्म्यै नमः वामपादतले। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय नातिभवे मेधायै नमः घ्राणे। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय भजस्व मां प्रज्ञायै नमः मस्तके। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय भवाय स्वाहायै नमः दक्षबाहौ। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय उद्भवाय स्वधायै नमः वामबाहौ। इति सद्योजातस्य कला समाप्ता।

दिक्षु [११]प्राज्ञामपश्चाद्वसुपतिजभुवामैन्द्रवाराहराज्ञां
हृद्ग्रीवांसनाभ्युदरवरस वक्षस्फिग्गुल्फाण्डयोश्च।
पूर्वे जान्वोः स्फिगुभयकरी पार्श्वपद्मस्थलेषु
घ्राणैके बाहुयुग्मेष्वपि विशदमतिर्विन्यस्येदङ्गलिभिः।।

---

११. क - प्राग्पामिपारी

विन्यासाः प्रतिमाकृतौ तु नितरां सान्निध्यकृत्स्नादयं
देहे वाऽपि शरीरिणां निगदितः सान्निध्यकारीति च।
आस्ते यत्र तथा मुनेव दिनशो विन्यस्तदेहः पुमान्
क्षेत्रं देशममुं च योजनमितं शैवागमज्ञा विदुः।।

अथ ध्यानम्

शुद्धस्फटिककान्तिमिन्दुमुकुटं त्र्यक्षैर्मुखैर्पञ्चभि-
र्मुक्ताहेमपयोदकुन्दविलसत्सिन्दूरवर्णैर्युतम् ।
अग्निं वज्रकृपाणटङ्कविलसच्छूलाहिघण्टाकुशा-
न्पाशं भीतिहरं दधानमनिशं दोर्भिर्महेशं भजे।।

यथाविधि पूजनम्

एवं न्यासं तनौ कृत्वा पीठन्यासं समाचरेत्।
पीठशक्तिं तनौ न्यस्य न्यसेत् पीठमनुं ततः।।
ततो ध्यात्वा महादेवं सुकल्पादिनं विग्रहम्।
तस्य मुद्राः प्रदर्श्याथ पूजयेन्मनसा विभुम्।।
ततोऽर्घं स्थापयेद् ब्रह्मपूजनाय यथाविधि।
गुरूपदिष्टविधिना पुनर्ध्यात्वा महेश्वरं।।
पीठपूजां ततः कृत्वा तच्छक्तीस्तत्र[१२] पूजयेत्।
तस्य मन्त्रेण मध्ये च पूजयेदासनं विभोः।।

---

१२. क - तच्छक्ति

मूलेन मूर्तौ क्लिप्तायां शिवमावाहयेत्ततः।
आवाहनादिभिस्तन्तुपुष्पान्नैरुपचारकैः ।।

अर्चयित्वा ततो न्यसेद् वेदवाक्यावृतो सुधीः।
न्यस्तैवं पञ्चभिर्ब्रह्म त्रिभिश्च शिवमावहेत्।।

द्राग्भिराग्भिर्मध्ये प्राग्याम्यसौम्यापरदिशि पुन।
रंगैरन्तादिभिश्च अङ्ग माद्यन्दिशां यैः[93]।।

पुनरपि कुलिशाद्यैर्यजेद्देवमुक्तं पञ्चब्रह्म।
विधानं सकलमुखयशोभुक्तिमुक्तिप्रदं च।।

ततो धूपादिभिस्तं च पूजयेदुपचारकैः।
जपं कृत्वा निवेद्यैनं ततो देवं विसर्जयेत्।।

उपास्ये तत्त्वमंत्रे तु मातृकान्यासतः परम्।
कुर्यात्पूर्वोदितान्न्यासान्षडङ्गन्यासपूर्वकान् ।।

ततः तच्चैवमन्त्रेण न्यासान्कुर्याद्विचक्षणः
ततः कल्पोक्तमार्गेण पूजयेत्तं यथाविधि।।

अथार्घ्यपात्रस्थापनविधिमाह। यथा –

स्ववामभागे त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरश्ररूपं यन्त्रं विलिख्य शंखमुद्रां प्रदर्श्य षडङ्गमन्त्रैः सम्पूज्य फट् प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने अघोरार्घ्यपात्रासनाय नमः।

---

१३. क - अंगेमाद्यन्दिशां थैः

गन्धाक्षताभ्यामभ्यर्च्य -

ॐ मं धूम्रर्च्यै नमः। ॐ यं कूष्माण्डायै नमः। ॐ रं ज्वलिन्यै नमः। ॐ लं ज्वालिन्यै नमः। ॐ वं विस्फुर्लिङ्गिन्यै नमः। ॐ शं सुश्रियै नमः। ॐ षं सुरूपायै नमः। ॐ सं कपिलायै नमः। ॐ हं हव्यवाहायै नमः। ॐ ळं कव्यवाहायै नमः। इत्यासने ततः पात्रं प्रक्षाल्य तदुपरि संस्थाप्य ॐ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने अघोरार्घपात्राय नमः। कं तपिन्यै नमः। खं तापिन्यै नमः। गं धूम्रायै नमः। घं मरीच्यै नमः। ङं. ज्वालिन्यै नमः। चं रुच्यै नमः। छं सुषुम्णायै नमः। जं भोगदायै नमः। झं विश्वायै नमः। ञं बोधिन्यै नमः। टं धारिण्यै नमः। ठं क्षमायै नमः। इति पात्रमध्ये पूजनीयाः कलाः। ततो मूलमन्त्रं जप्त्वा जलेनापूर्य ॐ चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने अघोरार्घपात्राय नमः। अं अमृतायै नमः। आं मानदायै नमः। इं रुषायै नमः। ईं तुष्ट्यै नमः। उं पुष्ट्यै नमः। ऊं रत्यै नमः। ऋं धृत्यै नमः। ॠं शशिन्यै नमः। ऌं चन्द्रिकायै नमः। ॡं कान्त्यै नमः। एं ज्योत्स्नायै नमः। ऐं श्रियै नमः। ओं प्रीत्यै नमः। औं अङ्गदायै नमः। अं पूर्णायै नमः। अः पूर्णामृतायै नमः।

एता जलमध्ये पूजनीयाः। ततो कुशमुद्रया। गंगे च यमुने चैवेति जप्त्वा तीर्थानां बाह्यमूलेन अष्टशोऽभिमन्त्र्य षडङ्गैः सम्पूज्य ततो नम इति गन्धादिना सम्पूज्य मत्स्यमुद्रया पुनरष्टशोऽभिमन्त्र्य फडिति च्छोटिकाभिः संरक्ष्य हूं इत्यवगुंठ्य ठं इति अमृतीकृत्य शंखचक्रमुसलयोनिमुद्राः प्रदर्शयेत्। ततः पात्रादुदकमादाय। तेनोदकेनानेन मन्त्रेणात्मानं यागवस्तूनि च प्रोक्षयेत्। ॐ परमात्मामृतरूपेण अघोरचन्द्रमण्डलनिवासाय चन्द्रामृतेन पूरय पूरय द्रव्यमिदं कुरु कुरु ॐ हौं स्वाहा ।। इति मन्त्रः।।

अनेन सर्वं प्रोक्षयेत्। आत्मानं सम्पूज्य शिरोहृदाधारसर्वाङ्गेषु पुष्पाणि दत्वा आत्मानं तन्मयं विभाव्य। मूलाधारोद्धृतकुण्डलिनी सङ्गतललाटवंशामृत तथाभिः। सन्तर्प्य पीठपूजां कुर्यात्। पीठोत्तरे गुरुभ्यो नमः। परमगुरुभ्यो नमः। परापरगुरुभ्यो नमः। परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः। उत्तरे गणेशाय नमः। मण्डूकाय नमः। कालाग्निरुद्राय नमः। मूलप्रकृत्यै नमः। आधारशक्त्यै नमः। कूर्माय नमः। वाराहाय नमः। पृथिव्यै नमः। उपर्य्युपरि सम्पूज्य तन्मध्ये सुधार्णवाय नमः। तन्मध्ये नवरत्नविराजित-नवखंडमय- श्वेतद्वीपाय नमः। तत्रेशानादिष्ठाष्टसु प्रादक्षिण्येन मध्ये च पुष्परागरत्नखण्डाय नमः ईशाने। नीलरत्नखण्डाय नमः पूर्वे। वैदूर्यरत्नखण्डाय नमः आग्नेय्यां। विद्रुमरत्नखण्डाय नमः दक्षिणे। मौक्तिकरत्नखण्डाय नमः नैऋते। मरकतरत्नखण्डाय नमः उत्तरे। एतन्मध्ये पद्मरागरत्नखण्डाय नमः तन्मध्ये। सुवर्णपर्वताय नमः तदुपरि। नन्दनोद्यानाय नमः तन्मध्ये। कल्पवनाय नमः तन्मध्ये। सहस्रस्तम्भान्वित मध्यस्तम्भ विवर्जित चतुः पञ्चाशद्योजनविस्तीर्णनानारत्नखचितचिन्तामणिमण्डपाय नमः तन्मध्ये नवरत्नखचितरत्नमयवेदिकायै नमः तदुपरिमध्ये। ॐ रत्नसिंहासनाय नमः तदुपरि। उच्चैः श्वेतच्छत्राय नमः।

ततः पीठस्य कल्पित अग्निकोणादिषु धर्माय नमः ज्ञानाय नमः वैराग्याय नमः ऐश्वर्याय नमः कल्पितपूर्वादिषु अधर्माय नमः अवैराग्याय नमः अनैश्वर्याय नमः। सिंहासनमध्ये अं अनन्ताय नमः पं भासमानाय नमः आनन्दकन्दाय नमः संविन्नालाय नमः सहस्रदलकमलाय नमः प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः विकृतिमयकेसरेभ्यो नमः। पंचाशद्वर्णवीजाढ्य सर्वतत्त्वरूपायै कर्णिकायै नमः। रं वह्निमंडलाय नमः। तं तमसे नमः। रं रजसे नमः। सं सत्त्वाय नमः। विद्यातत्त्वाय नमः। कलातत्त्वाय नमः। परमात्मने नमः।

मायातत्त्वाय नमः। परतत्त्वाय नमः। ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय।। सर्वमन्त्रासनाय नमः। अं आमित्यादि क्षांतमुच्चार्य शिव-शक्ति - सदा - शिवेश्वर - शुद्ध - विद्या - माया - कला -विद्या - राग - काल - नियति - पुरुष - प्रकृति - अहंकार - बुद्धि - मन - त्वक् - चक्षुः - श्रोत्र-जिह्वा - घ्राण - वाक् - पाणि - पाद - पायु-उपस्थ - शब्द - स्पर्श - रूप - रस - गन्ध - आकाश - वायु - सलिल - पृथिव्यात्मने श्री योगपीठाय नमः। ततोऽष्ट पत्रेषु वामायै नमः ज्येष्ठायै नमः रौद्र्ये नमः काल्यै नमः कलविकरण्यै नमः बलविकरण्यै नमः बलप्रमथिन्यै नमः सर्वभूतदमिन्यै नमः। ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनन्ताय योगपीठात्मने नमः ।। इति पीठमन्त्रः।।

मूलमन्त्रेण संकल्प्यावाहयेत्। मूलेन सुषुम्णया हृदयस्थं ज्योतिर्वामनासया निस्सार्य करस्थपुष्पेषु स्थितं ध्यात्वा आवाहयेत्। आत्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामहं परमेश्वर अरण्यामिव हव्यांशमूर्त्तावावाहयाम्यहम्। इति मूलेन नवमुद्राः प्रदर्श्य मन्त्रन्यासं षडङ्गं च कृत्वा प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा स्वागतं सुस्वागतमित्युदीरयेत्। नमो तेन मूलेन पाद्यार्घ्यं दद्यात्। तत्र श्यामाकदूर्वाकमलं शिवाक्रान्ता निक्षिप्य एवं पाद्यार्घ्याय आचमनीय मधुपर्क स्नानं च कृत्वा देवस्य शरीरे मूलपुटितमातृकाक्षरैः सम्पूज्य मातृकस्थलेषु धूपदीपनैवेद्यानि दत्त्वा पुष्पाञ्जलित्रयं दद्यात्।

मूलेन पश्चादावरणं पूजयेत्। ब्रह्माण्यै नमः। माहेश्वर्यै नमः। वैस्तव्यै नमः। वाराह्यै नमः। नारसिंह्यै नमः। इंद्राण्यै नमः। चामुण्डायै नमः। महालक्ष्म्यै नमः।। प्रथमावरणं।। असिताङ्ग भैरवाय नमः। रुरु भैरवाय नमः। चण्डभैरवाय नमः। क्रोधभैरवाय नमः। उन्मत्तभैरवाय नमः। कपालभैरवाय नमः। भीषणभैरवाय नमः। संहारभैरवाय नमः।। द्वितीयावरणं।। लं इन्द्राय नमः। रं अग्नये

नमः। मं यमाय नमः। खं नैऋत्ये नमः। वं वरुणाय नमः। यं वायव्यै नमः। कं कुबेराय नमः। हं ईशानाय नमः। अं अनन्ताय नमः। सं सोमाय नमः।। इति तृतीयावरणं।। वज्राद्यैः षष्ठं इत्यावरणं सम्पूज्य नैवेद्यं पुष्पाञ्जलित्रयं दत्त्वा यथाशक्ति मूलमन्त्रं जप्त्वा संहारमुद्रया विसर्जयेत्। शैवमुद्रा पञ्चमुष्टि शारङ्गलिङ्गयोनि पञ्चमुखाः इति। शंङ्खमुद्रा गुरुमुखे ज्ञातव्यः। ईशानतत्पुरुषाघोरवामदेवसद्योजातः पञ्चब्रह्म त्रिशक्ति प्रतिष्ठा विद्या शान्तिः शान्त्यतीताः।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रेऽघोरसहस्राख्ये
कल्पेऽघोरपूजापद्धतिः सम्पूर्णा।
।। समाप्तम्।।

अघोरपूजापद्धति

प्रातः उठकर अपने मस्तिष्क में श्री गुरु का ध्यान करना चाहिए।

यथा :

सहस्र पंखुड़ियों वाले कमल पर पूर्ण चन्द्रमा की प्रभा वाले; अभय वरदान की मुद्रा से युक्त कर-कमल वाले; विविध गन्धों, पुष्पों एवं वस्त्र वाले; प्रसन्न मुख-कमल वाले सम्पूर्ण देवता रूपी, अभिधानपूर्व गुरु का मस्तिष्क में निरन्तर स्मरण करना चाहिए। १।

मैं आनन्द शरीरधारी परमात्मा श्री गुरु की वन्दना करता हूँ, जिसके सान्निध्य मात्र से शरीर चिदानन्द हो जाता है। २।

इस प्रकार ध्यान करके, श्री गुरु को नमस्कार करके, आवश्यक कार्य करके, विधिपूर्वक स्नान करके, सन्ध्या करके, मन्त्र सन्ध्या समाप्त करके, तर्पण करना चाहिए। पितृ तर्पण करने के पश्चात् घर आकर सामान्य अर्घ्य देकर पूजा करनी चाहिए। जैसे – सूर्य को अर्घ्य देकर पूजन करना चाहिए। **हूँ फट्** से द्वार का प्रक्षालन करके, ऊपर की ओर **गणेशाय नमः** लिखकर, बाएँ से दक्षिण की ओर क्रमशः **महालक्ष्म्यै नमः, सरस्वत्यै नमः, गङ्गायै नमः, यमुनायै नमः, धात्रे नमः, विधात्रे नमः, नन्दाय नमः, सुनन्दाय नमः, प्रचण्डाय नमः, चण्डाय नमः, क्षेत्रपालाय नमः, वेतालाय नमः, अग्नि वेतालाय नमः** लिखना चाहिए।

तदनन्तर आसन मन्त्र के द्वारा पुष्प अर्पित करके **अनन्तासनाय नमः।, विमलासनाय नमः। पद्मासनाय नमः** लिखना चाहिए।

आसन मन्त्र

"हे देवि ! तुम्हारे द्वारा पृथ्वी लोक धारण किया गया है। तुम विष्णु के द्वारा धारण की गयी हो। तुम मुझे धारण करो तथा हे देवि ! आसन को पवित्र करो।"

इति आसन मन्त्र

तीन बार बाएँ और पीछे काटकर –

"जो भूत पृथ्वी पर स्थित हैं वे भूत भाग जाएं। जो भूत विघ्न करने वाले हैं वे शिव की आज्ञा से नष्ट हो जाएं।"

इस प्रकार विघ्नों को दूर करके, **अघोराय फट्** से दसों दिशाओं को बाँधकर भूत शुद्धि करनी चाहिए। 'अब मैं भूत शुद्धि करूँगा।' यह संकल्प है। बाएँ **गुरुभ्यो नमः**, दाहिने **गणेशाय नमः**, आगे **शिवाय नमः**, पीछे **क्षेत्रपालाय नमः** यह नमस्कार है।

प्रणव (**ॐ**) के द्वारा तीन बार प्राणायाम करके, **हूँ** इस मंत्र के द्वारा मूलाधार से कुण्डलिनी को जगाकर सुषुम्ना मार्ग से हृदय स्थित जीव को लेकर ब्रह्मरन्ध्र में स्थित करके, **हंस**, इस मन्त्र के द्वारा ब्रह्म में लगाना चाहिए। तदनन्तर पैर से घुटने तक पृथ्वी; घुटने से लेकर नाभि तक जल, नाभि से लेकर हृदय पर्यन्त अग्नि; हृदय से लेकर भौहों के बीच तक वायु, भौहों से लेकर द्वादश पर्यन्त आकाश। प्रत्येक का विलय करके, यथा– आकाश को अहंकार में, अहंकार को महत् तत्त्व में एवं महत् तत्त्व को प्रकृति में, तदनन्तर सच्चिदानन्द रूप ब्रह्म में विलय करके आत्मा को ब्रह्ममय जानकर–मैं देव हूँ, दूसरा देव नहीं है, मैं ब्रह्म हूँ, शोकयुक्त नहीं हूँ, मैं सच्चिदानन्द रूप हूँ, नित्यमुक्त स्वभाव वाला हूँ,– इस प्रकार भावना करके अपने शरीर के दाहिने कुक्षि में पाप पुरुष का ध्यान करना चाहिए।

पाप पुरुष का ध्यान :

ब्रह्म हत्या पाप पुरुष का शिर है, सोने की चोरी बाहु है; सुरापान हृदय है, गुरु की शय्या कटि प्रदेश है, उससे संयुक्त पैर, त्वचा एवं रोम प्रत्येक अंग पातक होता है। रोम, लाल दाढ़ी एवं लाल नेत्र ये उपपातक होते हैं। तलवार एवं चर्म को धारण करने वाला आठ से अधिक प्रमाण के पाप वाला होता है। निम्न मुख वाले कृष्ण वर्ण को दाहिने कुक्षि में चिन्तन करना चाहिए।

इस प्रकार ध्यान करके **यं** वायुबीज से बत्तीस बार प्राणायाम करना चाहिए, सोलह बार कुम्भक तथा सोलह बार रेचक।

भूत शुद्धि :

अपने शरीर में स्थित पाप पुरुष का शोधन करके **रं** वह्नि बीज से दग्ध की भावना करके भस्म रूप का ध्यान करके, **यं** वायुबीज से प्राणायाम करके उससे दग्ध पाप पुरुष के भस्म को बाहर निकालना चाहिए। तदनन्तर **वं** अमृत बीज से प्राणायाम करके उससे ललाट रूपी चन्द्र से निकलने वाले अमृत की धारा से स्वशरीरगत भस्म को धोना चाहिए। **लं** इस भू बीज से प्राणायाम करके उससे शरीर की पिण्डीभूत भावना करके **हं** इस आकाश बीज से प्राणायाम करके, उससे शरीर निष्पादन करके, भूतों को उत्पन्न करके, द्वादश पर्यन्त जीव को लेकर निकलती हुई कुण्डली का ध्यान करके हृदय में **सोऽहं** इस प्रकार जीव की स्थापना करके, मूलाधार में स्थित कुण्डलिनी का ध्यान करना चाहिए। यह **भूतशुद्धि** कहलाती है।

तदनन्तर यह संकल्प करना चाहिए –

"सोलह बार **ॐ** का जप करके, पहले दिन सूर्योदय से आरम्भ कर उच्छ्वास ओर निरुच्छ्वास रूप से निष्पन्न अजपाजाप को आधारादि स्थित गणेश आदि को समर्पण करूँगा।"

इति संकल्प

जप संकल्प :

"**आधार** स्थित गणेश को ६००, **स्वाधिस्थान** में स्थित ब्रह्मा को ६०००, **मणिपूर** स्थित विष्णु को ६०००, **अनाहत** स्थित रुद्र को ६०००, **विशुद्धि**

स्थित जीवात्मा को १०००, **आज्ञा** स्थित परमात्मा को १०००, **द्वादशान्त** स्थित गुरु को १००० अजपा गायत्री जप निवेदन करता हूँ।

इति जप संकल्प

प्राण प्रतिष्ठा :

ॐ सदाशिवाय विद्महे त्र्यम्बकाय धीमहि तन्नः शिवः प्रचोदयात्।

इस प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र के ब्रह्मा, विष्णु और शंकर ऋषि हैं। ऋक्, यजुष् और साम छन्द हैं, प्राण शक्ति देवता है। **आं** बीज है, **क्रो** शक्ति है। मेरे प्राण स्थापन में यह विनियोग है।

ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेभ्यो नमः	-	**शिरसि**
ऋग्यजुःसामभ्यो नमः	-	**मुखे**
प्राणशक्तये नमः	-	**हृदि**
आं नमः	-	**गुह्ये**
क्रौं नमः	-	**पादयोः**

तदनन्तर **षडङ्ग न्यास** है –

ङं कं खं गं घं आं आकाशवायुवह्निजलपृथिव्यात्मने हृदयाय नमः।

ञं चं छं जं झं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने शिरसे स्वाहा।

णं टं ठं डं ढं श्रोत्रत्वक्चक्षुजिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषट्।

नं तं थं दं धं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हुं।

मं पं फं बं भं वक्त्रपादानगमनविसर्गतन्द्रात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

शं यं रं लं वं हं क्षं सं षं मनोमूर्द्धाहंकारचित्तात्मनेकरतलपृष्ठाभ्यां नमः। अस्त्राय फट्।

आं नमः नाभ्यादिपादातन्तम्। हृं नमः हृदादि नाभ्यतन्तम् । क्रौं नमः मस्कादि हृदान्तम्। यं त्वगात्मने नमः। रं असृगात्मने नमः। लं मांसात्मने नमः। वं वेदात्मने नमः। शं अस्थ्यात्मने नमः। षं मज्जात्मने नमः। सं

क्रोधात्मने नमः। हं जयात्मने नमः। ऊँ विजयात्मने नमः। हं प्राणात्मने नमः। सं जीवात्मने नमः।

"रुधिर समुद्र के नौका रूपी लाल कमल पर स्थित, कर कमल के द्वारा पाश, अंकुश, धनुष, बाण से युक्त, शूल और कपाल को धारण करने वाली, लाल त्रिनेत्रों वाली देवी को प्रणाम करता हूँ।"

इस प्रकार ध्यान करके, मन से पूजन करके, हृदय में धारण करके जप करना चाहिए –

आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं ओं क्षं हं सं सः क्षी ओं हंसः
मम प्राणाः इह प्राणाः पुनः पुनः मम जीव इह स्थित पुनः
पुनः मम सर्वेन्द्रियाणि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इति प्राण प्रतिष्ठा

अब **मातृका न्यास** कहते हैं–

तीन बार प्राणायाम करके। मातृका के बह्मा ऋषि हैं, गायत्री छन्द है, मातृका सरस्वती देवता हैं। 'हल्' बीज है, स्वर शक्तियाँ हैं। पूज्यमान भवानी और शंकर के मन्त्राङ्ग से न्यास में विनियोग होता है।

ब्रह्मणे नमः	-	**शिरसि**
गायत्र्यै नमः	-	**मुखे**
सरस्वत्यै नमः	-	**हृदि**
हल्भ्यो नमः	-	**गुह्ये**
स्वरेभ्यो नमः	-	**पादयोः**

अः कः खः गः घः ङः आः अंगुष्ठाभ्यां नमः।

इः चः छः जः झः ञः ईः तर्जनीभ्यां नमः।

उः टः ठः डः ढः णः ऊः मध्यमाभ्यां नमः।

एः तः थः दः धः नः ऐः अनामिकाभ्यां नमः।

ओः पः फः बः भः मः औः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

अंः यः रः लः वः शः षः सः हः लः क्षः अः करतलपृष्ठाभ्यां नमः।

अः कः खः गः घः ङः आः हृदयाय नमः।

इः चः छः जः झः ञः ईः शिरसे स्वाहा।

उः टः ठः डः ढः णः ऊः शिखायै वषट्।

एः तः थः दः धः नः ऐः कवचाय हूँ।

ओः पः फः बः भः मः औः नेत्रत्रयाय वषट्।

अः यः रः लः वः शः षः हः लः क्षः अः अस्त्राय फट्।

इस प्रकार **षडङ्ग न्यास** करके ध्यान करना चाहिए।

ध्यान

"पचास लिपियों (अ-क्ष) के द्वारा निर्मित मुख एवं भुजाओं वाली, सन्धिपूर्ण वक्षस्थल से युक्त, प्रकाशमान सिर पर स्थित प्रकाशमान चन्द्रकला वाली, पीन एवं उत्तुंग स्तनों वाली तथा अपने कर-कमलों से मुद्रा, अक्षमाला, अमृत पूर्ण कलश और विद्या को धारण करने वाली, विशद प्रभावाली, तीन नेत्रों वाली वाग्देवता का मैं आश्रय लेता हूँ।"

ध्यान के अनन्तर **मानसिक पूजन** करके न्यास करना चाहिए –

अं नमः केशान्ते	-	**लृं नमः दक्षकपोले**
आं नमः मुखवृत्ते	-	**ॡं नमः वामकपोले**
इं नमः दक्षनेत्रे	-	**एं नमः ओष्ठे**
ईं नमः वामनेत्रे	-	**ऐं नमः अधरोष्ठे**
उं नमः दक्षकर्णे	-	**ओं नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ**
ऊं नमः वामकर्णे	-	**औं नमः अधोदन्तपंक्तौ**
ऋं नमः दक्षनासापुटे	-	**अं नमः शिरसि**
ॠं नमः वामनासापुटे	-	**अः नमः जिह्वायां**
कं खं गं घं ङं	-	**दक्षहस्तसन्धिषु**
चं छं जं झं ञं	-	**वामहस्तसन्धिषु**

टं ठं डं ढं णं - दक्षपादसन्धिषु

तं थं दं धं नं - वामपादसन्धिषु

पं. नमः - दक्षपार्श्वे

फं नमः - वामपार्श्वे

बं नमः - पृष्ठे

भं नमः - नाभौ

मं नमः - उदरे

यं नमः - हृदये

रं नमः - वामांसे (बाएँ कन्धे पर)

लं नमः - ककुदि (चोटी पर)

वं नमः - दक्षांसे (दाएँ कन्धे पर)

शं नमः - हृदादिदक्षभुजान्तम्

षं नमः - हृदादि वामभुजान्तम्

सं नमः - तदादि दक्षपादान्तम्
(हृदय से लेकर दाहिने पैर तक)

हं नमः - तदादि वामपादान्तम्
(हृदय से लेकर बाएँ पैर तक)

लं नमः - तदादि जठरान्तम्

क्षं नमः - तदादि मुखान्तम्

इति पृष्ठ मातृका न्यास

श्री कण्ठ आदि मातृका के दक्षिणामूर्ति ऋषि हैं। गायत्री छंद है। अर्द्धनारीश्वर शंकर देवता हैं। **हल्** बीज है। स्वर शक्तियाँ हैं। उपास्यमान अघोर मन्त्राङ्ग से न्यास में विनियोग करना चाहिए।

दक्षिणामूर्त्तये नमः - शिरसि

गायत्र्यै नमः - मुखे

अर्द्धनारीश्वराय नमः - हृदि

हल्भ्यो नमः - गुह्ये

स्वरेभ्यो नमः - पादयोः

ह्सां हृदयाय नमः।

ह्सीं शिरसे स्वाहा।

ह्सूं शिखायै वषट्।

ह्सैं कवचाय हुं।

ह्सौं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ह्सः करतलपृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्।

ध्यान :

अपने भुजदण्ड से बन्धूक एवं स्वर्ण के समान सुन्दर अक्षमाला एवं पाश तथा अंकुश और अभयवर देने वाली मुद्रा को धारण करने वाली, चन्द्रखण्डरूपी आभूषण से युक्त, तीन नेत्रों से युक्त, अर्द्धाम्बिका के स्वामी शंकर का अहर्निश हम आश्रय लेते हैं।

इस प्रकार मानस पूजन करके न्यास करना चाहिए।

ओं ह्सौं अं श्री कण्ठेश पूर्णोदरीभ्यां नमः - ललाटे

ॐ ह्सौं आं अनन्तेश विराजाभ्यां नमः - मुखे

ॐ ह्सौं सूक्ष्मे शशाल्मलीभ्यां नमः - दक्षनेत्रे

ॐ ह्सौं ई त्रिमूर्तीशलोलाक्षीभ्यां नमः - वामनेत्रे

ॐ ह्सौं उं अमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमः - दक्षकर्णे

ॐ ह्सौं ऊं अधीश दीर्घघोणाभ्यां नमः - वामकर्णे

ॐ ह्सौं ऋं भूभार भूतेश दीर्घमुखीभ्यां नमः - दक्षनासापुटे

ॐ ह्सौं ॠं अतिथीशगोमुखीभ्यां नमः - वामनासापुटे

ॐ ह्सौं लृं स्थाण्डवीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः - दक्षकपोले

ॐ ह्सौं लॄं हरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः - वामकपोले

ॐ ह्सौं एं जंठीश उर्ध्वमुखीभ्यां नमः - ओष्ठौ

ॐ ह्सौं ऐं भौतिकेश विकृतमुखीभ्यां नमः - अधरोष्ठे

ॐ ह्सौं ओं सद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः - उर्ध्वदन्तपंक्तौ

ॐ ह्सौं औं अनुग्रहेश उल्कामुखीभ्यां नमः - अधोदन्तपंक्तौ

ॐ ह्सौं अं अक्रूरेश श्रीमुखीभ्यां नमः - शिरसि

ॐ ह्सौं अः महासेनेशविद्यामुखीभ्यां नमः - जिह्वायां

ॐ ह्सौं कं क्रोधीश महाकालीभ्यां नमः - दक्षबाहुमूले

ॐ ह्सौं खं चण्डेशसरस्वतीभ्यां नमः - कूर्परे

ॐ ह्सौं गं पञ्चातकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः - मणिबन्धे

ॐ ह्सौं घं शिवोत्तमेशत्रिलोकविद्याभ्यां नमः - अंगुलिमूले

ॐ ह्सौं ङं रुद्रेश त्रिमूर्तिभ्यां नमः - अंगुल्यग्रे

ॐ ह्सौं चं कूर्मेश आत्मशक्तिभ्यां नमः - वामबाहुमूले

ॐ ह्सौं छं एकनेत्रेश भूतमातृकाभ्यां नमः - कूर्परे

ॐ ह्सौं जं चतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमः - मणिबन्धे

ॐ ह्सौं झं अजेशद्राविणाभ्यां नमः - अंगुलिमूले

ॐ ह्सौं ञं सर्वेशनागरीभ्यां नमः - अंगुल्यग्रे

ॐ ह्सौं टं सोमेशखेचरीभ्यां नमः - दक्षपादमूले

ॐ ह्सौं ठं लांगलीश मञ्जरीभ्यां नमः - जानुनि

ॐ ह्सौं डं दारकेशरूपिणीभ्यां नमः - गुल्फे

ॐ ह्सौं ढं अर्द्धनारीश्वरवीरिणीभ्यां नमः - अंगुलिमूले

ॐ ह्सौं णं उमाकान्तेश काकोदरीभ्यां नमः - अंगुल्यग्रे

ॐ ह्सौं तं आषाढीशपूतनाभ्यां नमः - वामपादमूले

ॐ ह्सौं थं दण्डीश भद्रकालीभ्यां नमः - जानुनि

ॐ हसौं दं अत्रीशयोगिनीभ्यां नमः - गुल्फे
ॐ हसौं धं मीनेश शंखिनीभ्यां नमः - अंगुल्यग्रे
ॐ हसौं नं मेषेशगततर्जनीभ्यां नमः - अंगुल्यग्रे
ॐ हसौं पं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमः - दक्षपार्श्वे
ॐ हसौं फं शिखीशकुब्जिनीभ्यां नमः - नाभौ वामपार्श्वे
ॐ हसौं बं छागलांडेशकपर्दिनीभ्यां नमः - पृष्ठवंशे
ॐ हसौं भं द्विरंडेशवज्रिनीभ्यां नमः - नाभौ
ॐ हसौं मं महाकालेश जयाभ्यां नमः - उदरे
ॐ हसौं यं त्वगात्मभ्यां वालीशमुखीभ्यां नमः - हृदये
ॐ हसौं रं असृगात्मभ्यां भुजंगेशरेतीभ्यां नमः - वामांसे
ॐ हसौं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीश माधवीभ्यां नमः - ककुदि
ॐ हसौं वं मेदात्मभ्यां खड्गीश वारुणीभ्यां नमः - दक्षांसे
ॐ हसौं शं अस्थात्मभ्यां नमः - वामांसे
ॐ हसौं शं अस्थात्मभ्यां टवंकेशवायवीभ्यां नमः - हृदादि दक्षहस्ताग्रान्तम्
ॐ हसौं षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेशरक्षौबधिरीभ्यां नमः - हृदादि वाम हस्ताग्रान्तम्
ॐ हसौं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीश सहजाभ्यां नमः - हृदादि दक्षपादाग्रान्तम्
ॐ हसौं हं प्राणात्मभ्यां नकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः - हृदादि वामपादाग्रान्तम्
ॐ हसौं डं शक्त्यात्मभ्यां शिवेश व्यापिनीभ्यां नमः - हृदादि जठरान्तम्
ॐ हसौं क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्त्तकेशमहामायाभ्यां नमः - हृदादि मुखान्तम्

इति श्री कण्ठादि न्यास

अथाष्टत्रिंशत् कला न्यास :

ईशानः सर्वविद्यानाम् इति इस मन्त्र के ईश ऋषि हैं, भूरिक् और अनुष्टुप् छन्द है, ईश्वर देवता हैं, न्यास में विनियोग होता है।

तत्पुरुषाय इति इस मन्त्र के तत्पुरुष ऋषि हैं, गायत्री छन्द है, आप् (जल) देवता हैं, न्यास में विनियोग होता है।

अघोर इस मन्त्र के अघोर ऋषि हैं, अनुष्टुप् छन्द है, अग्नि देवता है, न्यास में विनियोग होता है।

सद्योजाताय इस मन्त्र के हर ऋषि हैं, अनुष्टुप छन्द है, भर्ग देवता हैं, न्यास में विनियोग होता है।

ईशानतत्पुरुषअघोरवामदेवहरेभ्यो नमः - शिरसि

भूरिगनुष्टुपगायत्र्यनुष्टुपकृत्यनुष्टब्भ्यो नमः - मुखे

ईश्वरापोऽग्निभर्गेभ्यो नमः - हृदि

ईशानः सर्वविद्यानाम् ईश्वरः सर्वभूतानाम् ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवः सदाशिवो मे अस्तु इत्यगुंष्ठाभ्यां नमः।

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् इति तर्जनीभ्यां नमः।

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वतः सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्र रुपेभ्यः।।
इति मध्यमाभ्यां नमः

वामदेवाय ज्येष्ठाय श्रेष्ठाय कलाय कलविकरणाय।
बलविकरणाय बलप्रमथनाय सर्वभूतमनोन्मनाय नमः।।
इत्यनामिकाभ्यां नमः

अब मैं सद्योजात कहता हूँ –

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः।
भवे भवेनाति भवे भजस्व मां भवोद्भवाय।।
इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः

उक्त पाँच मन्त्रों से पाँच मुखों में न्यास होता है।

अब **षडङ्ग न्यास** कहते है :–

ॐ ऐं श्रीं ह्सौं सर्वज्ञाय अंगुष्ठाभ्यां नमः। हृदयाय नमः।

ॐ ऐं श्रीं ह्सौं अमृत ज्वालामालिनि नित्य तन्मये ब्रह्मा तर्जनीभ्यां नमः शिरसे स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं ज्वलिति शिखि शिखाय अनादि बोधाय मध्यमाभ्यां शिखायै वषट्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं वज्रिणे वज्र हस्ताय स्व तन्त्राय अनामिकाभ्यां कवचाय हुं।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं संबौदौ नित्यम् अलुप्तशक्तये कनिष्ठिकाभ्यां नेत्र-त्रयाय वौषट्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं श्रीं ह्रीं पाशुपतास्त्राय फट् करतलपृष्ठाभ्यां नमः।

इति कराङ्ग न्यास

अब **ईशान कला** कहते हैं –

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय ईशान सर्वविद्यानां शशिन्यै नमः - पूर्वमुखे

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय ईश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिः अंगदायै नमः- उत्तरमुखे

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मेष्टदायै नमः - पश्चिममुखे

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय शिवो मे अस्तु मरीच्यै नमः - दक्षिणमुखे

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय अंशुमालिन्यै नमः - उर्ध्वमुखे

इति ईशान कला

अब **तत्पुरुष कला** कहते हैं –

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय तत्पुरुषाय विद्महे शान्त्यै नमः - पूर्वमुखे

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय महादेवाय धीमहि विद्यायै नमः - उत्तरमुखे

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय तन्नो रुद्रः प्रतिष्ठायै नमः - पश्चिममुखे

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय प्रचोदयान्निवृत्यै नमः - दक्षिणमुखे

इति तत्पुरुष कला

अब **अघोर कला** कहते हैं –

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय अघोरेभ्यस्तमायै नमः - हृदये
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय अथ घोरेभ्यो मोहाय नमः - ग्रीवायां
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय घोरव्याधये नमः - पृष्ठे
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय घोरतरेभ्यो क्षमायै नमः - दक्षिणांसे
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय सर्वतः रुजायै नमः - वामांसे
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय सर्वसर्वेभ्यो मृत्यवे नमः - नाभौ
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय नमस्तेऽस्तु तृषायै नमः - उदरे
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय वामदेवाय रुद्ररूपेभ्यः क्षुधायै नमः - पार्श्वे

इति अघोर कला

अब **वामदेव** कला कहते हैं –

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय वामदेवायरजसा नमः - गुल्फे (घुटने)
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय ज्येष्ठाय रक्षायै नमः - गुदे
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय श्रेष्ठाय विकरिण्ये नमः - दक्षस्फिजि (दाहिने नितम्ब)
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय कलाय करिण्यै नमः - वामास्फिजि (बाएँ नितम्ब)
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय कलविकरणाय काल्यै नमः - दक्षकट्यां (दाहिनी कमर)
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय बलविकरणाय वलप्रमथिन्यै नमः - वामकट्यां
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय वलप्रमथनाय सर्वभूतदमिन्यै नमः - दक्षपार्श्वे
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय मनोन्मनाय रत्यै नमः - वाम पार्श्वे
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय शर्वाय भूतदमिन्यै नमः - दक्षोरौ (दाहिनी जाँघ)
ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय दमनाय प्रीत्यै नमः - वामोरौ (बायीं जाँघ)

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय दमनाय पालिन्यै नमः - दक्षजानौ
(दाहिने घुटने में)

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय भ्रामण्यै नमः - वामजानौ
(बाएँ घुटने में)

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय उन्मनाय पालिन्यै नमः - लिङ्गे

इति वामदेव कला

अब **सद्योजात** की आठ कलाओं को लिखते हैं –

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय सद्योजातं प्रयपद्यामि सिद्धये नमः - दक्षपार्श्वे

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय सद्योजाताय वैवृध्यै नमः - वाम पार्श्वे

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय भवादित्यै नमः - दक्षपादतले

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय ऋभवे लक्ष्म्यै नमः - वामपादतले

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय नातिभवे मेधायै नमः - घ्राणे

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय भजस्व मां प्रज्ञायै नमः - मस्तके

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय भवाय स्वाहायै नमः - दक्षबाहौ

ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय उप्ताभवाय स्वधायै नमः - वामबाहौ

सद्योजात कला समाप्त

निर्मल मति वाले जन अंगुलियों से हृदय, ग्रीवा, कन्धा, नाभि, उदर, वक्षस्थल, नितम्ब, घुटना, अण्ड, पूर्व जानु, एक नासिका, बाहुओं में न्यास करें।

प्रतिमा की आकृति में विन्यास अत्यन्त सान्निध्य होने के कारण शरीर में अथवा शरीरी का सान्निध्यकारी कहा गया है। शरीर का त्याग कर देने वाला पुरुष मुनि के समान दिन यापन करता है। शैवागम के विद्वानों ने इस क्षेत्र देश को एक योजन पर्यन्त बताया है।

ध्यान :

"मैं शुद्ध स्फटिक रत्न के समान कान्तिवाले, चन्द्रमा रूपी मुकुट वाले, तीन नेत्रों तथा पाँच मुखों वाले; मुक्ताफल; स्वर्ण, मेघ, कुन्द पुष्प से

सुशोभित; सिन्दूर वर्ण से युक्त; अग्नि, वज्र कृपाण, टंक से विलसित; शूल, सर्प, घण्ट, अंकुश, पाश धारण करने वाले; भय दूर करने वाले महेश की दोनों भुजाओं से अहर्निश भजन करता हूँ।''

पूजन विधि :

इस प्रकार शरीर में न्यास करके तदनन्तर पीठ न्यास करना चाहिए। पीठ शक्ति का तनु में न्यास करके तदनन्तर पीठ न्यास करना चाहिए। तदनन्तर सुन्दर शरीरवाले महादेव का ध्यान करके उनकी मुद्राएं प्रदर्शित करके; तत्पश्चात् मन से विभु की पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात् विधि के अनुसार ब्रह्मपूजन के लिए अर्घ की स्थापना करनी चाहिए। गुरु के द्वारा बताये गये विधि से पुनः महेश्वर का ध्यान करके, तदनन्तर पीठ की पूजा करके उसमें विद्यमान शक्तियों की पूजा करनी चाहिए। उसके मन्त्र से बीच में विभु के आसन का पूजन करना चाहिए। तत्पश्चात् कल्पित मूर्त्ति में शिव के मूल मन्त्र के द्वारा आवाहन करना चाहिए। सुधी भक्त आवाहन आदि के द्वारा तथा तन्तु, पुष्प, अन्न उपचार के द्वारा पूजन करके, वेद वाक्य (मन्त्र) से युक्त होकर न्यास करे। इस प्रकार न्यास करने के पश्चात् पाँच के द्वारा ब्रह्म का तथा तीन के द्वारा शिव का आवाहन करना चाहिए। तत्काल ही मध्य में दक्षिण दिशा के पहले, पश्चिम दिशा में पुनः अन्त और आदि अङ्गो के द्वारा दिशाओं के अंग में मार्जन करते हुए पुनः कुलिश (वज्र) आदि के द्वारा देव का यजन करना चाहिए।

उक्त सम्पूर्ण सुख, यश, भुक्ति और मुक्ति प्रदान करने वाला पंच ब्रह्म विधान कहा गया है। तदनन्तर धूपादि उपचार के द्वारा उनकी पूजा करनी चाहिए। जप करके, निवेदन करके तदनन्तर देव का विसर्जन करना चाहिए।

मातृका न्यास करने के बाद उपासनीय तत्त्व मन्त्र में षडङ्ग न्यास पूर्वक पहले कहे गये न्यास करने चाहिए। तदनन्तर विलक्षण व्यक्ति उस शैव मन्त्र के द्वारा न्यास करे। तत्पश्चात् विधि के अनुसार कल्पोक्त मार्ग से उस शिव की पूजा करें।

अर्घ्य पात्र स्थापन विधि :

अब अर्घ्य पात्र की स्थापना की विधि कहते हैं।

यथा :

अपने बाएँ भाग में त्रिकोण, षट्कोण, चतुरस्र वृत्त रूप यन्त्र बनाकर, शंख मुद्रा का प्रदर्शन कर, षडङ्ग मन्त्रों के द्वारा सम्यक् प्रकार से पूजन कर, **फट्** से प्रक्षालन करें। तत्पश्चात् इस मूल मंत्र **ॐ मं बह्निमण्डलाय दशकलात्मने अघोरार्धपात्रासनाय नमः** से पात्र की स्थापना करें।

तत्पश्चात् गन्ध और अक्षत से अर्चना करें –

ॐ मं धूम्रर्च्ये नमः। ॐ यं कूष्माण्डायै नमः। ॐ रं ज्वलिन्यै नमः। ॐ लं ज्वालिन्यै नमः। ॐ वं विस्फुलिंगिन्यै नमः। ॐ शं सुश्रियै नमः। ॐ षं सुरूपायै नमः। ॐ सं कपिलायै नमः। ॐ हं हव्यवाहायै नमः। ॐ हं कव्यवाहायै नमः।

तत्पश्चात् पात्र को धोकर आसन के ऊपर स्थापित करें और अर्चना करें –

ॐ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने अघोरार्घपात्राय नमः।

कं तपिन्यै नमः। खं तापिन्यै नमः। गं धूम्रायै नमः।

घं मरीच्यै नमः। ङं. ज्वालिन्यै नमः। चं रुच्यै नमः।

छं सुषुम्णायै नमः। जं भोगदायै नमः। झं विश्वायै नमः।

ञं बोधिन्यै नमः। टं धारिण्यै नमः। ठं क्षमायै नमः।

इस प्रकार पात्र के मध्य में कला की पूजा की जानी चाहिए।

तत्पश्चात् मूल मन्त्र जपकर, जल से भरकर अर्चना करे –

ॐचन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने अघोरार्घपात्राय नमः।

अं अमृतायै नमः। आं मानदायै नमः। इं रुषायै नमः। ईं तुष्ट्यै नमः। उं पुष्ट्ये नमः। ऊं रत्यै नमः। ऋं धृत्यै नमः। ॠं शशिन्यै नमः। ऌं चन्द्रिकायै नमः। ॡं कान्त्यै नमः। एं ज्योत्स्नायै नमः। ऐं श्रियै नमः। ओं प्रीत्यै नमः। औं अंगदायै नमः। अं पूर्णायै नमः। अः पूर्णामृतायै नमः।

ये जल के मध्य में पूजनीय होते हैं। तत्पश्चात् अंकुश और मुद्रा के द्वारा **गंगे च यमुने चैव** जपकर तीर्थों के जल से मूल मन्त्र के द्वारा आठ बार अभिमंत्रित करके, पूजन करके तत्पश्चात् **नमः** से गन्ध आदि के द्वारा पूजन करके मत्स्य मुद्रा के द्वारा पुनः आठ बार अभिमन्त्रित करके **फट्** इस चुटकी के द्वारा रक्षा करके **हूं** इससे घेरकर **चन्द्र** से अमृत बनाकर शंख, चक्र, मुसल और योनि मुद्रा प्रदर्शित करनी चाहिए। तत्पश्चात् पात्र से जल लेकर उस जल से निम्न मन्त्र के द्वारा अपने को यज्ञ की वस्तुओं को प्रोक्षण करना चाहिए।

ॐ परमात्मामृतरूपेण अघोरचन्द्रमण्डलनिवासाय चन्द्रामृतेन पूरय पूरय द्रव्यमिदं कुरु कुरु ॐ हौं स्वाहा।।

इति मन्त्रः

उक्त मन्त्र से सब पर जल का छींटा मारना चाहिए, अपने को पूजकर सिर, हृदय, आधार एवं समस्त अंगों में पुष्प चढ़ाकर अपने को तन्मय भावना करके मूलाधार के द्वारा कुण्डलिनी से संगत ललाट वंश की अमृतता से तर्पण करके पीठ की पूजा करनी चाहिए –

पीठोत्तरे गुरुभ्यो नमः। परम गुरुभ्यो नमः। परापर गुरुभ्यो नमः। परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः। उत्तरे गणेशाय नमः। मण्डुकाय नमः। कालाग्निरुद्राय नमः। मूलप्रकृत्यै नमः। आधारशक्त्यै नमः।

कूर्माय नमः। वाराहाय नमः। पृथिव्यै नमः। उपर्य्युपरि सम्पूज्य तन्मध्ये सुधार्णवायं नमः। तन्मध्ये नवरत्नविराजितनवखण्डमयश्वेतद्वीपाय नमः।

तत्रेशानादिष्ठाष्टसु प्रादक्षिण्येन मध्ये च

..... पुष्परागरत्नखण्डाय नमः	-	ईशाने
नीलरत्नखण्डाय नमः	-	पूर्वे
वैदूर्यरत्नखण्डाय नमः	-	आग्रेय्याम्
विद्रुमरत्नखण्डाय नमः	-	दक्षिणे
मौक्तिकरत्नखण्डाय नमः	-	नैनृते
मरकतरत्नखण्डाय नमः	-	उत्तरे

एतन्मध्येपद्मराग रत्नखण्डाय नमः - तन्मध्ये

सुवर्णपर्वताय नमः - तदुपरि

नन्दनोद्यानाय नमः - तन्मध्ये

कल्पवनाय नमः - तन्मध्ये

पद्मवनाय नमः - तन्मध्ये

चित्ररत्नखचित भूमिकायै नमः - तन्मध्ये

सहस्त्रस्तम्भान्वितमध्य स्तम्भ विवर्जित

..... चतुपञ्चाशद्योजन विस्तीर्ण

.... नानारत्नखचितचिन्तामणिमण्डपाय नमः - तन्मध्ये।

नवरत्नखचितरत्नमयवेदिकायै नमः - तदुपरिमध्ये

ॐ रत्नसिंहासनाय नमः तदुपरि उच्चैः श्वेतच्छत्रा नमः।

तत्पश्चात् पीठ के कल्पित अग्निकोण आदि दिशाओं में –

धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः। ऐश्वर्याय नमः।

कल्पित पूर्व आदि दिशाओं में –

अधर्माय नमः। अज्ञानाय नमः। अवैराग्याय नमः। अनैश्वर्याय नमः।

सिंहासन के मध्य में –

अं अनन्ताय नमः। पं भासमानाय नमः। आनन्दकन्दाय नमः। संविन्नालाय नमः। सहस्रदलकमलाय नमः। प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः विकृतिमयकेसरेभ्यो नमः। पञ्चाशद्ववर्ण वीजाढ्यसर्वतत्त्वरूपायै कर्णिकायै नमः।

कर्णिका के ऊपर –

अं अर्कमण्डलाय नमः। सं सोममण्डलाय नमः। रं ह्विमण्डलाय नमः। तं तमसे नमः। रं रजसे नमः। सं सत्त्वाय नमः। विद्यातत्त्वाय नमः। कला-तत्त्वाय नमः। परमात्मने नमः। मायातत्त्वाय नमः। परतत्त्वाय नमः। ॐ ह्रीं हौं नमः शिवाय। सर्वमन्त्रासनाय नमः।

अं आं इत्यादि क्षांत का उच्चारण करके–

शिव-शक्ति-सदा- शिवेश्वर- शुद्ध-विद्या-माया- कला-विद्या-राग -काल-नियति- पुरुष-प्रकृति- अहंकार- बुद्धि - मन-त्वक्-चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण -वाक्-पाणिपादं- पायू-उपस्थ-शब्द-स्पर्श- रूप - रस-गन्ध-आकाश-वायु-सलिल पृथिव्यात्मने श्री योगपीठाय नमः।

तत्पश्चात् आठ पत्ते में –

वामायै नमः। ज्येष्ठायै नमः। रौद्र्यै नमः। काल्यै नमः। कलविकरण्यै नमः। बलविकरण्यै नमः। बलप्रमथिन्यै नमः। सर्वभूतदमिन्यै नमः। ॐ नमो भगवते सकल गुणात्म शक्ति युक्ताय अनन्ताय योगपीठात्मने नमः।

इति पीठ मन्त्र

मूल मन्त्र के द्वारा संकल्प करके आवाहन करना चाहिए। मूलाधार सुषुम्ना के द्वारा हृदय में स्थित ज्योति को बाँयी नाक से बाहर निकालकर हाथ में विद्यमान पुष्प में स्थित ध्यान करके आवाहन करना चाहिए –

आत्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामहं परमेश्वर अरण्यामिव हव्यांशं मूर्त्तावाहयाम्यहम्।

उक्त मूल के द्वारा नव मुद्राएँ प्रदर्शित करके मन्त्र–न्यास और षडङ्ग करके, प्राण प्रतिष्ठा करके स्वागत सुस्वागत यह कहना चाहिए। **नमः** उस मूल मन्त्र के द्वारा पाद्यार्घ्य देना चाहिए। उसमें अक्षत, दूब, कमल और शिवाक्रान्ता डालकर तथा पाद्यार्घ्य करके मधुपर्क का आचमन करना चाहिए। तत्पश्चात् ध्यान करके अघोर देव के शरीर में मूल मन्त्र से पुट लगाते हुए मातृकाक्षर के द्वारा पूजन करके मातृक स्थलों में धूप, दीप, नैवेद्य अर्पित करके तीन पुष्पाञ्जलि देना चाहिए।

तत्पश्चात् मूल मंत्र से आवरण की पूजा करनी चाहिये–

ब्रह्माण्यै नमः। माहेश्वर्यै नमः। वैस्तव्यै नमः। वाराह्यै नमः। नारसिंह्यै नमः। इन्द्राण्यै नमः। चामुण्डायै नमः। लक्ष्म्यै नपः।

।। यह प्रथम आवरण है ।।

असिताङ्गभैरवाय नमः । रुद्र भैरवाय नमः ।

चण्डभैरवाय नमः । क्रोधभैरवाय नमः ।

उन्मत्तभैरवाय नमः । कपालभैरवाय नमः ।

भीषणभैरवाय नमः । संहारभैरवाय नमः ।

।। यह द्वितीय आवरण है।।

लं इन्द्राय नमः। रं अग्नये नमः। मं यमाय नमः।

खं नैऋत्यै नमः। वं वरुणाय नमः। यं वायव्यै नमः।

कं कुबेराय नमः। हं ईशानाय नमः। अं अनंताय नमः।

सं सोमाय नमः।

।। यह तृतीय आवरण है ।।

वज्रादि के द्वारा छः आवरणों को पूज करके नैवेद्य, तीन बार पुष्पाञ्जलि देकर, यथाशक्ति मूल मन्त्र जपकर, संहार मुद्रा के द्वारा विसर्जन करना चाहिए। शैव मुद्रा पञ्चमुष्टि, शारङ्ग लिंग, योनि पञ्चमुख हैं। शंखमुद्रा गुरु मुख में जानना चाहिये।

ईशान, तत्पुरुष, अघोर, वामदेव, सद्योजात, पञ्चब्रह्म, त्रिशक्ति, प्रतिष्ठा, विद्या सबकी शान्ति हो, अतीत की शान्ति हो।

यह श्री रुद्रयामलतन्त्र में अघोर सहस्र नामक कल्प में
'अघोर पूजा पद्धति' सम्पूर्ण रूप से समाप्त हुई।

अशुद्धमनसोगपंदीक्षाहीनेनमंत्रिणा
नदातव्यंनश्रोतव्यमित्याज्ञामामकीशृणु
दीक्षितोयदामंत्रीचित्ताशुद्धःपठेदिदं

अदीक्षितायशिष्यायप्रदायप्रारजन्मने २९
परंश्रीमहिमानंचशृणुचास्यस्तवर्मणः ३० अ
सदीक्षितइतिज्ञेयोमांत्रिकःसाधकोत्तमः ३१ यःप

अघोरकवचम्

PRINTED IN INDIA

अघोरकवचम्

अथ अघोरकवचं लिख्यते। श्री अघोरभैरवाय नमः।

भैरवी उवाच :

भगवन्करुणाम्भोधे[1] शास्त्राम्भोनिधि पारग[2]।
पुराऽस्माकं वरो दत्तः तं दातुं मे क्षमो भव।।१।।

भैरव उवाच :

सत्यं पुरा वरो दत्तो वरं वरय पार्वति।
यत्किञ्चिन्मनसीष्टं स्यात्तद् दातुं ते क्षमोऽस्म्यहम्।।२।।

देवी उवाच :

अघोरस्य महादेव कवचं देवदुर्लभम्।
शीघ्रं मे दयया ब्रूहि यद्यहं प्रेयसी[3] तव।।३।।

भैरव उवाच :

अघोरकवचं वक्ष्ये महामन्त्रमयं परम्।
रहस्यं परमं तत्त्वं न चाख्येयं दुरात्मने।।४।।

---

१. क - करणां
२ ख-पारग·
३. -क प्रियसे

अस्य श्री अघोरकवचस्य महाकाल भैरव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री कालाग्निरुद्रो देवता क्ष्मीं बीजं क्ष्मां शक्तिः क्ष्मः कीलकं श्री अघोर विद्यासिद्ध्यर्थं कवचपाठे विनियोगः।।

अथ मन्त्रः

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः।।

ॐ अघोरो मे शिवः पातु श्री मेऽघोरो ललाटकम्।
ह्रीं घोरो मेऽवतां नेत्रे क्लीं घोरो मेऽवताच्छती।।५।।

सौःतरेभ्योऽवताङ्गडौक्षी नासां पातु सर्वतः क्षं।
मुखं पातु मे शर्वोऽघोरः सर्वोऽवताङ्गलम्।।६।।

घोरश्च मेऽवतात्स्कन्धौ हस्तौ ज्वलन्नमोऽवतु।
ज्वलनः पातु मे वक्षः कुक्षिं प्रज्वलरुद्रकः।।७।।

पार्श्वौ प्रज्वलरूपेभ्यो नाभिं मेऽघोररूपभृत्।
शिश्नं मे शूलपाणिश्च गुह्यं रुद्रः सदावतु।।८।।

कटिं मेऽमृतमूर्त्तिश्च मेढ्रेऽव्यान्नीलकण्ठकः।
ऊरू चन्द्रजटः पातु, पातु मे त्रिपुरान्तकः।।९।।

जंघे त्रिलोचनः पातु गुल्फौ याज्ञियरूपवान्।
अघोरोऽङ्घ्री च मे पातु पादौ मेऽघोरभैरवः।।१०।।

पादादिमूर्धपर्यन्तमघोरात्मा शिवोऽवतु।
शिरसः पादपर्यन्तं पायान्मेऽघोरभैरवः।।११।।

प्रभाते भैरवः पातु मध्याह्ने वटुकोऽवतु।
संध्यायां च महाकालो निशायां कालभैरवः।। १२।।

अर्द्धरात्रे स्वयं घोरो निशान्तेऽमृतरूपधृत्।
पूर्वे मां पातु ऋग्वेदो यजुर्वेदः तु दक्षिणे।।१३।।

पश्चिमे सामवेदोऽव्यादुत्तरेऽथर्ववेदकः।
आग्नेय्यामग्निरव्यान्मां नैऋत्यां नित्यचेतनः।।१४।।

वायव्यां रौद्ररूपोऽव्यादैशान्यां कालशासनः।
ऊर्ध्वोऽव्यादूर्ध्वरेताश्च पाताले परमेश्वरः।।१५।।

दशदिक्षु सदापायाद् देवः कालाग्निरुद्रकः।
अग्नेर्मां पातु कालाग्निर्वायोर्मां वायुभक्षकः।।१६।।

जलादौर्वामुखः पातु पथि मां शंकरोऽवतु।
निषण्णं योगध्येयोऽव्याद्भच्छन्तं वायुरूपभृत्।।१७।।

गृहे शर्वः सदा पातु बहिः पायाद्वृषध्वजः।
सर्वत्र सर्वदा पातु मामघोरोऽथ घोरकः।।१८।।

रणे राजकुले दुर्गे दुर्भिक्षे शत्रुसंसदि।
द्यूते मारीभये राष्ट्रे प्रलये वादिनां कुले।।१९।।

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्योऽवतान्मां घोरभैरवः।
घोरघोरतरेभ्यो मां पायान्मन्मथसङ्गरे।।२०।।

सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो भोजनावसरेऽवतु।
नमस्ते रुद्ररूपेभ्योऽवतु मां घोरभैरवः।।२१।।

सर्वत्र सर्वदाकालं सर्वाङ्गं सर्वभीतिषु।
हं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षः अघोरकः।।२२।।

अघोरास्त्राय फट् पातु अघोरो मां सभैरवः।
विस्मारितं च यत्स्थानं स्थलं यन्नामवर्जितम्।।२३।।

तत्सर्वं क्ष्मामघोरोऽव्यान्मामथघोरः सभैरवः।
भार्यान्पुत्रान्सुहृद्वर्गान्कन्यां यद्वस्तु मामकम्।।२४।।

तत्सर्वं पातु मे नित्यं अघोरो क्ष्माथ घोरकः।
स्नाने स्तवे जपे पाठे होमेऽव्यात्क्षः अघोरकः।।२५।।

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः।।२६।।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सौः क्ष्मं पातु नित्यं मां श्री अघोरकः।
इति इदं कवचं गुह्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।।२७।।

मूलमन्त्रमयं दिव्यं त्रैलोक्ये सारमुत्तमम्।
अदातव्यमवाच्यं च कवचं गुह्यमीश्वरि।।२८।।

अप्रष्टव्यमस्तोतव्यं दीक्षाहीनेन मन्त्रिणा।
अदीक्षिताय शिष्याय पुत्राय शरजन्मने।।२९।।

न दातव्यं न श्रोतव्यमित्याज्ञां मामकीं शृणु।
परं श्रीमहिमानं च शृणु चास्य सुवर्मणः।।३०।।

अदीक्षितो यदा मन्त्री विद्यागृध्नुः पठेदिदं।
सदीक्षित इति ज्ञेयो मान्त्रिकः साधकोत्तमः ।।३१।।

यः पठेन्मनसा तस्य रात्रौ ब्राह्मे मुहूर्त्तके।
पूजाकाले निशीथे च तस्य हस्तेऽष्टसिद्धयः।।३२।।

दुःस्वप्ने बन्धने धीरे कान्तारे सागरे भये।
पठेत् कवचराजेन्द्रं मन्त्री विद्यानिधिं प्रिये।।३३।।

सर्वं तत्प्रशमं याति भयं कवचपाठनात्।
रजः-सत्त्व-तमोरूपमघोरकवचं पठेत्।।३४।।

वाञ्छितं मनसा यद्यत्तत्तत्प्राप्नोति साधकः।
कुंकुमेन लिखित्वा च भूर्जत्वचि रवौ शिवे।।३५।।

केवलेन सुभक्ष्ये च धारयेन्मूर्ध्नि वा भुजे।
यद्यदिष्टं भवेत् तत् साधको लभतेऽचिरात्।।३६।।

यद् गृहे अघोरकवचं वर्त्तते तस्य मन्दिरे।
विद्याकीर्त्ती र्धनारोग्यलक्ष्मीवृद्धिर्न संशयः।।३७।।

विना वलिं न संरक्ष्यं कवचं साधकोत्तमैः।
नो चेद्रक्षन्तु तान्दारानायुर्भक्षयति योगिनी।।३८।।

बलिं दत्त्वा पठेत् धर्मं धारयेन्मूर्ध्नि साधकः।
इह भोगान् समश्नाति परे मुक्तो भविष्यति।।३९।।

जपेच्चाघोरविद्यां यो विनानेनैव वर्मणा।
तस्य विद्याजपं हीनं तस्माद्धर्मं सदा पठेत्।।४०।।

अघोरमन्त्रविद्यापि जपन् स्तोत्रं तथा मनुम्।
सद्यः सिद्धिं समायाति अघोरस्य प्रसादतः।।४१।।

इति श्री देवदेवेशि अघोरकवचं स्मरेत्।
गोप्यं कवचराजेन्द्रं गोपनीयं स्वयोनिवत्।।४२।।

इति श्री रुद्रयामले तन्त्रेविश्वसारोद्धारे
तन्त्रेऽघोरसहस्त्रनामाख्ये कल्पे अघोरकवचं
।। समाप्तम्।।

अघोर कवच

।। श्री अघोर भैरवाय नमः।।

अब **अघोर कवच** लिखा जा रहा है –

भैरवी ने कहा :

हे करुणा के सागर ! हे शास्त्र रूपी समुद्र के पारङ्गत ! भगवन् ! पहले आपने हमें वर दिया था। अब उस वर को हमें प्रदान कीजिए।। १।।

भैरव ने कहा :

हे पार्वती ! यह सत्य है कि पहले मैंने वर दिया था। तुम्हारे मन में जो कुछ भी अभीष्ट है वह मैं तुम्हें प्रदान करने में समर्थ हूँ।। २।।

देवी ने कहा :

हे महादेव ! यदि मैं आपकी प्रेयसी हूँ तो दया करते हुए मुझसे शीघ्र ही देव दुर्लभ अघोर कवच कहिए।। ३।।

भैरव ने कहा :

मैं महामन्त्र से युक्त श्रेष्ठ अघोर कवच कहता हूँ। यह परम रहस्य तत्त्व है, पापी व्यक्ति से यह बताने योग्य नहीं हैं।। ४।।

इस अघोर कवच के महाकाल भैरव ऋषि हैं, अनुष्टुप् छन्द है, श्री कालाग्निरुद्र देवता हैं, **क्ष्मीं** बीज है, **क्ष्मां** शक्ति है, **क्ष्मः** कीलक है। श्री अघोर विद्या की सिद्धि के लिए कवच पाठ में इसका विनियोग होता है।

अथ मन्त्र

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः।।

ॐ अघोर शिव मेरी लक्ष्मी की रक्षा करें। अघोर मेरे ललाट की रक्षा करें। हां घोर मेरे दोनों नेत्रों की रक्षा करें। क्लीं घोर देव मेरे दोनों कानों की रक्षा करें।। ५।।

मेरे कपोलों की रक्षा करें। सब ओर से नासिका की रक्षा करें। शर्व अघोर मेरे मुख की रक्षा करें। शर्व देवता गले की रक्षा करें।। ६।।

घोर देव मेरे दोनों कन्धों की रक्षा करें। ज्वलन्नम देव मेरे दोनों हाथों की रक्षा करें। ज्वलन्नम देव मेरे वक्षस्थल की रक्षा करें। प्रज्जवल रुद्र देव मेरी कुक्षि की रक्षा करें। प्रज्ज्वल रूप देव मेरे दोनों पार्श्वों की रक्षा करें। घोररूप धारी देव मेरे नाभि की रक्षा करें। शूलपाणि मेरे शिश्न की रक्षा करें। रुद्र देवता मेरे गुह्य स्थान की सदा रक्षा करें।। ७, ८।।

अमृत मूर्ति मेरे कटि प्रदेश की रक्षा करें। नीलकण्ठ मेरे जाँघों की रक्षा करें। त्रिपुरान्तक मेरी रक्षा करें। त्रिलोचन देवता मेरे दोनों जन्घाओं की रक्षा करें। याज्ञिय रूपधारी हमारे दोनों घुटनों की रक्षा करें। अघोर देवता मेरे दोनों अन्घ्रि की रक्षा करें। अघोर भैरव मेरे दोनों पादों की रक्षा करें। अघोर आत्मा शिव पाद से लेकर मूर्द्धा तक रक्षा करें। अघोर भैरव मेरे शिर से लेकर पैर तक की रक्षा करें।। ६, १०, ११।।

प्रातःकाल भैरव रक्षा करें। मध्याह्न में वटुक रक्षा करें। सन्ध्या बेला में महाकाल रक्षा करें। रात्रि में कालभैरव रक्षा करें। अर्द्धरात्रि में स्वयं घोर रक्षा करें। निशान्त (उषा बेला) में अमृत रूपधारी रक्षा करें। ऋग्वेद पूर्व दिशा में मेरी रक्षा करें। यजुर्वेद दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा करें।। १२, १३।।

सामवेद पश्चिम दिशा में मेरी रक्षा करें। अथर्ववेद उत्तर दिशा में मेरी रक्षा करें। अग्नि देवता आग्नेय (कोण) में मेरी रक्षा करें। नित्य चेतन देवता नैऋत्य (कोण) में मेरी रक्षा करें। वायव्य (कोण) में रौद्र रूप मेरी रक्षा करें। ईशान (कोण) में कालशासन रक्षा करें। उर्ध्वरेतस् उर्ध्व दिशा में तथा परमेश्वर पाताल में मेरी रक्षा करें।। १४, १५।।

कालाग्निरुद्र देव दसों दिशाओं में सदा मेरी रक्षा करें। कालाग्नि देवता अग्नि से मेरी रक्षा करें। वायु भक्षक देवता वायु से मेरी रक्षा करें।। १६।।

और्वामुख देवता जल से हमारी रक्षा करें। मार्ग में शंकर मेरी रक्षा करें। योगध्येय बैठे हुए मेरी रक्षा करें। वायुरूपधारी देव चलते हुए मेरी रक्षा करें। शर्व देवता घर में सदैव रक्षा करें। वृषध्वज देवता बाहर सर्वत्र मेरी रक्षा करें। अघोर तथा घोर देव सब जगह सदैव मेरी रक्षा करें– युद्ध, राजकुल, दुर्ग, दुर्भिक्ष (अकाल), शत्रु सभा, द्यूत क्रीड़ा, महामारी, भय, राष्ट्र, प्रलय वेला, विपक्षियों के समूह में ।। १७, १८, १९।।

घोर भैरव अघोर तथा घोर से मेरी रक्षा करें। काम से युद्ध के समय घोर भैरव देवता घोर–घोरतर से मेरी रक्षा करें। घोर भैरव देवता भोजन के समय सब ओर से सर्व–सर्व से तथा रुद्र रूप से मेरी रक्षा करें। अघोर भैरव देवता समस्त भयों में सर्वत्र सदैव सर्वाङ्ग की रक्षा करें। **हं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षः अघोरकः**।। २०, २१, २२।।

'अघोरास्त्राय फट्' भैरव सहित अघोर मेरी रक्षा करें। जो स्थान भूल गया है और जिस स्थल (अङ्ग) का नाम लेना वर्जित है, उन सबकी भैरव सहित घोर एवं **क्ष्म्यां** अघोर रक्षा करें। पत्नी, पुत्र, मित्रवर्ग, कन्या इत्यादि जो भी वस्तु मेरी है, उन सबकी अघोर और **क्ष्मा** घोर नित्य रक्षा करें। स्नान, स्तवन, जप, पाठ, होम में **क्षः** अघोर रक्षा करें।। २३, २४, २५।।

अघोर, घोर, घोर–घोरतर, सर्वोत्तम, रुद्र रूप को सब ओर से नमस्कार। **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सौः क्ष्मं श्री** अघोर नित्य मेरी रक्षा करें। यह तीनों लोकों में दुर्लभ कवच गोपनीय है।। २६, २७।।

हे ईश्वरि ! तीनों लोकों का सारभूत उत्तम मूलमन्त्र से युक्त, दिव्य यह गोपनीय कवच किसी को नहीं देना चाहिए व किसी से नहीं कहना चाहिए।। २८।।

अदीक्षित शिष्य, पुत्र कार्त्तिकेय को यह कवच देने योग्य नहीं है और न ही सुनाने योग्य है। यह मेरी आज्ञा सुनिए।। २९।।

इस सुकवच के श्रेष्ठ श्री की महिमा सुनिए–यदि विद्या लोभी अदीक्षित मन्त्री इस कवच को पढ़े तो उस मान्त्रिक को उत्तम साधक एवं दीक्षित जानना चाहिए।। ३०, ३१।।

जो व्यक्ति रात्रि बेला, ब्रह्म मुहूर्त, पूजाकाल और अर्द्धरात्रि में इसका पाठ करता है, उसे अष्ट सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।। ३२।।

हे प्रिये ! जो मन्त्री दुःस्वप्न काल में, बन्धन के समय कठिन समय में, वन में, सागर में, भय के समय जो इस विद्या के निधिभूत कवचराज का पाठ करता है, कवच पाठ से उसके समस्त भयों की शान्ति हो जाती है। सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण रूप इस अघोर कवच को जो साधक पढ़ता है वह मन से जिस पदार्थ की इच्छा करता है, उन समस्त वस्तुओं को प्राप्त कर लेता है। भोजपत्र में, सूर्य और शिव में कुंकुम से लिखकर मूर्द्धा अथवा भुजा में धारण करने पर जो अभीष्ट होता है। उसे साधक शीघ्र प्राप्त करता है।। ३३, ३४, ३५, ३६,।।

जिस व्यक्ति के घर में उसके मन्दिर में अघोर कवच होता है उसकी विद्या, यश, सम्पत्ति, आरोग्य, लक्ष्मी वृद्धि में कोई संशय नहीं है।। ३७।।

उत्तम साधक को चाहिए कि वह बलि के बिना कवच का संरक्षण न करे। यदि ऐसा नहीं करता तो योगिनी उसके पुत्र और पत्नी तथा आयु को समाप्त कर देती है।। ३८।।

जो साधक बलि देकर धर्म का पाठ करे, शिरोधार्य करे वह इस लोक में समस्त भोगों का भोग करता है और परलोक में उसकी मुक्ति होगी।। ३९।।

जो व्यक्ति बिना इस कवच के अघोर विद्या का जप करता है, उसकी विद्या जपहीन कोटि की होती है। अतएव, कवच सदा धर्मपूर्वक पढ़ना चाहिए। अघोर मन्त्र विद्या तथा स्तोत्र का जप करने वाले को अघोर देव के प्रसाद से शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त होती है। हे देवेशि ! इस प्रकार अघोर कवच का स्मरण (पाठ) करना चाहिए। स्वयोनि की भाँति यह कवचराज गोपनीय है।। ४०, ४१, ४२।।

यह श्री रुद्रयामलतन्त्र में विश्वसारोद्धार तन्त्र में अघोरसहस्र नामक कल्प में अघोर कवच समाप्त हुआ।

घोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः
ायनमः ॐह्रींश्रींक्लींमहारुद्रोग्लौंग्लांअघोरभैरवः
लानकः कालिः श्मशानभैरवोभीमोभीतिहाभगवान्प्रभुः

सर्वेतःसर्वसर्वेभ्योनमस्तेरुद्ररूपेभ्यः इतिशूलं अथाघो
रमीकालाग्निकलानाथः कालःका
भागपदोऽमुंडहस्तश्चमुंडमाला

अघोरसहस्रनाम

अघोरसहस्रनाम

अथ अघोरसहस्रनाम लिख्यते -

ॐ श्रीं ही क्लीं सौः क्ष्मीं घोर घोराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल अघोरास्त्राय फट् स्वाहा।

। इति मूलम् ।

श्री भैरवी उवाच :

भगवन्सर्वधर्मज्ञ विश्वाभयवरप्रद।
सर्वेश सर्वशास्त्रज्ञ सर्वातीत सनातन।।१।।

त्वमेव परमं तत्त्वं त्वमेव परमं पदम्।
त्वत्तोऽप्यन्यं न पश्यामि सारं सारोत्तमोत्तमम्।।२।।

पुराऽस्माकं वरो दत्तो देवदानवसङ्गरे।
तदद्य कृपया शम्भो वरं नाथ प्रयच्छ मे।।३।।

श्री भैरव उवाच :

भैरवि प्रेयसि[१] त्वं मे सत्यं दत्तो वरो मया।
यदद्य मनसाभीष्टं तद्याचस्व ददाम्यहम्।।४।।

---

१. क - प्रीयसी

श्री देवी उवाच :

श्री शिवः परमात्मा च भैरवोऽघोरसंज्ञकः।
त्रिगुणात्मा महारुद्रस्त्रैलोक्योद्धरणक्षमः।।५।।

तस्य नाम सहस्रं मे वद शीघ्रं कृपानिधे।
वरमेतन्महादेव देहि सत्यं मदीप्सितम्।
अस्माद् वरं न याचेऽहं देहि चेदस्ति मे दया।।६।।

श्री भैरव उवाच :

शृणुष्वैकान्तभूदेशे सानौ कैलासभूभृतः।
देवदानवसंग्रामे यत्ते दत्तो वरो मया।
वरं तत्ते प्रयच्छामि चान्यद् वरय में वरम्।।७।।

श्री देवी उवाच :

अतः परं न याचेऽहं वरमन्यन्महेश्वर।
कृपया[२] करुणाम्भोधे वद शीघ्रं सुरार्चितः।।८।।

श्री भैरव उवाच :

तव भक्त्या ब्रवीम्यद्य अघोरस्य महात्मनः।
नाम्नां सहस्रं परमं त्रैलोक्योद्धरणक्षमम्।।९।।

नातः परतरा विद्या नातः परतरः स्तवः।
नातः परतरं स्तोत्रं सर्वस्वं मम पार्वति।।१०।।

अकारादि क्षकारान्ता विद्यानिधिमनुत्तमम्।
बीजमन्त्रमयं गोप्यं गोप्तव्यं पशुसंकटे।।११।।

---

२. ख - कृत्पया

ॐ अस्य श्री अघोरनामसहस्त्रस्य श्री महाकाल भैरव ऋषिः पंक्ति छन्दः अघोर मूर्त्तिः परमात्मा देवता ॐ बीजं ह्रीं शक्तिः कुरु कुरु कीलकं अघोर विद्यासिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।

अथ न्यासः

ह्रां अंगुष्ठभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ह्रः करतलपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि षडङ्गन्यासः। अपि च-ॐ नमो भगवते अघोराय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। रुद्रायामृतमूर्त्तये मां जीवय जीवय शिरसे स्वाहा। नीलकण्ठाय चन्द्रजटिने शिखायै वषट्। त्रिपुरान्तकाय कवचाय हुं त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममूर्त्तये नेत्राभ्यां वौषट्। रुद्रायाग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय हुं फट् स्वाहा। अस्त्राय फट्। इति हृदयादि षडङ्गन्यासः एवं करन्यासः। भू र्भुवः स्वरिति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम्

श्री चन्द्रमण्डलगताम्बुजपीतमध्ये देवं सुधास्त्रविणमिन्दुकलाधरं च।
शुद्धाक्षसूत्रकलशामृतपद्महस्तं देवं भजामि हृदये भुवनैकनाथम्।।

अपि च

महाकायं महोरस्कं महादंशं महाभुजम्।
सुधास्यं शशिमौलिं च ज्वालाकेशोर्ध्वबन्धनम्।।

किङ्किणीमालया युक्तं सर्वयज्ञोपवीतिनम्।
रक्ताम्बरधरं देवं रक्तमालाविभूषितम्।
पादकिंकिणीसंच्छन्नं नूपुरैरतिशोभितं।।

ध्यानमार्गस्थितं घोरं पङ्कजासनसंस्थितम्।
भजामि हृदये देवं देवं चाघोरभैरवम्।।
। इति ध्यानम्।

अथ मूलमन्त्रः

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः।।
। इति मूलम् ।

अथ अघोराय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महारुद्रो ग्लौं ग्लां अघोरभैरवः।
क्ष्मीं कालाग्नि कलानाथः कालः कालान्तकः कलिः।।

श्मशान भैरवो भीमो भीतिहा भगवान्प्रभुः।
भाग्यदो मुण्डहस्तश्च मुण्डमालाधरो महान्।।

उग्रउग्ररवोत्युग्र उग्रतेजाश्च रोगहा।
रोगदो भोगदो भोक्ता सत्यः शुद्धः सनातनः।।

चित्स्वरूपो महाकायो महादीप्तिर्मनोन्मनः।
मान्यो धन्यो यशस्कर्त्ता[3] हर्त्ता भर्त्ता महानिधिः।।

चिदानन्दश्चिदाकारश्चिदुल्लासश्चिदीश्वरः।
चिन्त्योऽचिन्त्योचिन्त्यरूपः स्वरूपो रूपविग्रही।।

भूतेभ्यो भूतिदो भूत्यं भूतात्मा भूतभावनः।
चिदानन्दः प्रकाशात्मा सनात्माबोधविग्रहः।।

हृद्बोधो बोधवान्बुद्धो बुद्धिदो बुद्धमण्डनः।
सत्यपूर्णः सत्यसन्धः सतीनाथः समाश्रयः।।

---

३. क - यशस्कर्त्राहर्त्राभर्त्रा

त्रैगुण्यो निर्गुणो गुण्योऽग्रणीर्गुणविवर्जितः।
सुभावः सुभवः स्तुत्यः स्तोता श्रोता विभाकरः।।

कालकालान्धकत्रास कर्त्ता हर्त्ता विभीषणः।
विरूपाक्षः सहस्राक्षो विश्वाक्षो विश्वतोमुखः।।

चराचरात्मा विश्वात्मा विश्वबोधो विनिग्रहः।
सुग्रहो विग्रही वीरो धीरो धीरभृतां वरः।।

शूरः शूली शूलहर्त्ता शङ्करो विश्वशङ्करः।
कंकाली कलिहा कामी हासहा कामवल्लभः।।

कान्तारवासी कान्तास्थः कान्ता हृदयधारणः।
काम्यः काम्यनिधिः कान्ताकमनीयः कलाधरः।।

कलेशः सकलेशच विकलः शकलान्तकः।
शान्तो भ्रान्तो महारूपी सुलभो दुर्लभाशयः।।

लभ्योऽनन्तो धनाधीनः सर्वगः सामगायनः।
सरोजनयनः साधु साधूनामभयप्रदः।।

सर्वस्तुत्यः सर्वगतिः सर्वातीतोऽप्यगोचरः।
गोप्ता गोप्ततरो गानतत्परः सत्यपरायणः।।

असह्यो महाशान्तो महामूर्त्तो महोरगः।
महतीरवसन्तुष्टो जगतीधरधारणः।।

भिक्षुः सर्वेष्टफलदो भयानकमुखः शिवः।
भर्गो भगीरथीनाथो भगमाला विभूषणः।।

जटाजूटी स्फुरत्तेजश्चण्डांशुश्चण्डविक्रमः।
दण्डी गणपतिर्गुण्यो गणनीयो गणाधिपः।।

कोमलाङ्गोऽपि क्रूरास्यो हास्यो मायापतिः सुधीः।
सुखदो दुःखहा दम्भो दुर्जयो विजयी जयः।।

जयो जयो ज्वलत्तेजो मन्दाग्निर्मदविग्रहः।
मानप्रदो विजयदो महाकालः सुरेश्वरः।।

अभयाङ्गो वराङ्गश्च शशाङ्ककृतशेखरः।
लेख्यो लिप्यो विलापी च प्रतापी प्रथमाधिपः।।

प्रख्यो दक्षो विमुक्तश्च रुक्षो दक्षमखान्तकः।
त्रिलोचनस्त्रिवर्गेण त्रिगुणी त्रितयीपतिः।।

त्रिपुरेशस्त्रिलोकेशस्त्रिनेत्रस्त्रिपुरान्तकः ।
त्र्यम्बकस्त्रिकगतिः स्वक्षो विशालाक्षो वटेश्वरः।।

वटुः पटुः परं पुण्यं पुण्यदो दम्भवर्जितः।
दम्भी विलम्भी विस्रंभी संरभी संग्रही सखा।।

विहारी चाररूपश्च हारी माणिक्यमण्डितः।
विद्येश्वरो विवादी च वादभेद्यो विभेदवान्।।

भयान्तको बलनिधिबलिकः स्वर्णविग्रहः।
महासीनो विशाखी च पृषट्की पृतनापतिः।।

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीः षष्टिभागो विशांपतिः।
प्रांशु शीतांशु र्मुकुटो निरंशः स्वांशविग्रहः।।

निश्चेतनो जगत्राता हरो हरिणसम्भृतः।
नागेन्द्रो नागत्वग्वासः श्मशानालय चारचारकः।।

विचारी सुमतिः शम्भुः सर्वः खर्वो रुचिविक्रमः।
ईशः शेषः शशी सूर्यः शुद्धसागर ईश्वरः।।

ईशानः परमेशानः[४] परापरगतिः परम्।
प्रमोदी विनयी वेद्यो विद्यारागी विलासवान्।।

स्वात्मा दयालुर्धनदो धनदार्चनतोषितः।
पुष्टिदस्तुष्टिदस्ताज्येष्ठः श्रेष्ठो विशारदः।।

चामीकरोच्चयगतः सर्वगः सर्वमण्डनः।
दिनेशः शर्वरीशश्च सन्मदोन्माददायकः।।

हायनो वत्सरो नेता गायनः पुष्पसायकः।
पुण्येश्वरो विमानस्थो विमान्यो विमनाविधुः।।

विधिः सिद्धिप्रदो दान्तो गाता गीर्वाणवन्दितः।
श्रान्तो वान्तो विवेकाक्षो दुष्टो भ्रष्टो निरष्टकः।।

चिन्मयो वाङ्मयो वायुः शून्यः शान्तिप्रदोऽनघः।
भारभृद् भूतभृद् गीतो भीमरूपो भयानकः।।

तच्चण्डदीप्तिश्चण्डाक्षो दलत्केशः स्खलद्रतिः।
अकारोऽथ निराकार इलेश ईश्वरः परः।।

उग्रमूर्त्तिरुत्सवेश ऊष्मांशु ऋणहा ऋणी।
कल्लिहस्तो महाशूरो लिङ्गमूर्तिर्लसदृशः।।

लीलज्योतिर्महारौद्रो रुद्र जनाशनः।
एणत्वगासनो धूर्त्तो धुलिरागानुलेपनः।।

ऐं वीजामृत पूर्णाङ्गः स्वर्णाङ्गः पुण्यवर्धनः।
ॐ कारोकाररूपश्च तत्सर्वो अङ्गनापतिः।।

---

४. क - परमोशानः

अः स्वरूपोमहाशान्तः स्वरवर्ण विभूषणः।
कामान्तकः कामदश्च कालीयात्मा विकल्पनः।।

कलात्मा कर्कशाङ्गश्च काराबन्धविमोक्षदः।
कालरूपः कामनिधिः केवलो जगतांपतिः।।

कुत्सितः कनकाद्रिस्थः कामीवासः कलोत्तमः।
कामी रामाप्रियः कुन्तः कवर्णाकृतिरात्मभूः।।

खलीनः खलता हन्ता खेटेश मुकुटाधरः।
खं खंगेशः खगधरः खेटः खेचरवल्लभः।।

खगान्तकः खगाक्षश्च खवर्णामृत मज्जनः।
गणेशो गुण मार्गे योगजराजेश्वरो गणः।।

अगुणः सगुणो ग्राम्यो ग्रीवालंकारमण्डितः।
गूढो गूढाशयो गुप्तो गणगन्धर्वसेवितः।।

घोरनादो घनश्यामो घूर्णात्मा घुर्घुराकृतिः।
घनवाहो घनेशानो घनवाहनपूजितः।।

घनः सर्वेश्वरो जेशो घवर्णत्रयमण्डनः।
चमत्कृतिश्चलात्मा च चलाचल स्वरूपकः।।

चारुवेशश्चारुमूर्त्तिश्चण्डिकेशश्चमूपतिः ।
चिन्त्योऽचिन्त्य गुणातीतश्चितारूपः चिताप्रियः।।

चितेशश्चेतनारूपश्चिताशांतापहारकः ।
छलभृच्छलकृच्छत्री द्दत्रिणाच्छलकरकः।।

छिन्नग्रीवः छिन्नशीर्षः छिन्नकेशः छिदारकः।
जेता जिष्णुरजिष्णुश्च जयात्मा जयमण्डलः।।

जन्महा जन्मदो जन्यो वृजनी जृंभनो जटी।
जडहा जडसेव्यश्च• जडात्मा जडवल्लभः।।

जयस्वरूपो जनको जलधि र्ज्वरसूदनः।
जलन्धरस्थो जनाध्यक्षो निराधिराधिरस्मयः।।

अनादि जगतीनाथो जयश्रीर्जयसागरः।
झंकारी झलिनीनाथः सप्ततिः सप्तसागरः।।

टंकारसंभवो टाणुः टवर्णामृतवल्लभः।
टंकहस्तो विटंकारो टीकारो टोपपर्वतः।।

ठकारी च त्रयः ठः ठः स्वरूपो ठकुरोबली।
डकारी डकृतिडम्ब डिम्बानाथो विडम्बनः।।

डिल्लीश्वरो हि डिल्लाभो डंकाराक्षर मण्डनः।
ढवर्णी ढुल्लियज्ञेशो ढंब[५] सूची निरन्तकः।।

णवर्णी शोणिनोवासो णरागी रागभूषणः।
ताम्रापस्तपनस्तापी तपस्वी तपसां निधिः।।

तपोमयस्तपोरूपस्तपसां फलदायकः।
तमीश्वरो महाताली तमीचरक्षयंकरः।।

तपोद्योतिस्तपोहीनो वितानी त्र्यम्यबकेश्वरः।
स्थलस्थः स्थावरः स्थाणुः स्थिरबुद्धिः स्थिरेन्द्रियः।।

स्थिरं कृती स्थिराप्रीतिः स्थितिदः स्थितिवांस्तथा।
दम्भी दमप्रियो दाता दानवो दानवान्यनी।।

---

५. क - डं

धर्माधर्मो धर्मगतिर्धनवान्धनवल्लभः।
धनुर्धरो धनुर्धन्यो धीरेशो धीमयो धृतिः।।

धकारान्तो धरापालो धरणीशो धराप्रियः।
धराधरो धरेशानो नारदो नारसोरसः।।

सरसो विरसो नागो नागयज्ञोपवीतवान्।
नुतिलभ्यो नुतीशानो नुतितुष्टो नुतीश्वरः।।

पीवराङ्ग पराकारः परमेशः परात्परः।
पारावारः परं पुण्यं परामूर्त्तिः परं पदम्।।

परोगम्यः परंतेजः परंरूपः परोपकृत्।
पृथ्वीपतिः पतिः पूतिः पूतात्मा पूतनायकः।।

पारगः पारदृश्वा च पवनः पवनात्मजः।
प्राणदो पानदः पान्थः समानव्यानदो वरं।।

उदानदः प्राणगतिः प्राणिनां प्राणहारकः।
पुंसां पटीयान्परमः परमं थानकः पविः।।

रविः पीताननः पीठं पाठी नाकृतिरात्मवान्।
पत्री पीतः पवित्रं च पाठनं पाठन प्रियः।।

पार्वतीशः पर्वतेशः पर्वेशः पर्वघातनः।
फणी फणिद ईशानः फुल्लहस्तः फणाकृतिः।।

फणिहारः फणिमूर्त्तिः फेनात्मा फणिवल्लभः।
बली बलिप्रियो बालो बालालापी बलन्धरः।।

बालको बलहस्तश्च बलिभुग्बालनाशनः।
बलिराज बलंकारी बाणहस्तोऽर्धवर्णभृत्।।

भद्री भद्रप्रदो भास्वान्भामयो भ्रमयोनयः।
भव्यो भावप्रियो भानुर्भानुमान्भीमनन्दकः।।

भूरिदो भूतनाथश्च भूतलं सुतलं तलं।
भयहा भावनाकर्त्ता भवहा भवघातकः।।

भवो विभवदो भीतो भूतभव्यो भवप्रियः।
भवानीशो भगेष्टश्च भगपूजनपोषणः।।

मकुरो मानदो मुक्तो मलिनो मलनाशनः।
म**ारहर्त्ता** महोधिश्च महस्वी महतीप्रियः।।

मीनकेतुर्महामारो महेष्वा मदनान्तकः।
मिथुनेशो महामोहो मल्लो मल्लान्तको मुनिः।।

मरीचि रुचिमान्योगी मञ्जुलेशोऽमराधिपः।
मर्दनः मोहमर्दी च मेधावी मेदिनीपतिः।।

महीपतिः सहस्त्रारे मुदितो मानवेश्वरः।
मौनी मौनप्रियो मासः पक्षी माधव इष्टवान्।।

मत्सरी मापतिर्मेषो मेषोपहारतोषितः।
माणिक्यमण्डितो मन्त्री मणिपूरनिवासकः।।

मन्दमुन्मदरूपश्च मेनकी प्रियदर्शनः।
महेशो मेघरूपश्च मकरामृतदर्शनः।।

यज्ज्वा यज्ञप्रियो यज्ञो यशस्वी यज्ञभुग्युवा।
योधप्रियो यमप्रियो यामीनाथो यो यमक्षयः।।

याज्ञिको यज्ञमानश्च यज्ञमूर्त्तिर्यशोधरः।
रवि सुनयनो रत्नरसिको रामशेखरः।।

लावण्यं लालसो लूतो लज्जालुर्ललनाप्रियः।
लम्बमूर्त्तिर्विलम्बी च लोलजिह्वो लुलुन्धरः।।

वसुदो वसुमान्वास्तुवाग्भवो वटुको वटुः।
वीटीप्रियो विटंकी च विटपी विहगाधिपः।।

विश्वमोदी विनयदो विश्वप्रीतो विनायकः।
विनान्तको विनांशको वैमानिक वरप्रदः।।

शम्भुः शशीपतिः शारसमदो वकुलप्रियः।
शीतलः शीतरूपश्च शावरी प्रणतो वशी।।

शीतालुः शिशिरः शैत्यः शीतरश्मिः सितांशुमान्।
शीलदः शीलवान् शाली शालीन शशिमण्डनः।।

शण्डः शण्टः शिपिविष्टः षवर्णोज्ज्वलरूपवान्।
सिद्धसेव्यः सितानाथः सिद्धिकः सिद्धिदायकः।।

साध्यो सुरालयः सौम्यः सिद्धिभूः सिद्धिभावनः।
सिद्धान्तवल्लभः स्मेरः सितवक्त्रः सभापतिः।।

सरोधीशः सरिन्नाथः सिताभश्चेतनासमः।
सत्यपः सत्यमूर्त्तिश्च सिन्धुराजः सदाशिवः।।

सदेशः सदनासूरिः सेव्यमानः सतांगतिः।
सतांभाव्यः सदानाथः सरस्वान्समदर्शनः।।

सुसन्तुष्टः सतीचेतः सत्यवादी सतीरतः।
सर्वाराध्यः सर्वपतिः समयी समयः स्वयं।।

स्वयम्भूः स्वयमात्मीयः स्वयम्भावः समात्मकः।
सुराध्यक्षः सुरपतिः सरोजासनसेवकः।।

सरोजाक्षनिषेव्यश्च सरोजदललोचनः।
सुमतिः कुमतिः स्तुत्यः सुरनायकनायकः।।

सुधाप्रियः सुधेशश्च सुधामूर्त्तिः सुधाकरः।
हीरको हीरवांश्चैव हेतु हाटकमण्डनः।।

हाटकेशो हठधरो[६] हरिद्रत्नविभूषणः।
हितकृद्धेतुभूतश्च हास्यदो हास्यवक्त्रकः।।

हारो हारप्रियो हारी हविष्मल्लोचनो हरिः।
हविष्मान्हविभुग्वाद्यो हव्यं हविर्भुजां वरः।।

हंसः परमहंसश्च हंसीनाथो हलायुधः।
हरिदश्वो हरिस्तुत्यो हेरम्बो लम्बितोदरः।।

क्षमापतिः[७] क्षमः क्षान्तः क्षुराधारोऽक्षिभीमकः।
क्षितिनाथः क्षणेष्टश्च क्षणवायुः क्षवः क्षतः।।

क्षीणश्च क्षणिकः क्षामः क्षवर्णामृतपीठकः।
अकारादि क्षकारान्ता विद्यामालाविभूषणः।।

स्वर व्यञ्जन भूषाढ्यो ह्रस्व दीर्घ विभूषणः।
ॐ क्ष्मूं महाभैरवेशी ॐ श्रीं भैरवपूर्वकः।।

ॐ ह्रीं वटुकभावेशो ॐ ह्रीं वटुकभैरवः।
ॐ क्लीं श्मशानवासी च ॐ ह्रीं श्मशानभैरवः।।

मैं भद्रकालिकानाथः क्लीं ॐ ह्रीं कालिकापतिः।
ऐं सौः क्लीं त्रिपुरेशानो ॐ ह्रीं ज्वालामुखीपतिः।।

---

६. क - हटधरो ७. क - क्षमः पतिः

ऐं क्लीं सः शारदानाथो ॐ ह्रीं मार्त्तण्डभैरवः।
ॐ ह्रीं सुमन्तुसेव्यश्च ॐ श्रीं ह्रीं मत्तभैरवः।।

ॐ श्रीं उन्मत्तचित्तश्च ॐ श्रीं उं उग्रभैरवः।
ॐ श्रीं कठोरदेशश्च ॐ श्रीं ह्रीं कठोरभैरवः।।

ॐ श्रीं कामान्धकध्वंसी ॐ श्रीं कामान्धभैरवः।
ॐ श्रीं अष्टस्वरश्चैव ॐ श्रीं अष्टकभैरवः।।

ॐ श्रीं ह्रीं अष्टमूर्तिश्च ॐ श्रीं चिन्मूर्त्तिभैरवः।
ॐ ह्रीं हाटकवर्णश्च ॐ ह्रीं हाटकभैरवः।।

ॐ श्रीं शशाङ्क वदनः ॐ श्रीं शीतलभैरवः।
ॐ श्री शिवारुतश्चैव ॐ श्रीं शारूकभैरवः।।

ॐ श्रीं अहंस्वरूपश्च ॐ ह्रीं श्री मुण्डभैरवः।
ॐ श्रीं मनोन्मनश्चैव ॐ श्रीं मंगलभैरवः।।

ॐ श्रीं बुद्धिमयश्चैव ॐ श्रीं भैंबुद्धभैरवः।
ॐ श्रीं ऐं क्लीं नागमूर्त्तिः ॐ श्रीं ह्रीं नागभैरवः।।

ॐ श्रीं क्लीं कूर्ममूर्तिश्च ॐ श्रीं कृकरभैरवः।
ॐ ह्रीं श्री देवदत्तश्च ॐ श्रीं क्लीं दत्तभैरवः।।

ॐ ह्रीं धनञ्जयश्चैव ॐ श्रीं धनिकभैरवः।
ॐ श्रीं ह्रीं रसरूपश्च ॐ श्रीं रसिकभैरवः।।

ॐ श्रीं स्पर्शरूपश्च ॐ श्रीं ह्रीं स्पर्शभैरवः।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं स्वरूपश्च ॐ श्रीं ह्रीं रूपभैरवः।।

ॐ श्रीं सत्त्वमयश्चैव ॐ श्रीं ह्रीं सत्त्वभैरवः।
ॐ श्रीं रजोगुणात्मा च ॐ श्रीं राजसभैरवः।।

ॐ श्रीं तमोमयश्चैव ॐ श्रीं तामसभैरवः।
ॐ श्रीं धर्ममयश्चैव ॐ ह्रीं वैधर्मभैरवः।।

ॐ श्रीं ह्रीं मध्यचैतन्यो ॐ श्रीं चैतन्यभैरवः।
ॐ श्रीं ह्रीं क्षितिमूर्तिश्च ॐ ह्रीं क्षात्रिकभैरवः।।

ॐ श्रीं ह्रीं जलमूर्तिश्च ॐ ह्रीं जलेन्द्रभैरवः।
ॐ श्रीं पवनमूर्तिश्च ॐ ह्रीं पीठकभैरवः।।

ॐ श्रीं हुताशमूर्तिश्च ॐ ह्रीं हालाखभैरवः।
ॐ श्रीं ह्रीं सोममूर्त्तिश्च ॐ श्रीं ह्रीं सौम्यभैरवः।।

ॐ श्रीं ह्रीं सूर्यमूर्त्तिश्च ॐ श्रीं सौरेन्द्रभैरवः।
ॐ जूं सः हंसरूपश्च हं सः जुं ॐ मृत्यञ्जयः।
ॐ चत्वारिंशदधिको ॐ श्रीं अघोरभैरवः।।

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः।।

भैरवेशोऽभयवरदाता देवजनप्रियः।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्म्युं देवी वै अघोरदर्शनः।।

ॐ श्रीं सौन्दर्यवान्देवो ॐ अघोर कृपानिधिः।
सहस्रनाम इति नाम्नां सहस्रं तु अघोरस्य जगत्प्रभुः।।

तव भक्त्या मयाख्यातं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।
अप्रकाश्यमदातव्यं गोप्तव्यं शरजन्मनः।।

बल्यं वलप्रदं स्तुत्यं स्तवनीयं स्तवोत्तमम्।
पठेद् वा पाठयेन्नित्यं ध्यायेच्चेतसि नित्यशः।।

अद्रष्टव्यमदीक्षाय गोप्तव्यं पशुसंकटे।
नातः परतरं किंचित्सर्वस्वं नास्ति मे हृदि।।

पुण्यदं पुण्यमात्मीयं सकलं निष्कलं परम्।
पठेन्मन्त्री निशीथे[८] तु नग्नः श्रीमुक्त कुन्तलः।।

अनन्तं चित्सुधाकारं देवानामपि[९] दुर्लभम्।
शक्त्या युक्तो जपेन्नाम्नां सहस्रं भक्तिपूर्वकम्।।

तत्क्षणात्साधकः सत्यं जीवन्मुक्तो भविष्यति।
भौमेऽर्क शनिवारे तु श्मशाने साधकः पठेत्।।

सद्यस्तस्य स्वयं देवो वरदस्तु भविष्यति।
दशावर्त्तं पठेद्रात्रौ नदीतीरेषु धैर्यवान्।।

तस्य हस्ते सदा सन्ति त्र्यम्बकस्याष्टसिद्धयः।
मध्याह्ने शिवरात्रौ च निशीथे विविधे पठेत्।।

इन्द्रादयः सुरगणा वशमेष्यन्ति नान्यथा।
गुरौ ब्राह्मे मुहूर्त्ते तु पठेत् भक्त्या च साधकः।।

यावदिन्द्रः सभामध्ये तदग्रे मूकवत् भवेत्।
शुक्रे नद्या जले मन्त्री पठेन्नाम्नां सहस्रकम्।।

तदाप्रभृति त्रैलोक्यं मोहमेष्यति नान्यथा।
भौमे वनान्तरे मन्त्री पठेत्संध्यानिधौ तदा।।

शत्रु कालसमानोऽपि मृत्युमेष्यति नान्यथा।
त्रिसन्ध्योदयकाले तु पठेत्साधकसत्तमः।।

---

८. क - निषीथे
९. क - देवलामपि

रंभाद्यप्सरसः सर्वा वशमायान्ति तत्क्षणात्।
भौमे मध्याह्नसमये पठेच्च कूपसन्निधौ।।

सद्यो देवि महान्तं कारिपुमुच्चाटयेद् ध्रुवं।
सद्यस्त्रिवारं पठेन्नाम्नां सहस्रमुत्तमम्।।

इहलोके भवेद् भोगी परे मुक्तिर्भविष्यति।
अर्कवारे समालिख्य भूर्ज[१०] त्वचि च साधकः।।

कुंकुमालक्त कस्तूरी गोरोचन मनः शिलाः।
सर्वाद्यैर्वसुभिर्मन्त्री वेष्टयेत्ताम्ररज्जुना।।

धारयेन्मूर्त्तिं सद्यस्तु लभेत्कामान्यथेप्सितान्।
पुत्रान्दारांश्च लक्ष्मीं च यशो धर्मं धनानि च।।

लभते नात्र संशयः सत्यमेतद् वचो मम।
विनानेन महादेवि पठेद्यः कवचं शुभम्।।

तस्य जीवं धनं पुत्रान्[११] दारान्भक्षन्ति राक्षसाः।
विनानेन जपेत् विद्यामघोरस्य च साधकः।।

तस्य कोटि जपं व्यर्थं सत्यमेतद्वचो मम।
बहुनात्र[१२] किमुक्तेन सहस्राख्यं स्तवोत्तमम्।।

यद्गृहे वा जपेद्यस्तु श्रावयेद्वा शृणोति यः।
स स्वयं नीलकण्ठोऽहं तत्कलत्रं महेश्वरी।।

इदं रहस्यं परमं भक्त्या तव मयोदितम्।
अत्यन्त दुर्लभं नाके तथात्यन्तं महीतले।।

---

१०. क - भूर्च
११. क - पुत्राशसन्भक्षंति
१२. क - बहुना च विमुक्तेन

भूमौ च दुर्लभं देवि गोपनीयं दुरात्मनः।
अघोरस्य महादेवि तत्त्वं परम तत्त्वकम्।।

अतीव मधुरं हृद्यं[१३] परापर रहस्यकम्।
विना बलिं विना पूज्यं न रक्ष्यं साधकोत्तमः।।

पठनीयं दिवारात्रौ सिद्धयोऽष्टौ भवन्ति हि।
इदं रहस्यं परमं रहस्यातिरहस्यकम्।।

अप्रकाश्यमदातव्यमवक्तव्यं दुरात्मने।
यथेष्ट फलदं सद्यः कलौ शीघ्रं फलप्रदम्।।

गोप्यं गुप्ततरं गूढं गुप्तं पुत्राय पार्वति।
गोपनीयं सदागोप्यं गोप्तव्यं च स्वयोनिवत्।।

इति श्री रुद्रयामले तन्त्रे भैरव-भैरवी संवादे
अघोर सहस्रनाम स्तवः सम्पूर्णः।।

---

१३. क - हृद्ये

अघोर सहस्रनाम

अब **अघोर सहस्रनाम** लिखते हैं –

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सौः क्ष्मीं घोर घोराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल अघोरास्त्राय फट् स्वाहा।।

। यह मूल मन्त्र है।

श्री भैरवी ने कहा :

हे भगवन् ! सर्व धर्मज्ञ ! विश्व को अभय वर प्रदान करने वाले ! सर्वेश! समस्त शास्त्रों के ज्ञाता ! सर्वातीत ! सनातन ! आप ही परम तत्त्व हैं। आप ही परम पद हैं। मैं आप से भिन्न अन्य किसी को इस संसार का सारभूत उत्तम तत्त्व नहीं देखती हूँ।। १, २।।

हे शम्भु ! देवताओं और दानवों के युद्ध में आपने पहले हमें वर देने को कहा था। हे नाथ ! वह वरदान कृपापूर्वक मुझे आज दीजिए।। ३।।

श्री भैरव ने कहा :

हे भैरवी ! हे प्रेयसी ! यह सत्य है कि मैंने तुम्हें वरदान दिया था। इस समय तुम्हारी जो मनोकामना है उसे माँगो। मैं तुम्हें वह देता हूँ।। ४।।

श्री देवी ने कहा :

श्री शिव परमात्मा अघोर भैरव त्रिगुण स्वरूप महारुद्र तीनों लोकों का उद्धार करने में समर्थ हैं। हे कृपानिधि ! उनके हजार नाम मुझे शीघ्र बताइए।। ५।।

हे महादेव ! मेरा यह अभीष्ट वर निश्चित रूप से दीजिए। इससे भिन्न वर मैं नहीं माँगती। यदि मेरे ऊपर आप दयालु हैं तो मुझे वरदान दीजिए।। ६।।

श्री भैरव ने कहा :

कैलास पर्वत की इस चोटी पर इस एकान्त भू–भाग में तुम सुनो। देवताओं और दानवों के संग्राम के समय जो वरदान मैंने दिया था, वह वरदान मैं तुम्हे देता हूँ। किन्तु तुम मुझसे सहस्रनाम से भिन्न दूसरा वर माँगो।। ७, ८।।

श्री देवी ने कहा :

हे महेश्वर ! इसके अतिरिक्त मैं कोई और वरदान नहीं माँगती। हे करुणा के सागर ! देवताओं के द्वारा पूजित ! कृपया मुझे शीघ्र सहस्रनाम बताइए।। ९।।

श्री भैरव ने कहा :

तुम्हारी भक्ति के कारण मैं अब अघोर महात्मा के श्रेष्ठ नाम सहस्र को कहता हूँ। जो तीनो लोकों का उद्धार करने में समर्थ है।। १०।।

हे पार्वती ! इससे बढ़कर कोई विद्या नहीं है, इससे बढ़कर कोई स्तुति नहीं है, इससे बढ़कर कोई स्तोत्र नहीं हैं। यह मेरा सर्वस्व है।। ११।।

"अ" से लेकर "क्ष" पर्यन्त बीजमन्त्र रूप यह सर्वोत्तम विद्यानिधि गोपनीय है।

ॐ इस श्री अघोर नाम सहस्र के श्री महाकाल भैरव ऋषि हैं, पंक्ति छन्द है, अघोर मूर्ति परमात्मा देवता हैं। **ऊँ बीजं ह्रीं शक्तिः कुरु कुरु कीलकम्** – यह अघोर विद्या की सिद्धि के लिए जप पाठ में विनियोग है।

न्यासः

हां अंगुष्ठाभ्यां नमः।	**ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।**
हूं मध्यमाभ्यां नमः।	**हैं अनामिकाभ्यां नमः।**
हौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	**हः करतलपृष्ठाभ्यां नमः।**

इसी प्रकार 'हृदय' आदि षडङ्ग न्यास भी करें।

ॐ नमो भगवते अघोराय शूलपाणये स्वाहा। हृदयाय नमः।

रुद्रायामृतमूर्त्तये मां जीवय जीवय शिरसे स्वाहा। नीलकण्ठाय चन्द्रजटिने शिखायै वषट्। त्रिपुरान्तकाय कवचाय हुं। त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममूर्त्तये नेत्राभ्यां वौषट्।

रुद्रायाग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय हुं फट्। स्वाहा। अस्त्राय फट्।

यह हृदय आदि छः अङ्गो का न्यास एवं करन्यास है। **भूः भुवः स्वः** इससे दिग्बन्धन करें।

ध्यान :

मनोहर चन्द्र के समान कमल पीठ पर विराजमान मुद्रा, अक्षमाला, अमृतकलश और कमल पुष्प हाथों में लिए, चन्द्रकला धारण किये, अमृत बरसाने वाले समस्त भुवनों के एकमात्र स्वामी अघोर देव का हृदय में ध्यान करते हैं।

और भी (अपि च) :

विशाल शरीर वाले, विशाल वक्षस्थल वाले, विशाल दाँतो वाले, विशाल भुजा वाले, अमृत से युक्त मुख वाले, चन्द्रमा से युक्त सिर वाले, ज्वाला से केश को ऊपर बाँधने वाले, करधनी एवं माला से युक्त, सर्वयज्ञोपवीत धारण करने वाले, लाल वस्त्रधारी, लाल माला से सुशोभित, पाद किङ्किणी से युक्त, नूपरों से अत्यन्त शोभित, ध्यानमार्ग स्थित, कमलासन पर विराजमान घोर देव एवं अघोर भैरव का मैं हृदय में भजन करते हुए ध्यान करता हूँ।

मूलमन्त्र :

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः।।

। यह मूलमन्त्र है ।

अथ अघोराय नमः

ॐ ह्रीं, श्रीं, क्लीं, महारुद्रौ, ग्लौं, ग्लां, अघोर भैरव, क्ष्मीं, कालाग्नि, कलानाथ, काल, कालान्तक, कलि, श्मशान, भैरव, भीम, भीतिहा, भगवान, प्रभु, भाग्यद, मुण्डहस्त, चमुण्डमालाधर, महान, उग्र उग्ररव, अत्युग्र उग्रतेज, रोगहा, रोगद, भोगद, भोक्ता, शक्य, शुद्ध, सनातन, चित् स्वरूप, महाकाय, महादीप्ति, मनोन्मन, मान्य, धन्य, यशस्कर्त्ता, हर्त्ता, भर्त्ता, महानिधि, चिदानन्द, चिदाकार, चिदुल्लास, चिदीश्वर, चिन्त्य, अचिन्त्य, अचिन्त्यरूप, स्वरूप, रूप विग्रही, भूतिद, भूतात्मा, भूतभावन, चिदानन्द, प्रकाशात्मा, सनात्माबोध, विग्रह, हृदबोध, बोधवान, बुद्ध, बुद्धिद, बुद्धमण्डन, सत्यपूर्ण, सत्यसन्ध, सतीनाथ, समाश्रय, त्रैगुण्य, निर्गुण, गुण्योग्रणी, गुणविवर्जित, सुभाव, सुभव, स्तुत्य, स्तोता, श्रोता, विभाकर, काल, कालान्धक, त्रास, कर्त्ताहर्त्ता, विभीषण, विरूपाक्ष, सहस्राक्ष, विश्वाक्ष, विनिग्रह, सुग्रह, विग्रही, वीर, धीर, धीरभृताम्वर (धीरवर), शूर, शूली, शूल, हर्त्ता, शङ्कर, विश्वशङ्कर, कङ्काली, कलिहा, कामी, हासहा, कामवल्लभ, कान्तारवासी, कान्तास्य, कान्ता, हृदय धारण, काम्य, काम्यनिधि, कान्ताकमनीय, कलाधर, कलेश, सकलेश, विकल, शकलान्तक, शान्त, भ्रान्त, महारूपी, सुलभ दुर्लभाशय, लभ्य, अनन्त, अधनाधीन, सर्वग, सामगायन, सरोजनयन, साधु, साधूनामभयप्रद, सर्वस्तुत्य, सर्वगति, सर्वातीत, अगोचर, गोप्ता, अगोप्ततर, गानतत्पर, सत्यपरायण, असह्य, महाशान्त, महामूर्त्त, महोरग, महतीरव सन्तुष्ट, जगतीधर धारण, भिक्षु, सर्वेष्ट फलदो, भयानक मुख, शिव, भर्ग, भगीरथी नाथ, भगमाला विभूषण, जटाजूटी, स्फुरत्तेज, चण्डाशु, चण्ड विक्रम, दण्डी, गणपति, गुण्य, गणनीय, गणाधिप, कोमलाङ्ग, क्रूरास्य, हास्य, मायापति, सुधी, सुखद, दुःखहा, दम्भी, दुर्जय, विजयी-जय, जय, अजय, ज्वलतेज, मन्दाग्नि, मन्द विग्रह, मानप्रद, विजयद, महाकाल, सुरेश्वर, अभयाङ्क,वराङ्क, शशाङ्क, कृत शेखर, लेख्य, लिप्य, विलापी, प्रतापी, प्रथमाधिप, प्रख्य, दक्ष्य, विमुक्त, रुक्ष, दक्ष, मखान्तक, त्रिलोचन, त्रिवर्ग, त्रिगुणी, त्रितयीपति, त्रिपुरेश, त्रिलोकेश, त्रिनेत्र, त्रिपुरान्तक, त्र्यम्बक, स्वच्छ, विशालाक्ष, वटेश्वर, वटु, पटु, पुण्यद, दम्भवर्जित, दम्भी, विलम्भी, विस्रम्भी, संरभी, संग्रही, सखा, विहारी, चाररूपहारी, माणिक्य, मण्डित, विद्येश्वर, विवादी, वाद भेद्य, विभेदवान्, भयान्तक, बलनिधि, बालक, स्वर्णविग्रह, महासीन,

विशाखी, पृषट्की, पृतनापति, अनन्त रूप, अनन्त श्री, षष्टिभाग, विशांपति, प्रांशु, शीतांशु, मुकुट, निरंश, स्वांश विग्रह, निश्चेतन, जगत्राता, हर, हरिण सम्भृत, नागेन्द्र, नाग त्वग्वास, श्मशानालय चार चारण, विचारी, सुमति, शम्भु, सर्व, खर्व, रुचि, विक्रम, ईश, शेष, शशि, सूर्य, शुद्ध, सागर, ईश्वर, ईशान्, परमेशान्, परापरगति, परम, प्रमोदी, विनयी, वेद्य, विद्यारागी, विलासवान, स्वात्मा, दयालु, धनद, धनदार्चन तोषित, पुष्टिद, तुष्टिद, तात, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, विशारद, चामीकरोच्चयगत, सर्वग, सर्वमण्डन, दिनेश, शर्वरीश, सन्मदोन्माददायक, हायन, वत्सर, नेता, गायन, पुष्पसायक, पुण्येश्वर, विमानस्थ, विमान्य, विमनाविधु, विधि, सिद्धिप्रद, दान्त, गाता, गीर्वाण वन्दित, श्रान्त, वान्त, विवेकाक्ष, अदुष्ट, अभ्रष्ट, निरष्टक, चिन्मय, वाङ्मय, वायु, शून्य, शान्तिप्रद, अनघ, भारभृद, भूतवृध, गीत, भीमरूप, भयानक, चण्डदीप्ति, चण्डाक्ष, दलत्केश, स्खलदगति, अकार, निराकार, ईलेश, ईश्वर, उग्रमूर्त्ति, उत्सवेश, उष्मान्शु, ऋणहा, ऋणी, कल्लिहस्त, महाशूर, लिङ्गमूर्त्ति, लसदृश, लील ज्योति, महारौद्र, रुद्र, जनाशन, एणत्वगासन, धूर्त, धूलिरागानुलेपन, ऐं बीजामृत, पूर्णाङ्ग, स्वर्णाङ्ग, पुण्यवर्द्धन, ओंकार, अकाररूप, अङ्गनापति, अस्वरूप, महाशान्त, स्वरवर्ण, विभूषण, कामान्तक, कामद, कालीयात्मा, विकल्पन, कलात्मा, कर्कशाङ्ग, काराबन्ध, विमोक्षद, कालरूप, कामनिधि, केवल जगत्पति, उत्सित् कनकाद्रिश्थ, कामीवास, कलोत्तम, कामीरामाप्रिय, कुन्त, कवर्णाकृति, आत्मभू:, खलीन, खलहाहन्ता, खृटेश, मुकुटाधर, खं, खगेश, खगधर, खेट, खेचर वल्लभ, खगान्तक, खगाक्ष, खवर्णामृतमज्जन, गणेश, अगुण, सगुण, ग्राम्य, ग्रीवालंकार मण्डित, गूढ़, गूढ़ाशय, गुप्त, गणगन्धर्व सेवित, घोरनाद, घनश्याम, घूर्णात्मा, घुर्घुराकृति, घनवाह, घनेशान, घनवाहन पूजित, घन, सर्वेश्वर, घवर्णत्रय मण्डन, चमत्कृति, चलात्मा, चलाचल स्वरूप, चारुवेश, चारुमूर्ति, चण्डिकेश, चमूपति, चिन्त्य, अचिन्त्य, गुणातीत, चितारूप, चिताप्रिय, चितेश, चेतनारूप, चिताशान्तापहारक, छलभृत, छलकृत, छत्रिय, छलकारक, छिन्नग्रीव, छिन्नशीर्ष, छिन्नकेश, छिदारक, जिष्णु, अजिष्णु, जयात्मा, जयमण्डल, जन्महा, जन्मद, जन्य, जृम्भन, जटी, जडहा, जडसेव्य, जडात्मा, जडवल्लभ, जयस्वरूप, जनक, जलधि, ज्वरसूदन, जलन्धरस्थ, जनाध्यक्ष, अनादि, जगतीनाथ, जयश्री, जयसागर, झङ्कारी, झलिनीनाथ, टङ्कारसम्भव, टाणु,

टवर्णामृतवल्लभ, टङ्कहस्त, विटङ्कार, टीकार, टोप पर्वत, ठकारी, ठः स्वरूप, ठकुरोबलि, डकारी, डकृति, डम्बी, डिम्बा नाथ, विडम्बन, डिल्लीश्वर, डिल्लाभ, डङ्काराक्षरमण्डन, ढवर्णी, ढुल्लिय, ढम्ब, सूची निरन्तुक, णवर्णीश, अणिनोवाश, णरागी, रागभूषण, ताम्राप, तपन, तापी, तपस्वी, तपोनिधि, तपोमय, तपोरूप, तपफलदायक, तमीश्वर, महाताली, तमीचरक्षयङ्कर, तपोद्योति, तपोहीन, वितानी, त्र्यम्बकेश्वर, स्थलस्थ, स्थावर, स्थाणु, स्थिरबुद्धि, स्थिरेन्द्रिय, स्थिराङ्कृति, स्थिराप्रीति, स्थितिदः, स्थितिवान, दम्भी, दमप्रिय, दाता, दानव, दानवान्धनी, धर्म, अधर्म, धर्मगति, धनवान, धनवल्लभ, धनुर्धर, धनु, धन्य, धीरेश, धीमय, धृति, धकारान्त, धरापाल, धरणीश, धराप्रिय, धराधर, धरेशान, नारद, नारसोरस, नाग, नागयज्ञोपवीतवान, नुतिलभ्य, नुतीशान, नुतितुष्ट, नुतीश्वर, पीवराङ्ग, पराकर, परमेश, परात्पर, पारावार, परमपुण्य, परामूर्त्ति, परमपद, परोगम्य, परम तेज, परमरूप, परोपकृत, पृथ्वीपति, पति, पूत, पूतात्मा, पूतनायक, पारग, पारदृश्वा, पवन, पवनात्मज, प्राणद, अपानद, पान्थ, समानद, व्यानद, उदानन्द, प्राणगति, प्राणी प्राणहारक, पुरुष, पटु, परम, परमथानक, पवि, पीताानन, पीठ, पाठीनाकृतिरात्मवान्, पत्रीपीत, पवित्र, पाठन, प्रिय, पार्वतीश, पर्वतेश, पर्वेश, पर्वद्यातन, फणी, फणिद, ईशान, फुल्लहस्त, फणाकृति, फणिहार, फणिमूर्त्ति, फेनात्मा, फणिवल्लभ, बली, बलि प्रिय, बाल, बालालापी, बलन्धर, बालक, बलहस्त, बलिभुग्, बालनाशन, बलिराज, बलंकारी, बाणहस्त, भद्री, भद्रप्रद, भाष्वान, भामय, भ्रमयोनि, भव्य, भावप्रिय, भानु, भानुमान, भीमनिन्दक, भूरिद, भूतनाथ, भूतल–सुतल–तल, भयहा, भावनाकर्त्ता, भवहा, भवघातक, भव, विभवद, भीत, भूत, भव्यप्रिय, भवानीश, भगेष्ट, भगपूजन पोषण, मकुर, मानद, मुक्त, मलिन, मलनाशन, मारहर्त्ता, महोधि, महस्वी, महतीप्रिय, मीनकेतु, महासार, महेष्वा, मदनान्तक, मिथुनेश, महामोह, मल्ल, मल्लान्तक, मुनि, मरीचिरुचिवान्, मान्ययोगी, मञ्जुलेश, अमराधिप मर्दन, मोहनन्दी, मेधावी, मेदिनीपति, महीपति, सहस्रार मुदित, मानवेश्वर, मौनी, मौन प्रिय, माँस पक्षी, माधव इष्टवान, मत्सरी, मापति, मेष, मेषोपहारतोषित, माणिक्य मण्डित, मन्त्री, मणिपूर निवासक, मन्दामुन्मदरूप, मेनकी प्रियदर्शन, महेश, मेघरूप, मकरामृत दर्शन, यज्ज्वा, यज्ञप्रिय, यशस्वी, यज्ञभुग्, युवा, योधप्रिय, यमप्रिय, यामीनाथ, यमक्षय, याज्ञिक, यजमान, यज्ञमूर्त्ति, यशोधर, रविनयन, रत्न

रसिक, राम शेखर, लावण्य, लालसा, लूतो, लज्जालु, ललनाप्रिय, लम्बमूर्त्ति, विलम्बी, लोल जिह्व, लुलुन्धर, वसुद, वसुमान, वास्तुवाग्भव, वटुक, वटु, वीटीप्रिय, विङ्गी, विटपी, विहगाधिप, विश्वमोही, विनयद, विश्वप्रीत, विनायक, विनान्तक, विनाशक, वैमानिक, वरप्रद, शम्भु, शशीपति, शारसमद, शीतल, शीतरूप, शावरी प्रणत, वशी, शीतालु, शिशिर, शैत्य, शीतरश्मि, सिताक्षुमान्, शीलद्, शीलवान, शाली, शालीन, शशिमण्डन, शण्ड, शण्ट, शिपिविष्ट, षवर्णो, ज्ज्वलरूपवान्, सिद्धसेव्य, सितानाथ, सिद्धिक, सिद्धिदायक, साध्य, सुरालय, सौम्य, सिद्धिभूः, सिद्धिभावन, सिद्धान्तवल्लभ, स्मेर, सितवक्त्र, सभापति, सरोधीश, सरीनाथ, सिताभ, चेतनासम, सत्यप, सत्यमूर्त्ति, सिन्धुराज, सदाशिव, सदेश, सदनासूरि, सेव्यमान, सद्गति, सद्भाव्य, सदानाथ, सरस्वान, समदर्शन, सुसन्तुष्ट, सतीचेत, सत्यवादी, सतीरत, सर्वाराध्य, सर्वपति, समयी, समय, स्वयं, स्वयम्भू, स्वयमात्मीय, स्वयम्भाव, समात्मक, सुराध्यक्ष, सुरपति, सरोजासन सेवक, सरोजाक्षनिषेव्य, सरोज दल, लोचन, सुमति—कुमति, स्तुत्य, सुरनायक, नायक, सुधाप्रिय, सुधेश, सुधामूर्त्ति, सुधाकर, हीरक, हीरवान, हेतु, हाटकमण्डन, हाटकेश, हठधर, हरीतरत्न विभूषण, हितकृत, हेतुभूत, हास्यद, हास्य वक्त्रक, हारप्रिय, हारी, हविष्मलोचन, हरि, हविष्मान, हविभुग्, हव्य, हविभुग्वर, हंस, परमहंस, हंसीनाथ, हलायुध, हरिदश्व, हरिस्तुत्य, हेरम्ब, क्षमापति, क्षम, क्षान्त, क्षुराधार, अक्षिभीमक, क्षितिनाथ, क्षणेष्ट, क्षणवायु, क्षव, क्षत्, क्षीव, क्षणिक, क्षाम, क्षवर्णामृत पीठ।

अकार से लेकर क्षकार पर्यन्त ये नाम विद्यामाला से विभूषित हैं तथा ह्रस्व दीर्घ आदि स्वरों तथा व्यञ्जनों से विभूषित हैं।

महाभैरवेश-भैरव पूर्वक, वटुक भावेश-वटुक भैरव, श्मशानवासी-श्मशान भैरव, भद्रकालिकानाथ, कालिकापति, त्रिपुरेशान, ज्वालामुखीपति, शारदानाथ, मार्त्तण्ड भैरव, समन्तुसेव्य मत्त भैरव, उन्मत्त चित्त-काल भैरव, उग्र रूप-उग्र भैरव, कठोर देश-कठोर भैरव, कामान्धक ध्वंसी-कामान्ध भैरव, अष्ट स्वर-अष्ट भैरव, अष्ट मूर्त्ति-चिन्मूर्त्ति भैरव, हाटकवर्ण-हाटक भैरव, शशांक वदन-शीतल भैरव, शिवरुद्र-शारुक भैरव, अहं स्वरूप, मुण्डभैरव, मनोन्मन, मंगल भैरव, बुद्धिमय, बुद्धि भैरव, नागमूर्त्ति, नाग भैरव, पूर्वमूर्त्ति-त्रिकरभैरव, देवदत्त-दत्त भैरव, धनञ्जय-धनिक भैरव, रस रूप-रसिक भैरव, स्पर्शरूप-स्पर्श भैरव,

सत्त्वमय सत्त्व भैरव, रजोगुणमय राजस भैरव, तमोमय तामस भैरव, धर्ममय वैधर्म भैरव, मध्य चैतन्य-चैतन्य भैरव, क्षितिमूर्त्ति-क्षात्रिक भैरव, जलमूर्त्ति-जलेन्द्र भैरव, हवनमूर्त्ति पीठक भैरव, उत्ताशमूर्त्ति, हालाक भैरव, सोममूर्त्ति हालाक भैरव, सोममूर्त्ति सौम्य भैरव, सूर्यमूर्त्ति सौरेन्द्र भैरव, हंसरूप मुत्युञ्जय-भैरव, इस प्रकार श्री अघोर भैरव चालीस से अधिक हैं।

अघोर, घोर, घोरघोरतर, सर्वश्रेष्ठ रुद्ररूप को सब ओर से नमस्कार है।

देवताओं के प्रिय भैरवेश अभयवरदान देने वाले हैं।

श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्म्यं– यह अघोर दर्शन है। अघोर देवता सौन्दर्यशाली तथा दयावान हैं। संसार के स्वामी अघोर देवता का सहस्रनाम के रूप में प्रसिद्ध यह एक हजार नाम जो तीनों लोकों में दुर्लभ है, तुम्हारी भक्ति के कारण मेरे द्वारा प्रकट किया गया है। यह अप्रकाशनीय है, अदेय है तथा गोपनीय है।

यह बल से युक्त, बल प्रदान करने वाला, स्तुत्य, स्तवन योग्य और स्तुतियों में उत्तम है। इसे नित्य पढ़ना चाहिए अथवा पढ़ाना चाहिए और नित्य चित्त में ध्यान करना चाहिए। यह अदीक्षित व्यक्ति के लिए अदर्शनीय है।

मेरे हृदय में इससे बढ़कर और कोई श्रेष्ठ तत्त्व नहीं है जो पुण्यप्रद, पुण्य एवं सम्पूर्ण हो।

साक्षात् अमृत रूपी इस तत्त्व और परमतत्त्व को मन्त्रज्ञ अर्द्धरात्रि में नग्न होकर तथा केश खोलकर पढ़ें।

अनन्त चित् सुधाकार, देवताओं को भी दुर्लभ इस सहस्रनाम को साधक यदि शक्ति से युक्त होकर भक्तिपूर्वक जप करे तो तत्क्षण ही निश्चित रूप से जीवन्मुक्त हो जायेगा।

गुरुवार, शनिवार, रविवार को यदि साधक श्मशान में पाठ करे तो शीघ्र ही उसे देवता स्वयं ही वर प्रदान करेंगे।

धैर्यवान् व्यक्ति रात्रि में नदी के किनारे दस बार पाठ करे तो रुद्र की अष्ट सिद्धियाँ उसे हस्तगत हो जाती हैं।

मध्याह्न, शिवरात्रि और अर्द्धरात्रि में विविध प्रकार से पाठ करने पर इन्द्र आदि देवगण वश में हो जाते हैं, अन्य किसी प्रकार से इन्हें वश में नहीं किया जा सकता।

यदि साधक भक्तिपूर्वक गुरुवार को ब्राह्म मुहूर्त में पाठ करे तो इन्द्र भी अपनी सभा के मध्य में उसके आगे मूक के समान स्थित हो जायेंगे।

यदि मान्त्रिक शुक्रवार को नदी में इस सहस्रनाम का पाठ करे तो वह त्रिलोक को मोहित कर लेगा, इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है।

यदि मन्त्रज्ञ जङ्गल में गुरुवार को सन्ध्याकाल में पाठ करे तो काल सदृश शत्रु भी मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा, शत्रु के नाश का अन्य कोई उपाय नहीं है।

उत्तम साधक तीनों सन्ध्याओं के उदय काल में यदि पाठ करे तो रम्भा आदि सभी अप्सराएँ तत्काल ही उसके वश में हो जाती हैं।

हे देवि ! यदि गुरुवार को मध्याह्न में कुएँ के समीप सहस्रनाम का पाठ करे तो शीघ्र ही निश्चित रूप से महान् शत्रु का उच्चाटन हो जायेगा।

यदि साधक इस उत्तम सहस्रनाम का तीन बार पाठ करे तो वह इस लोक में समस्त भोगों को प्राप्त करने वाला होगा तथा परलोक में उसे मुक्ति होगी।

यदि साधक रविवार को भोजपत्र पर कुंकुम, आलता, कस्तूरी, गोरोचन, और मैनसिल के रंग से लिखकर ताँबे की रस्सी से घेरा बना दे तो वह मन्त्र ज्ञाता शीघ्र ही मूर्त्ति धारण करता है एवं यथेष्ट कामनाओं को प्राप्त करता है। वह पुत्र, पत्नी, लक्ष्मी, यश, धर्म और धन प्राप्त करता है, इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है। मेरा यह वचन सत्य है।

हे महादेवि ! इसके बिना जो साधक इस शुभ कवच का पाठ करता है उसके जीवन, धन, पुत्र और पत्नी सभी को राक्षस भक्षण कर लेता है।

साधक यदि इसके बिना अघोर विद्या का जप करता है तो उसका करोड़ों जप व्यर्थ है। मेरा यह वचन सत्य है। इस विषय में बहुत कहने से क्या लाभ !

सहस्रनाम नामक इस उत्तम स्तोत्र को जो व्यक्ति घर में जप करता हैं, सुनाता है अथवा सुनता है वह स्वयं "मैं नीलकण्ठ हूँ" ऐसी प्रतीति करता है और उसकी पत्नी "महेश्वरी" हो जाती है।

हे देवि ! यह परम रहस्य जो स्वर्ग-लोक व भूलोक में अत्यन्त दुर्लभ है तथा दुष्टात्माओं से गोपनीय है, वह तुम्हारी भक्ति के कारण मेरे द्वारा कहा गया।

हे महादेवि ! अघोर का तत्त्व, परम तत्त्व है। यह अतीव मधुर, हृदय में धारण करने योग्य तथा परापर रहस्य से युक्त है।

उत्तम साधक बलि के बिना, पूजनीय के बिना इसकी रक्षा न करे। यह अहर्निश पठन योग्य है। ऐसे पाठक को अष्टसिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

यह दुष्टात्माओं के लिए अप्रकाशनीय, अदेय और अकथनीय है। यह शीघ्र ही यथेष्ठ फल देने वाला तथा कलियुग में शीघ्र फल प्रदान करने वाला है।

हे पार्वती ! यह पुत्र के लिए गोप्य, गुप्ततर, गूढ़, गुप्त, गोपनीय, सदागोप्य एवं स्वयोनि के समान गोप्तव्य है।

इस प्रकार श्री रुद्रयामल तन्त्र में भैरव-भैरवी संवाद में
अघोर सहस्रनाम का स्तव पूर्ण हुआ।

रिणे २१॥कालादिक्षितिपर्यंतपालिनेविभवेनमः
तवे २३ हृदयांबुजसंकोचभेदिनेशिवमानवे
यिने॥२४॥नमःपरमनिर्वाणदायिनेचंद्रमौलये

रे हरणायमहामोहध्वांतविध्वंसहे
भोगमोक्षफलप्राप्तिहेतुयोगविधा
घोष्यायसर्वमंत्राणांसर्ववाङ्मयस्

अघोरस्तोत्रम्

अघोरस्तोत्रम्

श्री भैरव उवाच :

कैलाशशिखरासीनं भक्तानुग्रहकाम्यया।
पप्रच्छ प्रणता देवी भैरवं विगतामयम्।।१।।

ब्रह्मादिकारणातीतं स्वशक्त्या नन्दिनिर्भरम्।
नमामि परमेशानं स्वच्छन्दं वीरनायकम्।।२।।

श्री देवी उवाच :

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु वद मे समयोल्लंघनेषु च।
महाभयेषु घोरेषु तीव्रोपद्रवभूमिषु।।३।।

छिद्रस्थानेषु सर्वेषु उपायं वद मे प्रभो।
येनायासेन रहितो निर्दोषश्च भवेन्नरः।।४।।

श्री भैरव उवाच :

शृणु देवि परं गुह्यं रहस्यं परमाद्भुतम्।
सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःखाभयप्रदम्।।५।।

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु तीव्रेष्वपि विशोधनम्।
सर्वच्छिद्रापहरणं सर्वार्त्तिविनिवारणम्।।६।।

समयोल्लंघने घोरे जपादेव विमोचनम्।
भोगमोक्षप्रदं चैव सर्वसिद्धिफलावहम्।।७।।

शतं जाप्येन[1] शुद्ध्यन्ति महापातकिनोऽपि ये।
तदर्द्धं पातकं हन्ति तत्पादेनोपपातकम्।।८।।

कायिकं वाचिकं चैव मानसं स्पर्शदोषजम्।
प्रसादादिच्छया वापि सकृज्जपेन शुद्ध्यति।।९।।

यागारम्भे च यागान्ते पठितव्यं प्रयत्नतः।
नित्ये नैमित्तके काम्ये परस्याप्यात्मनोऽपि वा।।१०।।

निछिद्रकरणं प्रोक्तमभावपरिपूरकम्।
द्रव्यहीने मन्त्रहीने ज्ञानयोगविवर्जिते।।११।।

भक्तिश्रद्धाविरहिते शुद्धिशून्ये विशेषतः।
मनोविक्षपे दोषे च विलोमे पशुवीक्षिते।।१२।।

विधिहीने प्रमादे च जप्तव्यं सर्वकर्मसु।
नातः परतरो मन्त्रो नातः परतरा स्तुतिः।।१३।।

नातः परतरा काचित्सम्यक् सत्यं गिरा प्रिये।
इयं समयविद्यानां राजराजेश्वरी।।१४।।

परमाप्यायनं देवि भैरवस्य प्रकीर्त्तितम्।
प्रीणनं सर्वदेवानां सर्वसौभाग्यवर्धनम्।।१५।।

---

१. क · जाप्येन

स्तवराजमिमं पुण्यं शृणुष्वावहिता प्रिये।
ॐ नमः परमाकाशशायिने परमात्मने।।१६।।

शिवाय परमं शान्तं गिरानन्दाय पदाय ते।
अवाच्याय प्रमेयाय प्रमात्रे विश्वहेतवे।।१७।।

महासामान्यरूपाय सत्तामात्रैकरूपिणे।
घोषादिदशधा शब्दबीजभूताय शम्भवे।।१८।।

नमः शान्तोग्रघोरादि मन्त्रसंरम्भगर्भिणे।
रेवती श्रग विश्रम्भ[२] समाश्लेषविलासिने।।१९।।

नमः समरसास्वादपरानन्दोऽवभोगिने।
भोगपाणये[३] नमस्तुभ्यं योगीश[४] पूजितात्मने।।२०।।

द्वयनिर्मूलनोद्योग[५] समुल्लासितमूर्त्तये[६]।
[७]हरप्रसरविक्षोभविस्पष्टाक्षरमूर्त्तये ।।२१।।

नमो मायास्वरूपाय स्थाणवे[८] परमेष्ठिने।
घोरसंसारसम्भोगदायिने स्थितिकारिणे।।२२।।

कालादि क्षितिपर्यन्तं पालिने विभवे नमः।
रोहणाय महामोह ध्वान्तविध्वंसहेतवे।।२३।।

हृदयाम्बुजसंकोचभेदिने शिव मानवे।
भोग मोक्ष फलप्राप्तिहेतु योगविधायिने।।२४।।

नमः परमनिर्वाणदायिने चन्द्रमौलये।
घोष्याय सर्वमन्त्राणां सर्ववाङ्मयमूर्त्तये।।२५।।

---

२. क - विस्रंभ
३. क - भोगपाणे
४. क - योगेशी
५. क - निर्मूलनोद्यो
६. क - मूर्त्तते
७. क - हरत्प्रसर
८. क ख - स्थानवे

नमः शर्वाय सर्वाय सर्वपापापहारिणे।
रवणाय रवान्ताय नमोऽतरावराविणे।।२६।।

नित्याय सुप्रबुद्धाय सर्वान्तरतमाय ते।
घोषाय परनादान्तचराय खचराय ते।।२७।।

नमो वाक्पतये तुभ्यं भगाय पररूपिणे।
रवणाय रतीशाङ्देहिने चित्रकर्मणे।।२८।।

नमः शैलसुतामात्रे विश्वकर्त्रे महात्मने।
नमः मारप्रतिष्ठाय सर्वन्तिपदगाय ते।।२९।।

नमः समस्ततत्त्वाय व्यापिणे चित्स्वरूपिणे।
खेद्वाराय भद्राय नमस्ते रूपरूपिणे।।३०।।

परापरपरिस्पन्द मन्दिराय नमोऽस्तु ते।
भरिताखिलविश्वाय योगगम्याय योगिने।।३१।।

नमः सर्वेश्वरेशाय महाहंसाय शम्भवे।
चर्व्याय[९] चर्वणीयाय चर्वकाय[१०] चराय च।।३२।।

रवीन्दुसन्धिसंस्थाय महाचक्रेश ते नमः।
सर्वानुस्यूतरूपाय[११] सर्वाच्छादकशक्तये।।३३।।

सर्वभक्षाय शर्वाय नमस्ते सर्वरूपिणे।
रम्याय वल्लभाक्रान्तदेहार्धाय विनोदिने।।३४।।

नमः प्रसन्नदुष्प्रापसौभाग्यफलदायिने।
तन्महेशाय तत्त्वाय वेदिने भवभेदिने।।३५।।

---

९ क - चर्प्याय
१०. क - चर्वकाय
११ क - सर्वान्

महाभैरवनाथाय भक्तिगम्याय ते नमः।
शक्तिगर्भप्रबोधाय शरण्याय शरीरिणे।।३६।।

शान्तिपुष्ट्यादिसाध्याय साधकाय नमो नमः।
रवत्कुण्डलिनीगर्भप्रबोधप्राप्तशक्तये ।।३७।।

तत्स्फोटनपटुप्रौढपरमाक्षररूपिणे ।
समस्तव्यस्तसंग्रस्तरश्मिजालोदयात्मने।।३८।।

नमस्तुभ्यं महासेनरूपिणे विश्वगर्भिणे।
रेवारवसमुद्भूतवह्निज्वालावभासिने ।।३९।।

घनीभूत विकल्पान्ध्य विश्वबन्धविलापिने[१२]।
भोगिनीस्पन्दनारूढप्रौढमालब्धगर्विणे ।।४०।।

नमस्ते सर्वभक्षाय परमामृतलोभिने।
नभकोटिसमावेशभरिताखिलसृष्टये[१३] ।।४१।।

नमः शक्तिशरीराय कोटिद्वितयसंगिने।
महामोहसमाक्रान्त जीववर्गविबोधिने।।४२।।

महेश्वराय जगतां नमः कारणबन्धवे[१४]।
स्तेनोन्मूलनदक्षैकत्रितये विश्वमूर्त्तये।।४३।।

नमस्तेऽस्तु महादेवनाम्ने परसुधात्मने।
रुग्द्राविणे महावीर्य रुरुवंशविनाशिने।।४४।।

---

१२. ख - घनीभूतविकल्प्यांध्य ..... विश्व विलापिने।।
१३. क ख - नफ्
१४. क - बांधवे

रुद्राय द्राविताशेषबन्धनाय नमो नमः।
द्रवत्यररसास्वादचर्वणोद्युक्तये नमः।।४५।।

नमस्त्रिदशपूज्याय सर्वकारणहेतवे।
रूपातीत नमस्तुभ्यं नमस्ते बहुरूपिणे।।४६।।

त्र्यम्बकाय त्रिधा मातश्चारिणे च त्रिचक्षुषे।
पेशलोपायलभ्याय[१५] भक्तिभाजां महात्मनाम्।।४७।।

दुर्लभाय महाक्रान्तचेतसां तु नमो नमः।
भयप्रदाय दुष्टानां भवाय भयभेदिने।।४८।।

भव्याय त्वन्मयानां तु सर्वदाय नमो नमः।
अणूनां मुक्तये घोरघोरसंसारदायिने।।४९।।

घोरातिघोरमूढानां तिरस्कर्त्रे नमोऽस्तु ते।
इत्येवं स्तोत्रराजेन्द्रं महाभैरवभाषितम्।।५०।।

योगिनीनां परं सारं न दद्याद्यस्य कस्याचित्।
अदीक्षिते शठे[१६] क्रूरे निस्सत्ये शुचि वर्जिते।।५१।।

नास्तिके च खले मूर्खे प्रमत्ते विलुप्तेऽलसे।
गुरुशास्त्रसदाचारदूषके कलहप्रिये।।५२।।

निर्दये चुम्बके क्षुद्रे समयघ्नेऽथ दाम्भिके[१७]।
दाक्षिण्यरहिते पापे धर्महीनेऽथ गर्विते।।५३।।

---

१५. क पेशलोपाय वेदाय लभ्याय
१६. क शरे
१७. क दांबिके

पशूनां सन्निधौ देवि नोच्चार्यं सर्वथा क्वचित्।
अस्य संस्मृतमात्रस्य विघ्ना नश्यन्ति सर्वशः।।५४।।

गुह्यका यातुधानाश्च वेताला राक्षसादयः।
डामराश्च पिशाचाश्च क्रूरसत्त्वाश्च पूतनाः।।५५।।

ब्याधिदुर्भिक्षदौर्भाग्यमारिमोहविषादयः।
गजव्याघ्रादयो दुष्टाः पलायन्ते च सर्वशः।
सर्वे दुष्टाः प्रणश्यन्ति इत्याज्ञा पारमेश्वरी।।५६।।

इति अघोरस्तोत्रं समाप्तम्।।

।। इति श्री रुद्रयामले तन्त्रे भैरव-भैरवी-संवादे
अघोरपञ्चाङ्ग समाप्तम्।। शुभमस्तु।।

अघोर स्तोत्र

श्री भैरव ने कहा :

देवी ने भक्तों पर अनुग्रह की कामना से विनम्रतापूर्वक कैलाश पर्वत के चोटी पर आसीन, भयरहित भैरव से पूछा.।। १।।

ब्रह्म आदि कारणों से परे, अपनी शक्ति से नन्दी पर निर्भर, परमेश्वर, स्वच्छन्द, वीर नायक को मैं प्रणाम करती हूँ।। २।।

श्री देवी ने कहा :

हे प्रभु ! समस्त प्रायश्चितों में, समय के उल्लंघन में, महाभय में, घोर में, तीव्र उपद्रव वाली भूमि में, समस्त छिद्रस्थानों के विषय में उस उपाय को मुझे बताइए जिससे मनुष्य श्रमरहित एवं निर्दोष निवास करे।। ३, ४।।

श्री भैरव ने कहा :

हे देवि ! समस्त पापों को शान्त करने वाला, सकल दुःखों में अभय प्रदान करने वाला यह परम अद्‌भुत रहस्य, परम गुह्य सुनो ! ।। ५।।

समस्त प्रायश्चितों एवं तीव्र उपद्रवों में शान्तिकारक, समस्त दोषों का अपहरण करने वाला, समस्त पीड़ाओं का निवारण करने वाला, समय के उल्लंघन में व घोर में जप से ही छुटकारा दिलाने वाला तथा समस्त आठों सिद्धियों का फल प्राप्त करने वाले इस स्तोत्र सुनो।। ६, ७।।

जो महापातकी भी हैं वे सौ बार जप करने से शुद्ध हो जाते हैं, उसका आधा अर्थात् पचास बार जप करने से पातक नष्ट हो जाता है तथा उसका चौथाई अर्थात् पच्चीस बार जप करने से उपपातक नष्ट हो जाता है।। ८।।

कायिक, वाचिक, और मानसिक तथा स्पर्श दोष से उत्पन्न पाप प्रसाद से अथवा इच्छा मात्र से एक बार जप करने से शुद्ध हो जाता है।। ९।।

यज्ञ के आरम्भ में तथा यज्ञ के अन्त में एवं दूसरे व्यक्ति के अथवा अपने नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य कर्म में इस स्तोत्र को प्रयत्नपूर्वक पढ़ना चाहिए।। १०।।

दोष रहित बनाने वाला, अभावों को पूर्ण करने वाला, यह स्तोत्र कहा गया है। इसे द्रव्यरहित, मन्त्ररहित, ज्ञानयोग से शून्य, भक्ति और श्रद्धा से हीन, शुद्धि, हीन, मन के चंचल दोष से ग्रस्त होने पर, विलोम परिस्थिति में पशु को देखने पर, विधिहीन तथा प्रमाद इत्यादि सभी कर्मों में यह स्तोत्र जपनीय है। इससे बढ़कर कोई मन्त्र नहीं है, इससे बढ़कर कोई स्तुति नहीं है।। ११, १२, १३।।

हे प्रिये ! इससे बढ़कर कोई भी वचन एवं सम्यक् सत्य नहीं है। यह काल विद्याओं की राजराजेश्वरी है।। १४।।

हे देवि ! समस्त देवों को प्रसन्न करने वाला, सब प्रकार के सौभाग्य की वृद्धि करने वाला, भैरव को अत्यन्त तृप्ति (संतोष) प्रदान करने वाला, यह स्तोत्र कहा गया है।। १५।।

हे प्रिये ! इस पुण्य श्रेष्ठ स्तोत्र को ध्यानपूर्वक सुनिये --

ॐ परम आकाश निवासी, परमात्मा, परमशान्त, परम आनन्द, अनिर्वचनीय, प्रमेय, प्रमाता, संसार के कारणभूत, महासामान्य रूप, एकमात्र अस्तित्व रूप वाले घोष आदि दस प्रकार के शब्दों के बीजभूत शिव शम्भु को नमन।। १६, १७, १८।।

उग्र, घोर आदि मन्त्रों की प्रचंडता गर्भ में धारण करने वाले, रेवती नक्षत्र की माला के रहस्यपूर्ण धारण करने के कारण विलासी, समरस, स्वाद पर, आनन्द भोगी को नमन् ! योगेश्वरी के द्वारा पूजित आत्मा वाले भोगपाणि तुमको नमन।। १९, २०।।

द्वैत के निर्मूलन के उद्योग से समुल्लसित स्वरूप वाले, शंकर के प्रसार एवं विक्षोभ के कारण अस्पष्ट अक्षर मूर्त्ति वाले, माया स्वरूप, स्थाणु, परमेष्ठी, घोर जगत् का संभोग प्रदान करने वाले, संसार के कारण स्वरूप को नमन।। २१, २२।।

काल से, लेकर पृथ्वी पर्यन्त पालन करने वाले, महामोहरूपी अन्धकार के विनाश के कारण रूप, रोहण, हृदय कमल के संकोच को दूर करने वाले, भोग एवं मोक्षरूपी फलप्राप्ति के कारण रूप योग का विधान करने वाले शिव को नमन।। २३, २४।।

परम निर्वाण प्रदान करने वाले चन्द्रशेखर, समस्त मन्त्रों के ध्वनि स्वरूप, समस्त वाङ्मय के मूर्त्त रूप को नमन ।। २५।।

शर्व, सर्व, सकल पापों को दूर करने वाले, शब्द करने वाले, शब्दायमान, निःशब्द एवं मध्य शब्द वाले को नमन।। २६।।

नित्य, सुप्रबुद्ध, समस्त प्राणियों के अन्तरतम घोष, परनाद के अन्त में विचरण करने वाले, आकाशचारी, वाक्पति, भग, परस्वरूप, कामदेव की अर्द्ध आत्मा से युक्त, विचित्र कर्म वाले तुम्हें नमन ।। २७, २८।।

शैलपुत्री अर्थात् पार्वती के पति, सृष्टिकर्त्ता, महात्मा, काम की प्रतिष्ठा, सर्वश्रेष्ठ पद प्राप्त करने वाले को नमन।। २९।।

सकल तत्व, व्यापक, चित्स्वरूप, आकाश के द्वारस्वरूप, भद्र रूप रूपी तुम्हें नमन ।। ३०।।

पर और अपर के स्पन्दन के मंदिर स्वरूप, सम्पूर्ण विश्व का पालन करने वाले, योगगम्य योगी को नमन।। ३१।।

सर्वेश्व, महाहंस, शम्भु, चर्व्य, चर्वणीय, चर्वक् एवं चर को नमन।। ३२।।

महाचक्रेश ! सूर्य और चन्द्रमा की सन्धि पर स्थित, समस्त तत्वों में अनुस्यूत, समस्त तत्त्वों के आच्छादक शक्ति रूप तुम्हें नमन।। ३३।।

सर्वभक्ष, शर्व स्वरूप, सर्वरूपी, रमणीय पत्नी पार्वती से युक्त, अर्द्ध शरीर वाले, विनोदी तुम्हें नमन ।। ३४।।

कठिनाई से प्राप्त होने वाले, सौभाग्य रूपी फल को प्रदान करने वाले, तत्वार्थ के ज्ञाता, भव संसार का नाश करने वाले महेश को नमन ।। ३५।।

महाभैरवनाथ ! भक्तिगम्य, शक्तिगर्भ प्रबोध, शरैण्य, शरीरी तुम्हें नमन।। ३६।।

शान्ति, पुष्टि आदि के द्वारा साध्य, साधक, शब्दायमान, कुण्डलिनी शक्ति को अपने गर्भ में जगाने से प्राप्त शक्ति वाले, कुण्डलिनी के स्फोटन में पटु एवं प्रौढ़ तथा परम अक्षर रूप समस्त, व्यस्त, संग्रस्त, किरण-समूह के उदय स्वरूप को नमन।। ३७, ३८।।

महासेन रूपी, विश्वगर्भी रेवा नदी के ध्वनि से उत्पन्न, अग्नि ज्वाला से अवभासित, भोगिनी के स्पन्दन से वर्द्धित, प्रौढ़ता को प्राप्त करने के कारण गर्वित को नमन।। ३६, ४०।।

सर्वभक्षी, परम अमृत के लोभी, करोड़ों नभ के समावेश से सम्पूर्ण सृष्टि का भरण करने वाले तुम्हें नमन ।। ४१।।

शक्ति जिनका शरीर है, दो करोड़ अवयवों से संयुक्त, महान् मोह से युक्त, जीव समूहों को जगाने वाले को नमन।। ४२।।

महेश्वर, जगत् के कारण बन्धु, चोरों को नष्ट करने में एक मात्र दक्ष, विश्वमूर्ति को नमन ।। ४३।।

महादेव नामवाले, श्रेष्ठ अमृत स्वरूप, रोगों को नष्ट करने वाले, महावीर रुरु वंश का नाश करने वाले तुम्हे नमन।। ४४।।

रुद्र सम्पूर्ण बन्धनों को नष्ट कर देने वाले, द्रवीभूत, पर रसास्वादन की चर्वणा से युक्त शक्ति वाले को नमन नमन।। ४५।।

देवताओं के द्वारा पूजनीय, समस्त कारणों के हेतु–भूत, रूपातीत तुम्हें नमन, बहुरूपी तुम्हे नमन।। ४६।।

तीन नेत्रों वाले, तीन प्रकार से माता की परिचर्या करने वाले, त्रिनयन, भक्ति करने वाले महात्माओं के लिए कोमल उपायों से लभ्य तुमको नमन ।। ४७।। महाक्रान्त बुद्धि वालों के लिए दुर्लभ, दुष्टों को भय प्रदान करने वाले, भय दूर करने वाले भव को नमन।। ४८।।

रुद्रमयों के लिए भव्य, सब कुछ प्रदान करने वाले, अणुओं की मुक्ति के लिए अघोर एवं घोर संसार प्रदान करने वाले को नमन।। ४६।।

घोर एवं अतिघोर मूर्खों के तिररकर्त्ता, तुम्हे नमन। इस प्रकार यह स्तोत्रराज महाभैरव के द्वारा कहा गया है ।। ५०।।

योगिनी का यह परम रहस्य जिस किसी व्यक्ति को नहीं देना चाहिए। अदीक्षित, शठ, क्रूर, असत्य, शुद्धिरहित, नास्तिक, खल, मूर्ख, प्रमत्त, विलुप्त, आलस्ययुक्त, गुरु, शास्त्र, और सदाचार को दूषित करने वाले, कलहप्रिय, दयाहीन, चुम्बक, क्षुद्र, समय नष्ट करने वाले, दम्भी, अशिष्ट, पापी, धर्महीन, घमण्डी व्यक्ति को।। ५१, ५२, ५३।।

हे देवि ! पशुओं (अश्रद्धालु) की सन्निधि में इस स्तोत्र का कहीं भी किसी प्रकार से उच्चारण नहीं करना चाहिए। इसके स्मरण मात्र से सब प्रकार के विघ्न नष्ट हो जाते हैं। गुह्यक, भूत--प्रेत, बेताल, राक्षस आदि, भयावह, पिशाच, क्रूर जीव, पूतना, शारीरिक रोग, दुर्भिक्ष, दुर्भाग्य, महामारी, विष आदि गज, व्याघ्र आदि दुष्ट सभी भाग जाते हैं। सभी दुष्ट नष्ट हो जाते हैं। यह परमेश्वरी की आज्ञा है ।। ५४, ५५, ५६।।

यह अघोर स्तोत्र समाप्त हुआ।
इस प्रकार श्री रुद्रयामल तन्त्र में भैरव-भैरवी संवाद में
अघोर पञ्चाङ्ग समाप्त हुआ है ।। शुभ होवे।।

पारिभाषिक शब्दावली

साधना की समस्त क्रिया विधियों की सम्यक जानकारी पूज्य गुरुदेव के मुख से ही जानना चाहिए। प्रणव, प्राणायाम, न्यास एवं मुद्रा की सटीक जानकारी देने में गुरु के सिवा अन्य कोई समर्थ नहीं। 'अघोर पूजा पद्धति' पाठ में भी इसका उल्लेख है– **शंखमुद्रा गुरुमुखे।** सामान्य जानकारी के निमित्त ही पारिभाषिक शब्दावली देना उचित समझा गया –

खट्वाङ्ग

शिव का विशेष शस्त्र। इसकी आकृति खट्वा (चारपाई) के अंग (पाये) के समान होती थी। यह दुर्लङ्घ्य और अमोघ होता है। महिम्न स्तोत्र में वर्णन है :

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः।
कपालं चेतीयत्त्व वरद तन्त्रोपकरणम्।।

बूढ़ा बैल, खाट का पाया, फरसा, चमड़ा, राख, साँप, और खोपड़ी-वरदाता प्रभु की यही साधन सामग्री है।

मन्त्रोद्धार

सांकेतिक भाषा में मन्त्र लिखना।

ध्यान

देवता का स्वरूप वर्णन।

मनु

'मन्त्र' एवं 'मनु' दोनों एक ही धातु 'मन्' (सोचना--विचारना) से निकले हैं। तन्त्र ग्रन्थों में 'मनु' शब्द अधिकतर 'मन्त्र' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

ततो ब्राह्मेण मनुना समर्प्य परमात्मन।
ब्रह्मज्ञैः साधकैः सार्ध विदध्यात्पानभोजनम्।।

– महानिर्वाण तंत्र (८/२१६)

सम्पुट

सम्यक् प्रकार से पुटित अथवा भावित किया हुआ। तन्त्रसार के अनुसार – **सकामः सम्पुटो जाप्यो निष्कामः सम्पुटं बिना।**

किसी अभीष्ट सिद्धि के लिए जप करना हो तो सम्पुट विधि करना चाहिए, यदि निष्काम जप करना हो तो बिना सम्पुट के।

पशु

शास्त्र का अच्छी तरह अध्ययन करके भी जो धर्म का पालन नहीं करता और जिसे आत्मज्ञान नहीं हुआ।

पुरश्चरण

वैदिक एवं तान्त्रिक मन्त्रों का जप पुरश्चरण कहलाता है। पुरश्चरण का शाब्दिक अर्थ है, – पहले से सम्पादन। मन्त्र के पुरश्चरण के कई अंग होते हैं, यथा-ध्यान (देवता की प्रतिमा या आकार का ध्यान करना), पूजा, मन्त्र-जप, होम, तर्पण, अभिषेक एवं ब्रह्म भोज। संक्षिप्त पुरश्चरण में प्रथम तीन का सम्पादन होता है।

विनियोग

(१) किसी फल के उद्देश्य से किसी वस्तु का उपयोग।

(२) वैदिक व तान्त्रिक कृत्य में मन्त्र का प्रयोग।

मानसिक पूजन

बाह्य पूजन को द्रव्य यज्ञ कहा जाता है। उसमें पञ्चोपचार, दशोपचार, षोडशोपचार आदि अनेक भेद हैं। ये पूजन के स्थूल रूप हैं। मानसिक पूजन में केवल भावना या चिन्तन से ही सामग्री की कल्पना करनी होती है। पूजन सामग्री के अभाव में मानसिक पूजन करना उचित माना जाता है, क्योंकि मानसिक पूजन किसी भी समय और कहीं पर भी किया जा सकता है। इसमें सामग्री एकत्र करने की आवश्यकता नहीं है। मानसिक पूजन साधक को अन्तर्मुखी बनाता है तथा चैतन्यता प्रदान करता है।

हवन

संस्कृत के –'हेञ्' – 'आह्वाने' धातु से हवन शब्द का निर्माण हुआ है। जिस क्रिया विशेष द्वारा पृथ्वीलोकवासी मनुष्य स्वर्गादि लोकों में विद्यमान देवताओं से सम्पर्क साधने का प्रयोजन करते है, उसे हवन कहते हैं। हवन को द्रव्य-यज्ञ भी कहा जाता है, अग्नि में देवता विशेष के लिए मन्त्र के माध्यम से आहुति देकर प्रसन्न करना और मनोवाञ्छित कार्य को पूर्णता देना हवन का मुख्य हेतु होता है। मन्त्र साधनाओं की पूर्णता के लिए कुल मन्त्र जप के दसवें हिस्से (दशांश) से आहुति या हवन करने का विधान है।

तर्पण

इसका अर्थ है – ऐसी क्रिया, जिससे देवताओं को तृप्त किया जाए। मन्त्र जप की संख्या का दशांश हवन करने के बाद हवन का दशांश दूध और पानी मिलाकर विग्रह या यन्त्र पर मन्त्र बोलते (मन्त्र के अन्त् में 'तर्पयामि' लगाकर) हुए चढ़ाया जाता है। इसी क्रिया को तर्पण कहते हैं।

मार्जन

मार्जन का अर्थ है – शुद्ध करना। जितनी संख्या में हवन किया जाता है, उसका दशांश तर्पण किया जाता है, तथा तर्पण के दशांश से मार्जन करने का विधान है। पूर्ववत् दूध और पानी बराबर मिलाकर मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए (मन्त्र के अन्त में 'मार्जयामि' लगाकर) यन्त्र या विग्रह पर चढ़ायें। मार्जन रजोगुण और तमोगुण के कुसंस्कार को मिटाने की सरल प्रक्रिया है, क्योंकि जब तक ये कुंसस्कार समाप्त न हों, तब तक किसी भी साधना या मन्त्र जप में सफलता सम्भव नहीं है।

फट्

तान्त्रिक मन्त्रों का एक सहायक शब्द है। इसका स्वयं कुछ अर्थ नहीं होता, अव्यय है और मन्त्रों के अन्त में प्रयोग क्रिया के लिए जोड़ा जाता है। यह अस्त्र बीज है। 'बीजवर्णाभिधान' में कहा गया है : **फडत्वं शस्त्रमायुधम्।** अर्थात् फट् शस्त्र अथवा आयुध के अर्थ में प्रयुक्त होता है अभिचार, कर्म में 'स्वाहा' के स्थान में इसका प्रयोग होता है। 'वेददीप' में महीधर ने इसका भाष्य इस प्रकार किया है :–

असौ द्वेष्यो हतो निहतः सन् फट् विशीर्णो भवतु। ञिफला विशरणे' अस्य क्विबन्तस्यैतद् रूपम्। फलतीति फट्, डलयोरैक्यम्। स्वाहाकारस्थाने फडित्यभिचारे प्रयुज्यते।

न्यास

न्यास का तात्पर्य है – 'शरीर के कुछ अंगों पर अवस्थित होने के लिए किसी देवता या देवताओं, मन्त्रों का मानसिक रूप से आह्वान करना, जिससे शरीर पवित्र हो जाय और पूजा एवं ध्यान करने के योग्य हो जाय।' न्यास के कुछ प्रकार ये हैं- हंसन्यास, प्रणवन्यास, मातृकान्यास, मन्त्रन्यास, करन्यास, अंगन्यास, पीठन्यास।

मुद्रा

कुलार्णव तन्त्र मुद्रा को 'मुद' (मोद, प्रसन्नता) से एवं 'द्रावय' ('द्रु' का हेतुक) से निष्पन्न माना है। कुलार्णव का मानना है कि पूजा में मुद्रा का प्रदर्शन होना चाहिये और वे इसीलिए प्रसिद्ध हैं कि उनसे देवता लोग प्रसन्न होते हैं और उनके मन द्रवीभूत हो जाते हैं। किन्तु शारदातिलक तंत्र (२३/१०६) ने इसे 'मुद' एवं 'रा' (देना) से व्युत्पन्न माना है और इसके मत से मुद्रा का अर्थ है 'जो देवों को आनन्द देती है।' राधवभट्ट का कथन है कि अंगूठे से कनिष्ठिका तक अंगुलियाँ पांच तत्त्व के समान हैं अर्थात् वे क्रम से आकाश, वायु, अग्नि, सलिल, एवं पृथिवी हैं, उनके सम्मिलन से देवता प्रसन्न एवं अनुग्रहशील होते हैं और वे उपस्थित होते हैं। विभिन्न उचित मुद्राओं का प्रयोग पूजा, जप एवं ध्यान में होना चाहिए क्योंकि देवता उनके पास उपस्थित होते हैं।

स्तोत्र

अपने इष्ट या उपास्य के रुप, गुण, कर्म तथा शौर्य की प्रशंसा कर, उनकी कृपा प्राप्त करना स्तोत्र का मुख्य प्रयोजन है। उनकी कृपा होते ही सफलता सम्भव है। इसलिए पूजन के बाद या पहले स्तोत्र की आवश्यकता रहती हैं प्रायः यह स्तोत्र पद्य रूप में एवं गेय होते है।

बीज मन्त्र

पाठकों को अघोर पूजा पद्धति के पाठ में बीजाक्षरों का अनेकशः उल्लेख मिलेगा। ये बीजाक्षर सूक्ष्म एवं लघु जरूर हैं। पर अत्यन्त गूढ़ अर्थ रखते हैं। इसमें एक शक्ति विशेष निहित होती है। जिस तरह एक बीज में सम्पूर्ण वृक्ष समाया होता है, समय आने पर धरती से वह वृक्ष निकलना शुरु होता है, इससे सिद्ध होता है कि कोई शक्ति बिन्दु रूप में सम्पूर्ण वृक्ष, बीज में समाहित थी। उसी प्रकार किसी मन्त्र के लघु स्वरूप जिसमें मन्त्र की सारी शक्ति पूर्ण रूप से समाहित हो मन्त्र का बीजाक्षर होता है। साधक को इसकी सम्यक जानकारी होनी चाहिए। जो तन्त्रशास्त्र के शास्त्रीय ग्रन्थों या

मन्त्र गुरु के मुख से ही सम्भव है। उदाहरणार्थ कुछ बीजाक्षर अर्थसहित दिये जा रहे हैं –

क्रीं

क – काली

र – ब्रह्मा

ईकार – महामाया

अनुस्वार – दुःखहरण

अर्थ : ब्रह्मशक्ति सम्पन्न महामाया काली मेरे दुःखों का हरण करें।

श्रीं

श – महालक्ष्मी

र – धन, ऐश्वर्य

ई – तुष्टि

अनुस्वार – दुःखहरण

अर्थ : धन, ऐश्वर्य, सम्पत्ति, तुष्टि-पुष्टि की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी मेरे दुःखों का नाश करें।

ह्रौं

ह – शिव

औ – सदाशिव

अनुस्वार – दुःखहरण

अर्थ : शिव तथा सदाशिव कृपा करके मेरे दुःखों का हरण करें।

ऐं

ऐ – सरस्वती

अनुस्वार – दुःखहरण

अर्थ : हे माँ सरस्वती मेरे दुःखों का अर्थात् अविद्या का नाश करो।

हूं

ह – शिव

ऊ – भैरव

अनुस्वार – दुःखहर्त्ता

अर्थ : असुर संहारक शिव एवं भैरव मेरे दुःखों का नाश करें।

ग्लौं

ग – गणेश

ल – व्यापक रूप

औ – तेज

अनुस्वार – दुःखहरण

अर्थ : व्यापक रूप विघ्नहर्त्ता गणेश अपने तेज से मेरे दुःखों का नाश करें।

क्लीं

क – कृष्ण अथवा काम

ल – इन्द्र

ई तुष्टिभाव

अनुस्वार – सुखदाता

अर्थ : कामदेव श्री कृष्ण मुझे सुख-सौभाग्य दें।

पद्यानुक्रम

अकारादि 78
अगुणः 84
अघोर 6
अघोरकवचं 65
अघोरमन्त्रविद्यापि 70
अघोरस्य 65
अघोरस्यास्य मन्त्रय 5
अघोरास्त्राय 68
अघोरेभ्या 5
अघोरेभ्योऽथ 3,33,66,67,68,80,91
अघोरो मे 66
अघोरो यः 2
अतः परं 78
अतीव मधुरं 94
अथोपहारयेद् 12
अदीक्षिताय 68
अद्याष्टदलपूजां 7
अद्रष्टव्यमदीक्षाय 92
अनन्तं चित्सुधाकारं 92
अनन्तरूपोऽनन्तश्रीः 82
अनादि जगतीनाथो 85
अन्यां वा 10
अपसर्पन्तु 26
अप्रकाश्य 94
अप्रष्टव्यमस्तोतव्यं 68
अभयाङ्को 82
अर्चयित्वा 38
अर्द्धरात्रे स्वयं 67
अष्टकीलविदे 3
अष्टमूर्तिश्च 90
अष्टाभिर्मातृभिर्युक्तं 8
असह्यो 81
अस्यायं मन्त्रराजस्य 4
अहं देवो 27
अहंस्वरूपश्च 90
आदावक्षादि 4
इतीदं पटलं 12
इदं रहस्यं 93
इन्द्रादयः 92
इन्द्रो वह्नि 6
इहलोके 93
ईशानः 83
उग्रउग्ररवोत्युग्र 90
उदानदः 86
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं 68, 90
ॐ ह्रीं वटुकभावेशो 89
ॐ श्रीं सौन्दर्यवान्देवो 91
उन्मत्तचित्तश्च 90
उग्रमूर्त्तिरुत्सवेश 83
उपास्ये तत्त्वमंत्रे 38
उर्ध्वे गणपतिः 6
एते प्रयोगाः 12

एवं जपेन्महादेवि	5
एवं न्यासं	37
ऐं क्लीं सः	90
ऐं वीजामृत	83
कटिं मेऽमृतमूर्त्तिश्च	66
कलात्मा	84
कलेशः	81
कान्तारवासी	81
कामान्धकध्वंसी	90
कायिकं वाचिक	108
कालकालान्धकत्रास	91
कालादि क्षितिपर्यन्तं	109
किङ्किणीमालया	79
कुंकुमालक्त	93
कुत्सितः	84
कुन्तखड्गं	8
कूर्ममूर्तिश्च	90
केवलेन सुभक्ष्ये	69
कैलाशशिखरासीनं	107
कोमलाङ्गोऽपि	82
क्षमापतिः क्षमः	89
क्षीणश्च क्षणिकः	89
खगान्तकः	84
खड्गचर्मधरं	27
खलीनः खलता	84
गणगन्धर्वसिद्धौघैः	1
गुणातीतं	1
गुह्यका	113
गृहेऽर्द्धरात्रे	5
गृहे शर्वः	67
गोप्यं गुप्ततरं	94
ग्रहाणामतिवृष्टेश्च	11
घनीभूत विकल्पान्ध्य	111
घनः सर्वेश्वरो	84
घोरनादो	84
घोरश्च	66
घोरातिघोरमूढानां	112
चराचरात्मा	81
चामीकरोच्चयगतः	83
चारुवेश	84
चितेश	84
चित्स्वरूपो	80
चिदानन्द	80
छिद्रस्थानेषु	107
छिन्दौः	7
छिन्नग्रीवः	84
जंघे त्रिलोचनः	66
जटाजूटी	81
जन्महा जन्मदो	85
जप्त्वा मूलायुतं	10
जप्त्वा मूलायुतं	11
जपेच्चाघोरविद्यां	69
जयस्वरूपो	85
जयो जयो	82
जलमूर्तिश्च	91
जलादौर्वामुखः	67
जीवहीनो	5
टंकारसंभवो	85

ठकारी च	85
डिल्लीश्वरो	85
णवर्णी	85
तच्चण्डदीप्ति	83
ततो ध्यात्वा	37
ततोऽर्घं	37
ततः तच्चैव	38
तत्क्षणात्साधकः	92
तत्पुरुषादि गायत्री	8
तत्संयोगादि पद	27
तत्सर्वं क्ष्मामघोरो	68
तत्सर्वं पातु मे	68
तत्स्फोटनपटु	111
तदाप्रभृति	92
तपोद्योति	85
तपोमयस्त	85
तमोमयश्चैव	91
तव प्रीत्या	3
तव भक्त्या	78, 91
तस्य कोटि जपं	93
तस्य जीवं धनं	93
तस्य नाम	78
तस्य मध्ये तु	8
तस्य हस्ते	92
तस्याहं पटलं	3
तिष्येवकृकर	12
तेनेदं सृज्यते	2
त्वमाकाशो	2
त्वमेव त्रिजगन्नाथ	2
त्वमेव परमं	77
त्रिकोणे पूजयेद्देवि	7
त्रिकोणं सबिन्दुं	5
त्रिपुरारिथि	7
त्रिपुरेशस्त्रिलोके	82
त्रैगुण्यो निर्गुणो	84
त्र्यम्बकाय त्रिधा	11
दशदिक्षु सदा	67
दिक्पाला दिक्षु	6
दिक्षु प्राज्ञामपश्चाद्	36
दुःस्वप्ने बन्धने	69
दुर्लभाय	112
देवदेवेशि	70
द्वयनिर्मूलनोद्योग	109
द्राग्भिराग्भिर्मध्ये	38
धकारान्तो	86
धनञ्जयश्चैव	90
धर्माधर्मो	86
धारयेन्मूर्त्तिं	93
ध्यानमार्गस्थितं	80
न दातव्यं न	68
नदीतटे तथोद्याने	10
नन्दिवीरेश	6
नन्दी च	6
नमस्तेऽस्तु महादेवनाम्ने	111
नमस्ते सर्वभक्षाय	111
नमस्त्रिदशपूज्याय	112
नमो मायास्वरूपाय	109
नमो वाक्पतये	110

नमः परमनिर्वाणदायिने 109
नमः प्रसन्नदुष्प्राप 110
नमः शक्तिशरीराय 111
नमः शर्वाय सर्वाय 110
नमः शैलसुतामात्रे 110
नमः शान्तोग्रघोरादि 109
नमः समरसास्वाद 109
नमः समस्ततत्त्वाय 110
नमः सर्वेश्वरेशाय 110
नातः परतरा 78
नास्तिके च खले 112
नास्य विघ्नो 3
निछिद्रकरण 108
नित्याय सुप्रबुद्धाय 110
निर्दये चुम्बके 112
निश्चेतनो 82
नीलसूत्रेण 9
पञ्चकोणं 7
पंचाशल्लिपि 29, 30
पठनीयं दिवारात्रौ 94
परमाप्यायनं 108
परापरपरिस्पन्द 110
परोगम्यः परंतेजः 86
पशूनां सन्निधौ 113
पश्चिमे सामवेदो 67
पादादिमूर्धप 66
पारगः पारदृश्वा 86
पार्वतीशः पर्वतेशः 86
पाश्वौ प्रज्वल 66
पीठपूजां 37
पीवराङ्गपराकारः 86
पुण्यदं पुण्यमात्मीयं 92
पुनरपि कुलिशा 38
पुराऽस्माकं 77
पूज्या अष्टारकेष्वेव 7
पृथ्वी त्वया 26
प्रख्यो दक्षो 82
प्रभाते भैरवः 67
प्रायश्चित्तेषु 107, 108
फणिहारः 86
बन्धूककाञ्चननिभं 31
बलिं दत्त्वा 69
बल्यं वलप्रदं 81
बालको बलहस्तश्च 86
बिलादिवज्र 4
बुद्धिमयश्चैव 90
ब्रह्महत्या शिरस्कं 27
ब्रह्मादिकारणातीतं 107
ब्रह्माद्या मातरः 7
भक्तिश्रद्धाविरहिते 108
भगवन्करुणाम्भोधे 65
भगवन्मे प्रसीद 2
भगवन्सर्वलोकेश 1, 77
भद्री भद्रप्रदो 87
भयान्तको 82
भवो विभवदो 87
भव्याय 112
भिक्षुः सर्वेष्टफलदो 81

भूकम्पे पूजयेद्देवं	१७
भूतेभ्यो भूतिदो	८०
भूमौ च	६४
भूमौ यन्त्रं	११
भूरिदो भूतनाथश्च	८७
भैरवि प्रेयसि	७७
भैरवेशोऽभयवरदाता	६१
मकुरो मानदो	८७
मत्सरी मापतिर्मेषा	८७
मध्यचैतन्यो	६१
मन्त्रकीलनमाचारं	४
मन्दमुन्मदरूपश्च	८७
मरीचिरुचि	८७
महाकायं महोरस्कं	७६
महाकालश्च	७
महादेव महारुद्र	२
महाभैरवनाथाय	१११
महासामान्यरूपाय	१०६
महीपतिः	८७
महेश मदनध्वंसि	२
महेश्वराय	१११
मात्रादिः षडभिज्ञ	१५
माहेश्वरी च	७
मीनकेतुर्महामारो	८७
मूलं निष्कीलकं	६
मूलमन्त्रमयं	६८
मूलेन मूतौ	३८
मैं भद्रकालिकानाथः	८६
यः पठेन्मनसा	६६
यज्ज्वा यज्ञप्रियो	87
यथोक्तपूजया	12
यद् गृहे अघोरकवचं	69
यद्गृहे वा	93
यन्त्रोद्धारं	5
यागारम्भे च	108
याज्ञिको यज्ञमानश्च	87
यावदिन्द्रः	92
येन सम्यक्	2
योगिनीनां परं	112
रक्ताब्धिपोता	28, 29
रणे राजकुले	67
रतोत्सवे	12
रम्भाद्यप्सरसः	93
रविः पीताननः	86
रवीन्दुसन्धिसंस्थाय	110
रिपुसैन्यादिदस्यूनां	9
रुद्ररूपेभ्यो	4
रुद्राय द्राविताशेष	112
लभते नात्र	93
लभ्योऽनन्तो	81
लयाङ्गं शृणु	6
लावण्यं लालसो	88
लीलज्योतिर्महारौद्रो	83
वज्रस्य पञ्चभि	4
वटुः पटुः परं	82
वने चतुष्पथे	9
वसुदो वसुमा	88
वाञ्छितं मनसा	69

वामदेवं	7	श्री गुरुं परमात्मानं	22
वायव्यां रौद्ररूपो	67	श्री चन्द्रमण्डल	8
वालार्कमण्डलाकारं	8	श्री चन्द्रमण्डलगता	79
विचारी सुमतिः	82	श्री शिवः परमात्मा	78
विधाय विधिवत्पूजां	9	ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सौः	68
विधिः सिद्धिप्रदो	83	सत्त्वमयश्चैव	90
विधिहीने	108	सत्यं पुरा वरो	65
विना वलिं न	69	सदेशः सदनासूरिः	88
विन्यासाः प्रतिमा	37	सद्यो देवि महान्तं	93
विश्वबीजादि	4	सद्यस्तस्य	92
विश्वमोदी	88	सन्तानिकं	9
व्याधिदुर्भिक्ष	113	समयोल्लंघने	108
व्यालास्यं	7	सम्भोज्य विधिवद्	9
शण्डः शण्टः	88	सरसो विरसो	86
शतं जाप्येन	108	सरोजाक्षनिषेव्यश्च	89
शत्रु कालसमानोऽपि	92	सरोधीशः	88
शनौ रात्र्यवसाने	11	सर्पिषानाथ	10
शम्भुः शशीपतिः	88	सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो	4, 67
शर्कराक्षौद्रमिश्रेण	11	सर्वत्र सर्वदाकालं	68
शशाङ्क वदनः	90	सर्वभक्षाय	110
शान्तिपुष्ट्यादिसाध्याय	111	सर्वं तत्प्रशमं	69
शिवाय परमं	109	सर्वस्तुत्यः	81
शीतालुः शिशिरः	88	सहस्रदलपङ्कजे	22
शुभेऽह्नि देवि	10	साक्षादमृतरूपा	3
शूरः शूली	81	साध्यो सुरालयः	88
शृणु देवि	2	सुदिने देवि	10
शृणु देवि परं	107	सुदिने सुग्रहे	5
शृणुष्वैकान्तभूदेश	78	सुधाकलशवक्राङ्ग	4
श्मशान भैरवो	80	सुधाप्रियः	89

सुपर्वदिवसे	11	स्वर व्यञ्जन	89
सुसन्तुष्टः सतीचेतः	88	स्वात्मा दयालु	83
सूतोऽयमौर्ववीजैश्च	4	हाटकेशो	89
सूर्यमूर्त्तिश्च	91	हायनो वत्सरा	83
सौःतरेभ्योऽव	66	हारो हारप्रियो	89
स्तम्भनं मोहनं	9	हिमाद्रिशिख़रासी	1
स्तवराजमिमं	109	हुताशमूर्तिश्च	91
स्थिरं कृती	85	हृदयाम्बुजसंकोच	109
स्पर्शरूपश्च	90	हृद्बोधो	80
स्वजन्मदिवसे	11	होमः काकपलेनैव	11
स्वनाभौ भैरवं	8	होमः सर्पिय	11
स्वयम्भूः	88	होमयेत् घृतक्षीरादि	11
स्वविवाहदिने	11	होमे रजस्वला	12

अघोर शोध संस्थान एवं ग्रन्थालय

अघोर शोध संस्थान एवं ग्रन्थालय, अघोर परिषद ट्रस्ट द्वारा सञ्चालित एक अभिनव विद्यापीठ है। **यह संस्थान पड़ाव, वाराणसी में अवधूत भगवान राम के आश्रम में अवस्थित है।** परमपूज्य अवधूत भगवान राम की यह संकल्पना थी कि आश्रम अघोर विद्या का केन्द्र हो। केवल साधना के संकल्पना में ही नहीं अपितु शोध कार्य करने वाले जिज्ञासुओं के लिए भी मार्गदर्शक बने।

परमपूज्य अवधूत भगवान राम ने इस उद्देश्य से अघोर शोध संस्थान एवं ग्रन्थालय की स्थापना की थी। कालान्तर में **पूज्यपाद गुरुपद संभवराम जी** के विशेष प्रयासों से यह संस्थान सन् 1998 से सक्रिय हो गया तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर है।